

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नमस्कार महामंत्र

णमो अरिहंताणं

णमो सिद्धाणं

णमो आर्यरियाणं

णमो उवज्झायाणं

णमो लोए सत्त्वसाहूणं ॥

एसो पंच णमोक्कारो,

सत्त्व-पावप्पणासणो,

मंगलाणं च सत्त्वेसिं,

पढमं हवइ मंगलं ।



वर्ष : 60

अंक : 08

अगस्त, 2003

श्रावण, 2060



अपनापन,
आदरातिथ्य एवम्
निवास सुविधा यह
हमारे व्यवसायकी अतिरिक्त
सेवाएँ नहीं, बल्कि
मुलभूत सेवाओं
में से है।



आर. सी. आभूषण - शुद्ध - शुभ - सुंदर

टीप : निवास व्यवस्था पूर्व
सूचना मिलने पर की जाएगी।



पारस महल
चाँदी
बरतन शोरूम

रतनलाल सी. बाफना, ज्वेलर्स

सुभाष चौक, जलगाँव, दूरभाष: २२२३९०३, २२२५९०३, २२२२६२९, २२२२६३०

हमारी कहीं भी शाखा / एजेंट नहीं.

नयनतारा
स्वर्णालंकार शोरूम
डायमंड शोरूम

● हाजिर स्टॉक ● भरपूर डिझाईन्स ● अनुपम कलाकारी ● गहनों पर शुद्धता अंकित ● पारदर्शक व्यवहार ●

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'

● प्रकाशक

प्रकाशचन्द डागा
मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नम्बर 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003 (राज.), फोन नं. 2565997

● संस्थापक

श्री जैन स्त विद्यालय, भोपालगढ़

● सम्पादक

डॉ. धर्मचन्द जैन, एम.ए., पी-एच.डी.

● सम्पादकीय सम्पर्क सूत्र

3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर- 342005(राज.)
फोन नं. 0291-2730081

● सम्पादक मण्डल

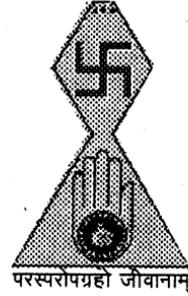
डॉ. संजीव भानावत, एम.ए. पी-एच.डी.

● भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं. JPC/3825/02/2003-05

● सदस्यता

स्तम्भ सदस्यता	11000 रु.
संरक्षक सदस्यता	5000 रु.
आजीवन सदस्यता देश में	500 रु.
आजीवन सदस्यता विदेश में	100\$(डालर)
त्रिवर्षीय सदस्यता	120 रु.
वार्षिक सदस्यता	50 रु.
इस अंक का मूल्य	10 रु.



उसिणपरियावेणं,
परिदाहेण तञ्जिण्ण
घिसुं वा परियावेणं,
सायं नो परिदेवण्ण।

-उत्तराध्ववन सूत्र २.८

तप्त भूमि के तापों से,
या ग्रीष्म भूमि के दाहों से।
पीड़ित हो सुख के हेतु संत,
आकुल न करे मन आहों से॥८॥

श्रमण 2003

वीर निर्वाण सं. 2529

श्रावण, 2060

वर्ष : 60

अंक : 08

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिण्टिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन: 2562929

डापट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर प्रकाशक के उपयुक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

नोट: यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रमणिका

प्रवचन/निबन्ध

समत्व की साधना : सामायिक (3)	: आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	7
संस्कारों का संकट :		
दूर करेगा कौन?	: उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.	11
समय का सम्यक् नियोजन करें	: मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.	19
धर्मक्रियाएँ हों निर्दोष (2)	: श्री सज्जनसिंह मेहता 'साथी'	24
आस्रव : एक विवेचन	: श्री राजमल सिंघी	29
हमें क्या हो गया है?	: श्री चन्देश मण्डारी	41

विचार/तत्त्वचर्चा/आगम-परिचय/संवाद

क्षमा वीरस्य भूषणम्	: प्रो. चौदमल कर्णावट	6
आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ	: श्री धर्मचन्द जैन	34
सामायिक से लाभ	: श्री चेतनप्रकाश जी डूंगरवाल	37
दशवैकालिक सूत्र : दशम अध्ययन	: डॉ. अमृतलाल गांधी	39
दीक्षा	: श्री पी.एम. चोरडिया	42
विपत्ति की साथी : मुँहपत्ती	: श्री लक्ष्मीचन्द जैन	49

कथा/कविता/प्रेरक-प्रसंग

जिनवाणी	: प्राणिमित्र नितेश नागोता 'जैन'	10
जीवन जीएँ ऐसा सुन्दर	: श्री प्रकाश कर्णावट	18
प्रतियोगिता का दौर	: श्री लोकेश जैन	28
मनुजता अमर करे इन्सान	: डॉ. प्रकाश कुमार जैन	38
मुक्तक—मुक्ता	: श्री दिलीप धींग	40
समतामूर्ति मुनि कूरगुडुक	: श्री मुदित जैन	50
दोहा—शतक	: डॉ. महेन्द्र सागर प्रचण्डिया	71

स्तम्भ/ अन्य

सम्पादकीय	: डॉ. धर्मचन्द जैन	3
साहित्य—समीक्षा	: डॉ. धर्मचन्द जैन	52
जिनवाणी पर अभिमत	: संकलित	53
समाचार—संकलन	: संकलित	54
संक्षिप्त समाचार	: संकलित	64
बधाई	: संकलित	64
श्रद्धांजलि	: संकलित	65
साभार—प्राप्ति—स्वीकार	: संकलित	68

मिच्छा मि दुक्कडं

डॉ. धर्मचन्द्र जैन

‘मिच्छा मि दुक्कडं’ (मिथ्या मे दुष्कृतम्) का तात्पर्य है मैंने जो अतिचार या दोष किया है, वह मिथ्या या व्यर्थ था, मुझे ऐसा दोष नहीं करना चाहिए था। दोष को दोष समझना एवं उसे पुनः न करने की सजगता रखना ही ‘मिच्छामि मि दुक्कडं’ का अभिप्राय है।

‘मिच्छा मि दुक्कडं’ के प्रयोजन को आवश्यक निर्युक्ति में इस प्रकार प्रतिपादित किया है-

संजमजोगे अब्भुट्ठिअस्स, जं किं चि वितहमायरियं।

मिच्छा एयं ति वियाणिरुण मिच्छ ति कायब्बं।।

अर्थात् संयम-साधना में तत्पर साधक के द्वारा जो कोई गलत आचरण किया जाए तो उसे मिथ्या (विपरीत) समझकर उस संबंध में ‘मिच्छा मि दुक्कडं’ देना चाहिए।

प्रतिक्रमण में हम ‘मिच्छा मि दुक्कडं’ शब्दों का प्रयोग अनेक बार करते हैं। जब भी व्रतों के अतिचार का पाठ बोला जाता है, उनके खण्डित या विराधित होने की बात स्वीकार की जाती है तो ‘तस्स मिच्छा मि दुक्कडं’ का प्रयोग किया जाता है, यथा- १. ‘जो मे देवसिओ (राइओ, पक्खिओ, चउमासिओ, संवच्छरिओ) अइयारो कओ तस्स मिच्छा मि दुक्कडं’ २. बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंडियं जं विराहियं तस्स मिच्छा मि दुक्कडं’ आदि। उपर्युक्त पाठांशों में प्रथम का अर्थ है- जो मैंने दिवस भर में (रात्रि में, पक्ष में, चातुर्मास में, सम्पूर्ण वर्ष में) (तत्सम्बद्ध व्रत में) अतिचार (दोष) का सेवन किया है, तो उसका दुष्कृत निष्फल हो। द्वितीय पाठांश का तात्पर्य है- बारह प्रकार के श्रावक धर्म को कहीं खण्डित किया हो, विराधना की हो तो, मेरा वह पाप निष्फल हो।

उपर्युक्त पाठांशों से यह विदित होता है कि श्रावक-श्राविका जब प्रतिक्रमण में अपने व्रतों की आलोचना करते हैं तो वे आत्मशुद्धि एवं व्रतशुद्धि की दृष्टि से ‘तस्स मिच्छा मि दुक्कडं’ शब्दों का प्रयोग करते हैं।

‘मिच्छा मि दुक्कडं’ शब्दों का उच्चारण मात्र होठों या उच्चारण-अवयवों से होना पर्याप्त नहीं है, अपितु इसके साथ ज्ञानचेतना जुड़नी चाहिए। मात्र शब्दोच्चारण तो द्रव्य प्रतिक्रमण रह जाता है, उससे भूलों का सुधार नहीं होता, भूल सुधार के लिए भाव प्रतिक्रमण अनिवार्य है। भाव प्रतिक्रमण से तात्पर्य

है भावतः उपयोगपूर्वक सजगता के साथ प्रतिक्रमण। द्रव्य प्रतिक्रमण में उपयोग कहीं अन्यत्र रहता है, जबकि भाव प्रतिक्रमण में उपयोग उस दोष की शुद्धि की ओर केन्द्रित रहता है। 'मिच्छा मि दुक्कडं' की तुलना 'Sorry' शब्द के उच्चारण एवं तदनु रूप अनुभव (Feeling) से की जा सकती है। मात्र Sorry शब्द का उच्चारण करते रहें, और दोष करते रहें, तो सुधार होने वाला नहीं है, किन्तु उसे जब हृदय से अपना दोष स्वीकार करते हुए बोला जाता है तो पुनः भूल न करने का संकल्प व्यक्त होता है, तथा जिसके प्रति भूल की गई है, उसे भी भावपूर्वक उच्चरित 'Sorry' शब्द को सुनकर अच्छा अनुभव होता है, वह प्रतिकार के भाव को भी त्याग देता है।

बिना भाव या उपयोग के 'मिच्छा मि दुक्कडं' देने का दुष्परिणाम यह है कि 'मिच्छा मि दुक्कडं' का उच्चारण तो किया जाता है, किन्तु दोष की प्रवृत्ति चालू रहती है। जैसा कि कहा है-

जं दुक्कडं ति मिच्छा, तं चेव निसेवए पुणो पावं।

पच्चक्खमुसावाई, मायानियडिप्पसंगो य।।

जो अपने दुष्कृत अर्थात् पाप रूप कार्य को 'मिथ्या' कहकर ('मिच्छा मि दुक्कडं' कहकर) पुनः उसी पाप कार्य का सेवन करता है तो वह प्रत्यक्ष में मृषावादी है और उसके मायावी होने का भी प्रसंग आता है।

आगम-वाङ्मय में एक उदाहरण आता है कि एक कुम्भकार की कुटिया में कुछ निहनवमत के साधु विराजे। उनमें से एक लघु साधु कंकरी फेंक कर कुम्भकार के घड़ों को फोड़ने लगा। कुम्भकार ने देखा तो कहा- "आप मेरे घड़े क्यों फोड़ रहे हैं?" साधु बोला- "मिच्छा मि दुक्कडं"। किन्तु उद्दण्ड साधु ने फिर कंकर फेंक कर घड़े फोड़ने का कार्य जारी रखा एवं 'मिच्छा मि दुक्कडं' देता रहा। बाद में कुम्भकार ने उस लघु उद्दण्ड साधु का कान मोड़ दिया। साधु बोला- "मेरा कान दर्द कर रहा है।" कुम्भकार बोला- "मिच्छा मि दुक्कडं"। इस प्रकार कुम्भकार भी बार-बार कान मोड़ता रहा और 'मिच्छा मि दुक्कडं' देता रहा। साधु बोला- "अहो, यह 'मिच्छा मि दुक्कडं' खूब है, अपराध करते रहो, और 'मिच्छा मि दुक्कडं' देते रहो।" कुम्भकार ने भी जब साधु को कहा कि आपका भी 'मिच्छा मि दुक्कडं' ऐसा ही है तो उस साधु ने घड़े पर कंकर फेंकना बंद किया।

भाव प्रतिक्रमण करते समय भावतः 'मिच्छा मि दुक्कडं' का प्रयोग करने का फल केवलज्ञान की प्राप्ति भी हो सकता है। इसका उदाहरण है महासती मृगावती। तीर्थंकर भगवान महावीर कौशाब्बी नगरी में पधारे तब चन्द्रसूर्य भी

उनके वन्दन को आए। वहाँ पर आर्या मृगावती दिन का उदय समझ कर अधिक समय तक ठहर गई। शेष साध्वियाँ तीर्थकर प्रभु को वन्दन कर लौट आई। चन्द्रसूर्य भी वन्दन करके चले गए तो वहाँ एकदम अन्धकार हो गया। महासती मृगावती हड़बड़ाहट में साध्वीप्रमुखा आर्या चन्दना के पास गई। आर्या चन्दना ने आलोचना करायी एवं कहा कि सत्कुलीन महासती को इतने समय तक वहाँ ठहरना उचित नहीं। महासती मृगावती सद्भाव से 'मिच्छा मि दुक्कडं' देती हुई आर्या चन्दना के चरणों में झुक गई। महासती मृगावती को उसी रात्रि में केवलज्ञान हो गया।

'मिच्छा मि दुक्कडं' के एक-एक अक्षर का अर्थ आवश्यकनिर्युक्ति में इस प्रकार किया गया है-

'मि' ति मिउमहवत्ते, 'छ' ति य दोसाण छायेणे होइ।

'मि' ति य मेराए ठिओ, 'दु' ति दुगुंछामि अप्पाणं।।

'क्क' ति कडं मे पावं, 'ड' ति डेवेमि तं उवसमेणं।

एसो मिच्छा दुक्कडं, पयक्खरत्थो, समासेण।।

—आवश्यकनिर्युक्ति 686-687

मि = मृदु-मार्दव, छ=दोषों का आच्छादन, मि=चारित्ररूप मर्यादा, दु= दुष्कृतकारी स्वयं की निन्दा, क्क= अपने द्वारा कृत पाप की स्वीकृति, ड= डेवेमि =पाप का उल्लंघन करता हूँ। अर्थात् मैं मृदु होकर मार्दव भाव से युक्त होता हूँ, दोषों से बचता हूँ, चारित्र रूप मर्यादा में स्थिर होता हूँ, दोष करके मैंने भूल की है, अब मैं ऐसा दोष नहीं करूँगा।

'मिच्छा मि दुक्कडं' का भावतः उच्चारण करने के दो लाभ हैं- १. पूर्वकृत दुष्कृत से हुआ कर्मबंध भी शिथिल हो सकता है। उसके स्थिति बंध एवं अनुभावबंध में अपकर्षण (कमी) हो सकता है। २. नवीन आस्रव का निरोध रूप संवर होता है। दोष न करने के प्रति सजगता बढ़ती है, जिससे दोष की आवृत्ति नहीं होती है। इस प्रकार 'मिच्छा मि दुक्कडं' आत्मशुद्धि का बहुत बड़ा साधन है। इससे गृहीत व्रतों का पालन भी शुद्ध रीति से होता है। किन्तु आवश्यकता इस बात की है कि 'मिच्छा मि दुक्कडं' का भावतः प्रयोग हो। 'मिच्छा मि दुक्कडं' को ही प्रतिक्रमण भी कहा गया है।

'मिच्छा मि दुक्कडं' भावपूर्वक कहने से चेतना के स्तर पर जहाँ दोष शुद्धि हो जाती है वहाँ पुनः उसकी आवृत्ति करने पर भी विराम लग जाता है। मिच्छा मि दुक्कडं में जहाँ अपनी दुष्प्रवृत्ति की व्यर्थता का अनुभव होता है वहाँ उसके तीव्र फल में भी निश्चित तौर पर कमी आती है।

क्षमा वीरस्य भूषणम्

श्री चांदमल कर्णावट

सुमति—सुप्रिय, आज क्षमापना दिवस है। आज सभी लोग अपनी भूलों के लिए आपस में क्षमायाचना करेंगे। क्षमा वीरों का भूषण है।

सुप्रिय—भूल करो और क्षमा मांगलो या क्षमा कर दो। इसमें कैसी वीरता?

सुमति—सुप्रिय! क्षमा मांगने में अहं को कितनी ठेस लगती है? जो अपने मन व विचारों पर काबू कर सके, वही किसी से क्षमायाचना कर सकता है।

सुप्रिय—और क्षमा करने में कौनसी वीरता है?

सुमति—सोचो सुप्रिय! जिसने किसी का अपमान किया, उसका बदला व्यक्ति जिन्दगी की अंतिम सांस तक लेना चाहता है। उसे क्षमा तो कोई विरला व्यक्ति ही कर सकता है।

सुप्रिय—अब मैं समझा मेरे भाई कि 'क्षमा वीरस्य भूषणम्' क्यों कहा गया है। परन्तु क्षमा करते रहने से समाज में अत्याचार, अनाचार ही बढ़ेगा। अपराधी को तो सख्त से सख्त दण्ड देना चाहिए।

सुमति—क्या कह रहे हो सुप्रिय! हिंसक प्राणियों के हृदय में भी प्रेम की धारा बहती है। शेर-शेरनी भी अपने बच्चों को कितना प्यार करते हैं। फिर मनुष्यों में तो सच्चा स्नेह मिलना ही चाहिए। स्थायी सुधार प्रेम से ही होता है, दण्ड से नहीं।

सुप्रिय—ये सब आदर्श की बातें हैं सुमति! व्यवहार में ऐसा कहाँ होता है?

सुमति—इतिहास ऐसे अनेकानेक उदाहरणों से भरा है। हर समाज में, हर ग्राम-नगर में ऐसे व्यक्ति मिल जायेंगे जो स्नेहशील हैं, क्षमाशील हैं। भगवान महावीर और महात्मा बुद्ध से लेकर महात्मा गांधी और विनोबा के जीवन से हम परिचित हैं। ऐसे व्यक्ति स्वयं सुखशांतिपूर्ण जीवन जीते हुए समाज में शांति की स्थापना करते हैं।

सुप्रिय—क्षमाशीलता की बहुत अच्छी व्याख्या की आपने सुमति! समाज में स्नेह एवं क्षमाशीलता का आचरण करने वाले व्यक्तियों की तादाद बढ़ेगी, तभी समाज आदर्श समाज बनेगा।

सुमति—हम सभी इसी प्रकार का सुन्दर व्यवहार करने का प्रयास करें तो हमारा समाज अवश्य आदर्श समाज बनेगा, इसमें तनिक भी संदेह नहीं।

-34, अहिंसापुरी, उदयपुर (राज.)

समत्व की साधना : सामायिक

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

सामायिक को क्रय नहीं किया जा सकता

सामायिक को पैसों से नहीं खरीदा जा सकता। श्रेणिक राजा अपने नारकीय द्वार बन्द करने हेतु पूणिया श्रावक से सामायिक खरीदने चला गया, किन्तु क्या सामायिक का मूल्य आंका जा सकता है? श्रेणिक राजा को अपने वैभव पर गर्व था। वह पूणिया श्रावक से सामायिक का मनचाहा मूल्य मांगने हेतु कहने लगा। पूणिया श्रावक चुप रहा। फिर उसने श्रेणिक से कहा- “सामायिक का मूल्य मुझे ज्ञात नहीं है। आप भगवान् महावीर से इसका मूल्य ज्ञात कर लीजिए।” भगवान् महावीर ने बताया कि करोड़ों सुमेरु पर्वत भी यदि दिये जाएँ तो वे सामायिक की दलाली भी नहीं कर सकते।

वस्तुतः सामायिक का धन वैभव से कोई संबंध नहीं है। धन-वैभव का संबंध शारीरिक सुख-सुविधाओं से हो सकता है, किन्तु आत्मा से नहीं। धन-वैभव से समता आ ही नहीं सकती। समता आन्तरिक विषमता को दूर करने पर आती है तथा वही आत्मा का वैभव है।

सच्चा समभाव—सादगी और निष्परिग्रहता में

एक भाई सादे सफेद कपड़े के आसन पर सादे वस्त्र पहिने सामायिक में बैठा है और दूसरा भाई गलीचे का आसन लेकर बैठा है। गलीचे वाले को सामायिक का लाभ अधिक मिलेगा या उस सीधे-सादे वस्त्रों में सादे आसन पर बैठने वाले भाई को? एक भाई सफेद रंग की सादी सूत से बनी अथवा चन्दन की लकड़ी की माला लेकर बैठा है और दूसरा भाई चांदी की मणियों की माला लेकर बैठा है। सेठ साहब अपनी उस चांदी की माला को ऊपर उठाकर जोर-जोर से नमस्कार मंत्र जप रहे हैं। इस तरह से सेठ साहब सामायिक कर रहे हैं या सब लोगों के सामने अपनी साहिबी का प्रदर्शन कर रहे हैं? अपने सब भाइयों को बेईमान समझने की भावना प्रदर्शित कर रहे हैं या अपने बड़प्पन का भोंडा प्रदर्शन कर रहे हैं? सामायिक में बैठकर भी आपका यह खयाल हो गया कि मेरी मोटाई, सेटाई लोगों को कैसे बताऊँ तो फिर आप भगवान के चरणों में कैसे पहुँचेंगे?

भगवान तो वीतराग हैं, अकिंचन हैं। छोटा-सा लंगोटी का कपड़ा भी

उनके तन पर नहीं है। आप भले ही आजकल के भगवान् के सिर पर सोने का मुकुट और न जाने क्या-क्या लगा दें भक्ति के वश में, पर भगवान तो हैं पूर्ण अकिंचन। भगवान के भक्त कहते हैं- महाराज! क्या करें? आप तो बहुत कहते हैं, पर रात और दिन गले में यह सोने की लड़ तो रहती ही है। सामायिक और पौषध में अगर निकाल दें तो लोग समझेंगे कि क्या लड़ और अंगूठी इनकी गुम हो गई या इन सेठ साहब की स्थिति कमजोर हो गई? तो महाराज! अगर यह पहनकर नहीं आवेंगे तो हमारी स्थिति कमजोर समझी जावेगी। माताओं में तो सोने के कंदोरे पहनकर सामायिक और पौषध करने वाली बहुत होंगी। यह सामायिक और पौषध आदि व्रतों का आदर करना है या इनकी खिलवाड़ करना है? अगर सामायिक के रहस्य को ध्यान में लेना है तो यह बात ध्यान में लीजिये-

सब जग जीवों में बन्धु भाव, अपना लो तज के वैर भाव।

सब जन के हित में सुख मानो, तो सामायिक साधन कर लो॥

यदि सामायिक के स्वरूप के संबंध में आप उपासकदशांग का थोड़ा सा चिन्तन-मनन करेंगे तो आपको भलीभांति ज्ञात हो जायेगा कि पूर्व काल में सामायिक की साधना करते समय पूर्णतः सादगी और निष्परिग्रहत्व को सर्वाधिक महत्त्व दिया गया है। 'उपासकदशांग' में स्पष्ट उल्लेख है कि कुंडकोलिक श्रावक ने अशोक वाटिका में सामायिक के समय मूंदड़ी भी उतार कर अलग रख दी। चद्वर और मूंदड़ी उतार कर उसने सामायिक में ध्यान लगाया। वस्तुतः सामायिक में सोना, चांदी, हीरे, जवाहरात के आभूषणों का त्याग होता है, परिग्रह का त्याग होता है। मुनिवृत्ति का आचरण होता है। ऐसी सामायिक ही साधक को अभीष्ट होनी चाहिए।

सामायिक में स्वाध्याय करें

विषम भावों से समभावों में आना सामायिक का लक्ष्य है। जिस प्रकार कुशती, दंगल से शारीरिक बल बढ़ता है उसी प्रकार सामायिक से मानसिक बल में वृद्धि होती है। ज्ञान के साथ आचरण और आचरण के साथ ज्ञान होना आवश्यक है। सामायिक मुख्यतः आचार-प्रधान साधना है। पर यह आचार क्रियाकाण्ड बनकर न रह जाये, अतः इसके साथ ज्ञान अर्थात् स्वाध्याय का जुड़ना आवश्यक है। आप इस बात का ध्यान करें कि आपकी सामायिक दस्तूर की सामायिक न होकर साधना की सामायिक हो। सामायिक को तेजस्वी बनाने के लिये उसमें स्वाध्याय और ध्यान-साधना की आवश्यकता है और स्वाध्याय को जीवनस्पर्शी बनाने के लिये सामायिक का अभ्यास आवश्यक है।

आपमें से बहुत से भाई सामायिक करने के अभ्यासी हैं, पर सामायिक की साधना का कोई दायित्व नहीं समझा है। थोड़ी माला फेर ली, कुछ स्तवन बोल दिये और सामायिक का समय पूरा कर लिया। कुछ लोग सहारा लेकर बैठ जाते हैं और सामायिक का समय पूरा कर लेते हैं। वे भूल जाते हैं कि सामायिक साधना की क्या विधि है, क्या व्यवस्था है, क्या नियम है? एक बाई कहती है कि महाराज, एक दिन में मेरे १० सामायिक हो जाती है। पूछा गया कि पोता पास में आवे तो उसकी ओर मन तो नहीं जाता? बोली- मन तो जाता ही है महाराज! और पोती आ जावे तो? उसको तो गोद में बिठाना ही पड़ता है महाराज। इसी प्रकार बीनणी बाहर आयी तो उसे पूछ लिया- बीनणी! तिजोरी की चाबी तुम्हारे पास ही है न? यह सारी कला, यह सारे खेल सासूजी कर लेती हैं और फिर कहती हैं कि १० सामायिक दिन में हो जाती है। सामायिक की साधना में मन को एकाग्र करना प्राथमिक कर्तव्य है और मन को एकाग्र करने का एकमात्र उपाय है स्वाध्याय। सामायिक साधना कोई साधारण वस्तु नहीं। वस्तुतः सामायिक एक बहुत बड़ी योगसाधना है। पतंजलि ने 'पातंजल योग सूत्र' में योग के आठ अंग बताये हैं- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। ये आठों अंग सामायिक में पूर्ण होते हैं। आपने उस सामायिक पर चिन्तन नहीं किया है, ऐसा कहूँ तो अनुचित नहीं होगा। हमारी माताएँ तो सामायिक ग्रहण करने में आपसे आगे हैं। पर सामायिक में प्रमाद-सेवन में, विकथा करने में भी वे आपसे आगे हैं। वे सामायिक में अपने घर की, पर घर की, खाने-पीने की, सभी प्रकार की बातें कर लेंगी। यहाँ तक कि सामायिक में विवाह-सम्बन्ध की बात भी पक्की कर लेंगी। इसीलिये सामायिक की साधना जो एक बड़ी साधना मानी गई है, वह तेजहीन होकर आजकल एक खिलवाड़ सी हो गयी है। आजकल के नौजवानों के लिये वह एक आलोचना का विषय बन गयी है।

सामायिक जैसे उच्च व्रत की साधना खिलवाड़ न बने, उपहास और आलोचना की बात न बने और उसकी विशुद्धता, शक्ति और तेजस्विता आगे बढ़े, इसके लिये स्वाध्याय परम औषध है, बहुत बड़ा साधन है। इसलिये इसको सामायिक के साथ जोड़ना आवश्यक है। शास्त्र में जो 'ज्ञानक्रियाभ्यां मोक्षः' कहा है इसी को 'सामायिकस्वाध्याभ्यां मोक्षः' इन दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है। उधर ज्ञान और क्रिया, इधर सामायिक और स्वाध्याय। प्रभु ने दो प्रकार के धर्म को-श्रुतधर्म और चारित्रधर्म को मोक्ष का मार्ग बतलाया है। स्वाध्याय कहने से श्रुत अर्थात् ज्ञान आ गया और सामायिक से चारित्र अर्थात् क्रिया आ गई।

द्रव्यनिवृत्ति के साथ भावनिवृत्ति परमावश्यक

सामायिक में आपने सावद्ययोगों से निवृत्ति तो की, पर किस प्रकार की निवृत्ति की, यह जान लेना चाहिये। निवृत्ति के भी दो भेद हैं- एक तो द्रव्य निवृत्ति और दूसरी भाव निवृत्ति। सचित्त पृथ्वी, जल, तेजस्काय और वायुकाय का संघट्टा नहीं किया, सचित्त वनस्पति तथा त्रसकाय की विराधना नहीं की, चींटी आदि जीव-जन्तु आ जाय और आपके शरीर पर चढ़ जाय तो समता रखी एवं उन पर आघात नहीं किया, यह द्रव्य निवृत्ति हुई। पर सामायिक में केवल द्रव्यनिवृत्ति ही नहीं भावनिवृत्ति भी आवश्यक है। पृथ्वी, अप, तेजस, वायु और वनस्पतिकाय के जीवों की हिंसा न करते हुए भी सामायिक में भावहिंसा की संभावना रहती है। जैसे-आपने सामायिक में सावद्ययोगों की द्रव्यनिवृत्ति तो की, पर परिवार वालों की ओर आपका मन चला गया- घरवाले याद करते होंगे, अब तो जल्दी ही घर जाऊँगा, मकान की मरम्मत करवानी है तो यह भाव से सावद्य प्रवृत्ति हुई, निवृत्ति नहीं हुई। भाव से निवृत्ति तो तभी होगी जब सावद्य प्रवृत्ति का चिन्तन न करें। यदि मानसिक विचारधारा चली कि बाजार से सब्जी लानी है, अमुक प्रकार की सब्जी भाजी बनवानी है, फल-फूल लेने हैं, रस निकालना है, कुँए से पानी निकालना है, आदि आदि रूप से आपका चिन्तन चला तो आपकी वह सामायिक द्रव्य दृष्टि से ही सामायिक हुई, भाव दृष्टि से नहीं हुई। इसलिये सामायिक के लक्ष्य पर पहुँचने के लिये अभ्यास की आवश्यकता रहती है। यदि आप निरन्तर अभ्यास करते रहेंगे तो बाहर की द्रव्य निवृत्ति की तरह सावद्ययोगों की भाव से भी निवृत्ति कर सकेंगे। (क्रमशः)

जिनवाणी

प्राणिमित्र नितेश नागोता 'जैन'

काजल से काले कर्मों को धोने की,

नित्य प्रति प्रेरणा देती है जिनवाणी।

जीवन के विषय-कषायों को,

दूर करती है जिनवाणी।।

चौरासी की भूल-भुलैया से हमें,

गंतव्य तक पहुंचाती है जिनवाणी

जीवन का मोल समझो और निज को पहचानो

जीवन में चार चांद लगाती है जिनवाणी

-भवानीमण्डी (राज.)

संस्कारों का संकट : दूर करेगा कीना?

उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.

संस्कारित बालक परिवार, संघ एवं समाज की अमूल्य निधि हैं। वे स्वयं का जीवन अच्छा बनाने के साथ माता-पिता, परिवार, संघ, समाज को गौरवान्वित करते हैं। किन्तु आज बालकों को संस्कारित करने का दायित्व माता-पिता के माध्यम से पूर्ण नहीं हो रहा है। उपाध्यायप्रवर ने रविवार, 20 जुलाई 2003 को घोंड़ों का चौक, जोधपुर स्थानक में फरमाये अपने प्रवचन में संस्कारों के संकट की ओर ध्यान आकृष्ट कर माता-पिता को आगाह किया है। प्रवचन का आशुलेखन श्री नीरतन जी मेहता ने किया है। -सम्पादक

धर्मप्रेमी बन्धुओं!

पिछली पीढ़ी में संस्कारों का निरन्तर होता हुआ आज आपके लिए चिंता का विषय है तो हम संत भी इस पर बराबर चिन्तन करते रहते हैं। आपमें से कई आकर कहते हैं- महाराज! आज के बच्चे क्या, युवक क्या, सब धर्मविमुख होते जा रहे हैं। प्रायः बुजुर्गों के मुख से सुना भी जाता है कि बच्चे कहना नहीं मानते।

आज संस्कार सिमट रहे हैं, यह बड़ी समस्या है। इस पर चिन्तन करने की आवश्यकता है। यह समस्या दिन-प्रतिदिन क्यों बढ़ रही है? इसके पीछे क्या कारण हैं? आप कारणों की तह में जायेंगे तो आपको मालूम होगा कि आपने बच्चों को कभी प्रेमपूर्वक कहा नहीं और न ही उनके सामने कोई आदर्श ही रखा। जब तक आप आदर्श प्रस्तुत नहीं करेंगे, बच्चे धर्म के मार्ग में लगने वाले नहीं हैं।

आज का नवयुवक कहने की अपेक्षा आचरण को देखकर समझता है। आचरण अनुकरणीय होता है, कहने में आचरण की बात आप कह तो जाते हैं, पर अपना जीवन कैसा है, यह नहीं देखते। जितना जीवन का असर पड़ता है, उतना कहने का नहीं पड़ता। कहने का असर कभी रहता है तो कभी नहीं भी रहता, लेकिन आचरण का असर जरूर रहता है।

आप सामायिक करते हैं। अगर जीवन में समता उतर गई तो कहने की आवश्यकता नहीं। कई हैं जो वर्षों से सामायिक करते आ रहे हैं, फिर भी जीवन कोरा का कोरा है। एक बहिन आचार्य श्री (आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.) के पास आईं। आचार्यश्री अक्सर

पूछा करते हैं- आप क्या करती हैं? क्या सामायिक करती हैं? स्वाध्याय होता है? वह बहिन बोली- महाराज! पहले तो करती थी, अब छोड़ दिया। पूछा-छोड़ा क्यों! उसका उत्तर था- मम्मी, पापा को जब लड़ते देखा तो मेरी सामायिक से श्रद्धा हट गई।

“क्या सामायिक झगड़ा सिखाती है? सामायिक तो शांति-समाधि देने वाली है, बहिन तूने यह उल्टा अर्थ कैसे पकड़ लिया। व्यक्ति में दोष हो सकता है, कमियां रह सकती हैं, पर सामायिक में कोई कमी नहीं है। अगर सामायिक लड़ना सिखाती तो सबसे पहले हम संत लड़ते।” आप सामायिक का दोष नहीं निकालें। आप जरा चिंतन करें कि बच्चे धर्म के सम्मुख नहीं हो रहे हैं, इसके पीछे बच्चों का दोष नहीं है। दोष आपका है, आप बच्चों को संस्कार नहीं दे रहे हैं। आपने बच्चों को कभी संतों के यहाँ लाना उचित नहीं समझा। अब बच्चे बड़े हो गये, तो वे यहाँ आने में शर्म समझते हैं।

गुरुदेव फरमाते थे कि जब तक मिट्टी कच्ची है तब तक उसे थपथपी देकर जैसा आकार देना चाहें, दिया जा सकता है। मिट्टी के पक जाने के बाद आकार देना संभव नहीं है। एक भाई घड़ा खरीदने के लिए गया। उसने घड़ा देखा, हाथ में लिया और ठोला लगाकर देखने लगा। पास में कुम्भकार खड़ा था। वह बोला- भाई! तू जोर-जोर से मत मार, यह फूट गया तो...? मेरे पिता ने खूब थपथपा कर इसे घड़ा है। घड़ा कब तैयार हुआ? पक जाने पर। अब इसे आकार देना चाहो तो... ?

इसी तरह जब बच्चा छोटा था उसे तैयार करते तो आज आपको शिकायत करने का मौका नहीं आता। अब बच्चा बड़ा हो गया तो आप संतों से कहते हैं- महाराज! आप उसे समझाना। वह तो अब खाने-पीने तक लग गया है। आप साथ में यह भी कह जाते हैं कि आप मेरा नाम मत लेना।

सुबह युवक संघ के अध्यक्ष भाई मनीष लोढ़ा से मैंने पूछ लिया- आपके सामायिक-स्वाध्याय कार्यक्रम में सदस्यों की कितनी संख्या है? वह संकोच करते बोला-महाराज! जोधपुर के हाल तो....। युवक जो एक आवाज के साथ तैयार होने चाहिये, आज वह स्थिति नहीं है। उनमें यह कमी क्यों? इसके पीछे भी वही कारण रहा हुआ है कि माता-पिता ने संस्कार निर्माण पर ध्यान नहीं दिया।

आप संस्कारों का निर्माण कर सकते हैं। बचपन के संस्कार स्थाई होते हैं। माता मदालसा ने 'सिद्धोऽसि बुद्धोऽसि निरंजनोऽसि' लोरी देते-देते बच्चों में संस्कार जगा दिये कि तुम सिद्ध हो, बुद्ध हो, निरंजन हो और निराकार हो। उस माता ने अपने छः-छः पुत्रों को लोरी देते-देते संन्यास धर्म में जोड़ दिया। राजा ने पत्नी मदालसा से कहा- तुम सबको संन्यास मार्ग में लगा रही हो तो मेरा राज्य कौन संभालेगा? मदालसा ने कहा- इस बार सन्तान होगी तो मैं उसे राजनीति की शिक्षा दूँगी।

माताएँ जैसा चाहती हैं सन्तान को वैसा बना सकती हैं। हमारी इस परम्परा में माताओं की बड़ी भूमिका रही है। मैं अमरचन्द जी महाराज के लिए कहूँ तो कहना होगा सुन्दरबाई ने अमरचन्द जी को धर्म के मार्ग में लगाया और स्वयं भी दीक्षित हो गईं। पंडित रत्न बड़े लक्ष्मीचन्द जी म.सा. को उनकी माता हीरादेवी महासती ज्ञानकंवर जी महाराज के पास लेकर गईं जो बाद में दीक्षित हुए। बाबाजी भोजराज जी महाराज संसारी जीवन में भोपालगढ़ में नौकरी करते थे। उनको भी श्रावक-श्राविकाओं से प्रेरणा मिली। स्वामी लाभचन्द जी दीक्षा के पहले ब्यावर के खीवसरा परिवार में रहते थे। सुगनचन्द जी खीवसरा परिवार में आज भी कंचनबाई जी हैं। लाभचन्द जी को उनके माता-पिता ने मालवा जाते खीवसराजी को सौंप दिया। ब्यावर से सतियाँ समय-समय पर जयपुर विराजित आचार्य श्री विनयचन्दजी महाराज के दर्शन-वन्दन के लिए जाती रहती। सतियों ने जाकर वन्दन-नमन किया और सुख-शान्ति की पृच्छा की। पूज्यपाद शोभाचन्द जी महाराज बोले- "क्या सुख-साता पूछती हो, कोई चेला तो लाकर देती नहीं।" सतियों को लाभचन्द जी की योग्यता पर भरोसा था, वे उनको लेकर जयपुर पहुँची, जिनकी दीक्षा हुई। चौथमल जी महाराज सन्त बनने से पूर्व पादू में संतोषचन्दजी सुराना के यहाँ घर का काम करने के लिए रहते थे। संतों ने बालक को देखा तो वह होनहार लगा। सेठाणी जी से पूछकर संत उसे अपने साथ ले गये। पादू से मेड़ता विहार में सेठ साहब मिल गये। पूछा- "महाराज! इसे कहाँ ले जा रहे हो?" संतों ने कहा- "हम बिना आज्ञा किसी को साथ नहीं रखते। हम सेठाणी जी से पूछकर लाए हैं।" सेठजी घर पहुँचे और सेठाणी जी से कहा- तूने छोकरे को कहाँ भेज दिया? अब घर का काम कौन करेगा? सेठाणी ने कहा- आपरे दूसरो

आदमी आ जाय। चौथमल जी आगे चलकर गंभीर और विद्वान संत हुए। महासती धनकंवर जी महाराज की प्रेरणा से रूपकंवर जी को वैराग्य जगा। रूपा सती और आचार्य भगवन्त (पूज्य श्री हस्तीमल जी महाराज) माँ-बेटे दोनों साथ दीक्षित हुए। कहने वालों ने माता रूपकंवर जी से कहा भी कि यह एकाकी है, इसे तो धंधे में लगाना चाहिए। पर, माँ का चिंतन था कि धंधे में लगने से यह लखपति-करोड़पति बन सकता है, लेकिन दीक्षित होकर हजारों-लाखों का पूजनीय बनेगा। आचार्य भगवन्त ने माता के साथ दीक्षा ली, आप जानते हैं।

इस सम्प्रदाय की ज्योति जगाने में बहिनों का बड़ा योगदान रहा। इस परम्परा की बहिनें जिन घरों में गईं, वहाँ पर भी धार्मिक वातावरण तैयार किया। कई वैष्णव परम्परा के घरों में गईं तो भी वहाँ के परिवार को धर्म से जोड़ दिया। बच्चे का जीवन कोरा कागज है। कोरे कागज पर जैसा चित्र बनाना चाहो वैसा बन सकता है। जरूरत है बच्चों को बचपन से संस्कार दिये जायें।

एक माँ का इकलौता बेटा था- जस्सा। माँ प्रतिदिन उसे गुरु महाराज के पास ले जाती और स्वयं भक्तामर सुना करती। बच्चा माँ के साथ बैठ जाता। सुनते-सुनते बच्चे को भक्तामर कण्ठस्थ हो गया। माँ का नियम था-रोज गुरु महाराज के जाना और भक्तामर सुनना।

एक बार वर्षा ऋतु में तीन दिन तक वर्षा चलती रही। वर्षा नहीं रुकी तो माँ ने भोजन नहीं किया, तो बच्चा भी भोजन करने नहीं बैठा। बच्चे ने पूछा, तो कहा- “बेटा! मैं महाराज के नहीं जा सकी, जब तक भक्तामर नहीं सुनती भोजन नहीं करती।” बच्चा बोला- “माँ! मैं सुना दूँ।” बच्चे ने पूरा भक्तामर सुना दिया। कहीं एक भी गलती नहीं। शुद्ध उच्चारण के साथ भक्तामर सुना दिया तो माँ ने भोजन कर लिया। गुरु महाराज के पास गईं तो गुरु महाराज ने कहा- तेरे तो तेले की तपश्चर्या हो गई होगी। माँ ने कहा- नहीं महाराज, मैंने भोजन कर लिया है। तो फिर भक्तामर कहाँ सुना? वह बोली- “जस्सा है ना। इसे सुनते-सुनते कण्ठस्थ हो गया।” गुरु महाराज के सामने बोलाया गया तब भी एक गलती नहीं।

गुरु महाराज उसे देखकर बहुत प्रसन्न हुए। ऐसा प्रतिभाशाली यदि दीक्षित हो जाय तो शासन की कितनी प्रभावना होगी। गुरु ने कहा- तू इसे दीक्षा दिला दे। माँ की वृद्धावस्था थी। फिर ममता कि यह मेरा

सहारा है, आंखों का तारा है। माता ममता के कारण गुरु महाराज से ना कह आई। गुरु महाराज ने संघ को उसके पास भेजा। संघ ने माँ से निवेदन किया कि यह आगे जाकर शासन-प्रभावक सिद्ध होगा। संघ की बात सुनकर माँ पशोपेश में पड़ गई। इधर ममता थी तो उधर कर्तव्य था। माँ ने सोचा- संघ बड़ा है। इसलिए संघ की आज्ञा का निरादर नहीं करना है। माँ ने आज्ञा दे दी। आगे चलकर वही 'जस्सा' उपाध्याय यशोविजय जी के नाम से प्रसिद्ध हुआ। कहते हैं- एक बार संस्कृत विद्वानों की परिषद् जुड़ी। संस्कृत के विद्वानों ने कहा- जैन संत संस्कृत नहीं जानते। उपाध्याय यशोविजय जी ने कहा- ऐसी बात नहीं है। उन्होंने एक घंटे धारा प्रवाह संस्कृत में बोलकर बता दिया कि जैन सन्त संस्कृत जानते हैं। उनके बोलने में कहीं भी त्रुटि नहीं थी।

इस संस्कृति को, धर्म को, परम्परा को सुरक्षित रखना सबका कर्तव्य है। भगवान महावीर का उद्घोष है- चतुर्विध संघ ही चतुर्विध संघ को बढ़ाने वाला होता है। धार्मिकों के बिना धर्म नहीं रहता। आप इन बच्चों को संस्कार दीजिये। बच्चे यहाँ आयेंगे तो कुछ-न-कुछ अच्छी बात सीखकर ही जायेंगे।

आज बिगड़ने के बहुत-सारे रास्ते हैं। वातावरण से आप परिचित हैं। ऐसे वातावरण में यदि संस्कारित जीवन है तो फिर भी बच्चे रहने की संभावना है। आप स्वयं बच्चों के लिए आदर्श बनें, जब भी संतों के पास आएँ, बच्चों को साथ लाने का उपयोग रखें।

अलवर के एक भाई ने बताया कि बाबजी! मेरे कपड़े का व्यापार था। गांठ खोली, जिसमें लट्ठा निकला। लट्ठा सफेद होता है। बच्चे ने कहा- "यह तो ऐसा सफेद है जैसे अण्डा।" दादा का माथा ठनका। अण्डे का नाम कैसे आया? चांदी सफेद होती है, चूना सफेद होता है, दूध-दही सफेद होते हैं, उनका नाम आता तो कोई बात नहीं, पर बच्चे ने अण्डे का नाम लिया। दादा दिन भर बच्चे से बोले नहीं। शाम को बच्चे ने कहा- आज आप बोले नहीं। क्या मेरी कोई गलती हो गई? दादा ने कहा- सुबह तूने अण्डे का नाम लिया तभी से मेरा माथा ठनक गया। सफेद कई चीजे हैं तुलना ही करनी थी तौ उनसे करते। बच्चे ने माफ़ी माँगी और कहा आइन्दा इसका पूरा ध्यान रखूंगा।

आज संस्कार दिन-प्रतिदिन कम होते जा रहे हैं। बच्चों में प्रारम्भ से संस्कार देंगे तो उन्हें धर्मस्थान में आने में संकोच नहीं रहेगा।

कभी आप यहाँ ले भी आयेंगे तो वन्दन कैसे करना, इसका भी उन्हें ज्ञान होगा, अन्यथा वे हम संतों को कहेंगे- महाराज! मजा में हो ना! दादाजी पाट के पाये और पोतेजी को वन्दन करते शर्म। आज एक तो घर-परिवार के संस्कार नहीं, फिर कभी कोई बच्चा धर्मस्थान आ भी जाय तो कुछ हैं जो कहते हैं-अरे! आज ओ सूरज कठिना सुं उगियो। काई आज रास्तो भूल गया। ऐसा कहने वाले न अपना कर्त्तव्य जानते हैं, न संघ का हित ही।

एक पिता ने पुत्र से अपने अंतिम संदेश में कहा- बेटा! गाँव में संत हों तो उनके दर्शन किए बिना भोजन नहीं करना। पिता की बात लड़के ने मन में धारण कर ली। वह गाँव में पधारे संतों के दर्शन करने आता, किन्तु दूर से दर्शन कर चला जाता। एक दिन संतों ने श्रावकों से पूछ लिया- यह रोज आता है और तुरन्त चला जाता है, कभी ऊपर तक नहीं आता। श्रावकों ने बताया कि बाबजी इसके पिता बहुत ही धार्मिक थे। परन्तु यह सभी कुव्यसनों का शिकार है। पिता की अंतिम सीख थी गाँव में जब भी कोई संत आये तो उनके दर्शन किए बिना खाना मत खाना। इसी प्रतिज्ञा के कारण यह प्रतिदिन दर्शनार्थ आता है। संतों ने देखा-कोई बात नहीं, डोर चाहे कितनी ही कुए में चली जाय एक छोर हाथ में है तो डोर भी निकल सकती है और पानी भी निकल सकता है। पतंग चाहे जितनी ऊपर चली जाय डोर हाथ में हो तो वह ठिकाने है।

महाराज जो पाटा सामने लगाकर बैठते थे, अपना पाटा एक ओर लगा कर बैठ गये। वह दर्शन के लिए आया तो आज उसे अन्दर आकर दर्शन करने पड़े। दर्शन करके जाने लगा तो महाराज ने कहा- 'बाबू!' वह ठहर गया। उस दिन भाग्य की बात थी दूसरा वहाँ कोई श्रावक भी नहीं था। महाराज ने बात की। वह बोला- "देखो बाबजी! मैं कोई नियम नहीं लूँगा।"

महाराज ने कहा- "तुम्हारी इच्छा हो तो नियम लेना।" वह बोला- "आप सोगन करो, मैंने सोगन नहीं करावोला।" महाराज ने कहा- "ठीक है, तुझे कोई सोगन नहीं कराऊँगा, पर तू झूठ मत बोलना।" लड़के ने विचार किया- 'यह तो ठीक है।' किन्तु एक झूठ नहीं बोलने के नियम के कारण धीरे-धीरे उसके सारे व्यसन छूट गये। कोई पूछता, कहाँ जा रहे हो तो वह कैसे कहे कि मैं शराब के ठेके पर

जा रहा हूँ या जुआ खेलने जा रहा हूँ। इस तरह उसके एक-एक कर सभी व्यसन छूट गये।

एक दिन वह चोरी करने राजा के महल में गया। उसे झूठ नहीं बोलना था। रात में किसी ने राजमहल में घुसते ही पूछा- कौन? तो कहा- मैं चोर हूँ। कहाँ जा रहे हो? चोरी करने। सोचा-चोर कभी अपने आपको चोर नहीं कहता। शायद यह कोई पागल दिखता है। वह राजा के खजाने तक पहुँच गया। खजाने से उसने मोहरों की दो थैलियाँ चुरा ली। संयोग से खजांची को पता चल गया कि खजाने से मोहरों की दो थैलियाँ चोरी चली गयी हैं। उसने भी दो थैलियाँ ले जाकर घर रख दी। सवेरे बात फैल गई कि रात को चोर आया और चार थैली मोहरें चोरी हो गई। पता चलने पर उस चोर को बुलाया गया। उसने सच सच बता दिया कि उसने दो थैली मोहरें चोरी हैं। उसने यह भी स्पष्ट कह दिया कि उसने झूठ नहीं बोलने का नियम ले रखा है। खोज करने पर खजांची के यहाँ से मोहरों की दो थैलियाँ बरामद हुई। राजा को चोर की सत्यवादिता से प्रसन्नता हुई। उसने चोर को खजांची बना दिया और खजांची को छुट्टी दे दी।

संतों के यहाँ आने पर एक बात भी दिल को लग जाय तो जीवन बदल सकता है। आज रविवार का दिन है। संतों की प्रेरणा से आपका ध्यान बच्चों की तरफ गया है। इसीलिए आज कई बच्चे इस धर्मसभामें दिख रहे हैं। आप बच्चों को संस्कार देंगे तो वे संस्कृति भूलेंगे नहीं। एक बार संस्कार जग गये तो फिर वे संस्कार कहीं भी जायें, कायम रहेगें। जोधपुर-जयपुर के कई लोग विदेश में चले गये हैं, पर उनमें धार्मिक संस्कार मजबूत हैं तो वहाँ रहते हुए भी वे सामायिक करते हैं। ऐसे कई उदाहरण कहे जा सकते हैं। जोधपुर के नरेन्द्र भण्डारी, सुरेन्द्र सिंघवी जैसे कई लोग हैं जो बचपन के संस्कारों के कारण आज भी धर्म पर कायम हैं।

मैं सोचता हूँ कि आपके बच्चे भी धर्म के संस्कारों से जुड़ें। जलगांव-धुलिया-नाशिक में प्रेरणा की गई तो वहाँ सामायिक करने वाले आज बराबर सामायिक करते हैं। आपके यहाँ सिंहपोल में कुछ बच्चे इकट्ठे होते हैं, वे सामायिक कार्यों के लिए तैयार हैं, धार्मिक कार्यों की तरफ उनका ध्यान नहीं गया है। आप अगर बच्चों को धार्मिक कार्यों में जोड़ेंगे तो आगे रिक्तता नजर नहीं आयेगी। पहले पौषधशाला में

३०-३५ व्यक्ति नजर आते थे आज.....? अगर आप धर्म से जुड़ जाते तो रिक्तता नहीं आती।

आप बच्चों को संस्कार दें। बैंगलोर वाले भाई आचार्यश्री से विनति करते हुए बोले- “बाबजी! पिछली पीढ़ी को संस्कारित करना जरूरी है।” आचार्य श्री बोले- “ये सब काम क्या हमें ही करने हैं। क्यों नहीं आप बच्चों को संस्कार देने के लिए समय निकालते। आप पन्द्रह मिनट भी बैठ कर प्रेरणा दें तो बच्चों के जीवन में परिवर्तन आ सकता है।” हमारे दादाजी हमें शाम को नवकार, तिक्खुत्तो और चौबीस तीर्थंकरों के नाम बुलाते। आप बच्चों को समय नहीं देते और कहते हैं बच्चे आपका कहना नहीं मानते। आप स्वयं सोचिये- बच्चों का भविष्य किससे बनेगा? जन्म देना पर्याप्त नहीं है। आपने जन्म दिया है तो संस्कारों को भी जन्म दें।

आज का वातावरण बड़ा विकृत हो रहा है, ऐसे समय में आपको और अधिक सक्रिय होना चाहिये। आप जितना ध्यान देंगे उतनी मात्रा में आपको फल मिलेगा ही। आपके बच्चे संस्कारित होंगे तो हम भी अपना मस्तिष्क ऊँचा रख पायेंगे। गुरुदेव फरमाते थे- आपका जीवन समुज्ज्वल होगा तो हमें नीचा नहीं देखना पड़ेगा।

आप स्वयं आदर्श उपस्थित करें। आपका आचरण देखकर बच्चों में संस्कार सृजित होंगे ही।

जीवन जीएँ ऐसा सुन्दर

श्री प्रकाश कर्णावट, इजरायल

समझा अपने आपको, सब समझा, सब पाया।
जब जाना चेतन स्वरूप को, जड़ स्वरूप नहीं भाया।।
भौतिकता में होते जाते, हम अपने आपसे दूर।
रम जाते हम उसमें ऐसे करते मानवता का चूर।।
पा जायें जो मानवता को, करें भवों-भवों को चूर।
रम जायें यदि आत्मतत्त्व में, चौरासी का चक्कर दूर।।
बहुगुण प्रकटाने वाला, करता नहीं अनिष्ट कभी,
कम, गम, नम जाने वाला पा जाता है इष्ट सभी।।
श्रावक जीवन जीने वाला, साधु जीवन यदि पा जाता।
जिनवाणी का वह रखवाला, मुक्तिधाम चला जाता।।
जीवन जीएँ ऐसा सुन्दर, मधुर और मनोहर।
याद करें प्रतिपल जिसको, जीवन में वे रह रहकर।।

समय का सम्यक् नियोजन करें

मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.

जीवन में वीतरागवाणी एवं गुरु-उपदेश के श्रवण का अवसर मिलने पर भी प्रमाद के कारण हम उसका सदुपयोग नहीं कर पाते हैं। मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. ने भगवान महावीर के संदेश 'समयं गोयम! मा पमायए' के माध्यम से गुरु-शिष्य संबंध की मधुरता एवं धर्मा राधन हेतु समय निकालने की प्रेरणा प्रदान कर सबको जागृत किया है। 15 जुलाई 2003 को घोड़ों का चीक, जोधपुर में फटमाये गए प्रस्तुत प्रवचन का आशुलेखन श्री नीरतन जी मेहता ने किया है। -सम्पादक

श्रमण भगवान महावीर स्वामी ने महान् उपकार का परिचय देकर प्राणिमात्र की धर्म-साधना, त्याग-आराधना और चारित्र्य की उपासना का मंगलमय उपदेश दिया। भगवान के उपदेश के पीछे यही पवित्र भावना थी कि अनादिकाल से जीव नानाविध दुःख उठा रहा है, असमाधि पा रहा है, जीवन को व्यर्थ बर्बाद कर रहा है, उसके जीवन को समाधान मिले, समाधि प्राप्त हो और जीवन मंगलमय बने।

संदेश और उपदेश जीवन के लिए वरदान हो सकते हैं। पर कब? जबकि उनको हम आत्मसात् करने का प्रयास करें। इसके लिए हमें एक बात गहराई से विचार करने की है और वह है समय का सही नियोजन। हमारे पास बहुत समय है। वर्षा बरसती है तो वह पहाड़ पर भी, नदी पर भी, खेत पर भी, तालाब पर भी बरसती है तो गंदे नाले पर भी बरसती है। उपयोगिता कहाँ साबित होती है? जहाँ पानी से सर्जन होता है, निर्माण होता है उस जगह पानी की उपयोगिता है। खेत में बरसा पानी सर्जन का काम करता है। इसी तरह समय का जीवन-निर्माण में विशेष महत्त्व है। समय का सदुपयोग जहाँ व्यक्ति को महान् बना सकता है वहाँ उसका दुरुपयोग उसे पामर बना सकता है। समय सबको मिल रहा है। सत्ता पर बैठे व्यक्ति को भी समय मिल रहा है तो सामान्य व्यक्ति को भी समय मिल रहा है। एक संत को भी समय मिल रहा है तो एक पापाचरणरत व्यक्ति को भी समय मिल रहा है। हम गहराई से चिन्तन करें, हमारा समय किस काम में जा रहा है?

तीन शब्द मिलते हैं- चिन्ता, चिन्तन और चिदानन्द। चिन्ता जीवन के लिए अभिशाप बनकर सामने आती है। जो कुछ पास में है चिन्ता उसे लूटकर ले जाती है, भविष्य को अंधकारमय बना देती है

और स्वास्थ्य भी खराब करती है। चिंतन पर जरा विचार करें। चिंतन शब्द से विवेक जगता है और विवेक के जगने पर व्यक्ति का आचरण श्रेष्ठ और उत्तम बनता है। इसीलिए हमें चिन्तन करने की जरूरत है। क्यों, तो चिन्तन करने वाले चिदानन्द को प्राप्त करते हैं। ऐसा चिन्तन करें जिससे हमारा विवेक जगे। समय की सार्थकता साबित हो।

भगवान ने कहा- “समयं गोयमं! मा पमायए” हे गौतम! तुम समय मात्र का प्रमाद मत करो। प्रभु ने यह बात चेतावनी के स्वर में कितनी बार कही? उत्तराध्ययन सूत्र के दसवें अध्ययन में भगवान ने “समयं गोयमं! मा पमायए” वाक्य एक-दो बार नहीं, छत्तीस बार कहा। यह महत्त्वपूर्ण बात है। कहा भी किसे? वह कोई सामान्य साधक नहीं, भगवान के ज्येष्ठ और श्रेष्ठ शिष्य को कहा। आज तो गुरु अपने साधारण शिष्य को एक-दो बार कहे और कदाचित् तीसरी बार कह दे तो कभी-कभी शिष्य निवेदन करता है- भगवन्! आप सबके सामने कहने के बजाय मुझे अकेले में कह देते तो ठीक होता। आज तो गुरु को मार्गदर्शन की बात में भी सावधानी रखनी पड़ती है कि कहीं इस शिष्य के मन को ठेस नहीं लग जाय, नाराज न हो जाय।

यद्यपि नीतिकारों ने तो कहा है- शिष्य, शीशी और शिशु इनको तो डोंट लगाना चाहिये। शीशी के डोंट नहीं लगाया जायेगा तो उसके अन्दर रही बहुमूल्य वस्तु के दुलने की संभावना रहती है। कीमती वस्तु का रक्षण हो इसके लिए डोंट लगाना पड़ता है। शीशी के डोंट की जरूरत है। इसी तरह शिष्य और शिशु के भी डांट लगाने की जरूरत है। यही डांट जीवन के लिए ठाट बन जाती है। अनुभवियों ने कहा है-

दुर्जन की कृपा बुरी, भली सज्जन की त्रास।

जब सूरज गरमी करे, तब बरसण की आस।।

आप अच्छी तरह जानते हैं कि जगत् का आधार वृष्टि है। यदि यथासमय वर्षा न हो तो जन-जीवन संत्रस्त बन जाता है। अर्थात् वृष्टि चराचर प्राणियों के लिए आधार है, लेकिन वह महत्त्वपूर्ण वर्षा कब होती है जब सूरज गरमी करता है, तपता है।

मगर आज हित की बात भी आदमी को बुरी लगती है। वह इन्सल्ट फील करता है। उत्तराध्ययन सूत्र में वर्णन मिलता है- गुरुजनों की हितावह प्रेरणा को बुरा न समझे, बल्कि समझे कि गुरुदेव ने मेरा लाभ समझकर यह बात कही है।

ममलाभो त्ति पेहाए, पयओ तं पडिस्सुणे। 1.27

इतने लोग बैठे हैं, इस बीच गुरुदेव ने मुझसे कहा। इसका मतलब है मेरे पर गुरु की विशेष कृपा है। शिष्य इसे अपना सौभाग्य समझता है। परन्तु ऐसी सुल्टी लेने वाले कम हैं। वे नहीं जानते कि जीवन को घड़ने की दृष्टि होने के कारण डांट लगाते हुए भी गुरु के अन्तर-मन में करुणा रहती है। आपने सुना होगा-

गुरु कुम्हार सीस कुम्भ है, गढि गढि काढे खोट।

अन्तर हाथ सहार दे, बाहर बाहे चोट।।

कुम्हार घड़े का निर्माण करता है तो ऊपर से चोट मारता है, लेकिन भीतर में हाथ का सहारा रखता है। इसी तरह गुरु भी हित की भावना से शिष्य को डांट लगाता है तो भी उसके भीतर करुणा के भाव रहे होते हैं, हित की भावना रहती है।

मधुर संभाषण करने वाले दुर्जन की कृपा भी बुरी है। नीतिकारों ने तो दुर्जन को कोयले की उपमा दी है। कोयला ठण्डा होगा तो हाथ काले करेगा और गर्म होगा तो जलायेगा। आपने कहावत सुनी होगी- 'सांड रे आगे सुं और घोड़ा रे लारे सुं नहीं निकलनो।' सांड के आगे से निकलने पर वह कभी सींग मार सकता है, इसलिए उसके आगे से नहीं निकलना और घोड़ा लात मारता है इसलिए उसके पीछे से नहीं निकलना चाहिये। पर यहाँ दुर्जन के लिए कहा जा रहा है, उसके चारों तरफ से बच कर निकलना चाहिए-"अलं बालस्स संगेण"। दुर्जन खतरनाक होता है जबकि साधु-संत या सज्जन प्रेरणा के शब्द में कहें तो उसका बुरा नहीं मानना चाहिए। भगवान ने छत्तीस बार गौतम स्वामी से कहा तब भी उन्हें बुरा नहीं लगा।

आज सहिष्णुता की कमी के कारण गुरु को भी शिष्य की खलना पर कहते हुए सोचना पड़ता है। कषायमुक्त साधक विरले होते हैं। उन विरलों में गौतमस्वामी थे। भगवान ने जब कभी कहा तो उन्होंने 'तह त्ति' कह कर भगवान के वचनों का आदर किया। दस प्रकार की समाचारी बताई है उसमें एक है तह त्ति अर्थात् गुरु के वचन को तह त्ति कहकर स्वीकार करें। जहाँ आस्था होती है, समर्पण होता है, वहाँ तर्क नहीं तह त्ति होता है। समर्पण में सवाल नहीं होता है और जहाँ सवाल किये जाते हैं वे बेहाल देखे जाते हैं। भगवान ने कहा-"समयं गोयम! मा पमायए।" यह बात गौतमस्वामी के लिए ही नहीं थी, हमारे

लिए भी है तो आपके लिए भी है। समय मात्र का प्रमाद मत करो, यह सभी के लिए है।

समय आपको भी मिल रहा है, ज्ञानियों को भी मिल रहा है। हमारा संमय शुभ कार्यों में जा रहा है तो वह उपयोगी है।

जा जा वच्चई रयणी न सा पडिनियतई।

धम्मं च कुणमाणस्स, सफला जंति राइओ।।

जो-जो रात्रियां बीत रही हैं वे लौट कर नहीं आती। उनकी रात्रियाँ सार्थक हैं जो उसका उपयोग धर्मकार्य में करते हैं। भरत को एक साथ तीन सूचनाएँ मिलीं। भरत दरबार में बैठे थे। एक व्यक्ति आया, जय हो-विजय हो के साथ बधाई दी कि आपके यहाँ पौत्ररत्न की प्राप्ति हुई है। दूसरे ने आकर सूचना दी कि आपकी आयुधशाला में चक्र-रत्न की प्राप्ति हुई है। तीसरे ने कहा- भगवान ऋषभदेव का आगमन हुआ है।

कल्पना करो कभी आपके समक्ष इस तरह की सूचना आये कि नगर में, गांव में संत पधारें हैं और आप सांसारिक शादी, जन्मोत्सव कार्य में व्यस्त हों तो आप किसे प्राथमिकता देंगे? कभी-कभी भक्त कहते हैं कि “महाराज! आप अबार मत पधारो, म्हारे घरे टाणों है। टाणो निपट जाय, फिर मैं आपरी सेवा कखंला।” प्रश्न प्राथमिकता का है। संसारी काम को प्राथमिकता है या आध्यात्मिक वाणी को? ऐसा भी देखा है कि कभी बैठका लेकर घर से रवाना हुए, रास्ते में ग्राहक मिल गया तो बैठका एक तरफ रख देंगे। सोचेंगे पहले ग्राहक को पटा लें, अन्यथा यह दूसरी दुकान चढ़ गया तो ग्राहक टूट जायेगा। महाराज के व्याख्यान में आज नहीं तो कल चले जायेंगे। महाराज चार महीने कहीं जाने वाले नहीं हैं। पर याद रखें, सांसारिक काम कभी पूरे हुए नहीं, होते भी नहीं। एक के बाद एक समस्याएं खड़ी रहती हैं। सांसारिक उलझनें कभी-सुलझने वाली नहीं। जब तक जीना है तब तक सीना है, मगर चतुर वही है जो विवेक की ज्योति को जागृत कर सांसारिक व्यस्तता में भी धर्म को प्राथमिकता देकर जीवन को संवार लेता है। आचार्यश्री एक दृष्टान्त फरमाते हैं। एक घुड़सवार कहीं ग्रामान्तर जा रहा था। गर्मी का मौसम था। उसे प्यास लगी। मार्ग में अरहट चल रहा था। वहाँ गया। कुए में पानी पहले ज्यादा गहरा नहीं होता था, इसलिए अरहट से निकाल लिया जाता। आज तो निरन्तर दोहन से पानी का

स्तर नीचे चला गया है, लेकिन पहले बैल अरहट चलाता, पानी निकल आता था। आज पानी का कितना दुरुपयोग हो रहा है, मुझे कहने की जरूरत नहीं। एक हाथ में झाड़ू है, उधर नल चल रहा है। आपके मन में कभी विचार नहीं आता कि पानी के जीवों की कितनी विराधना हो रही है। यह अधम काम है। शास्त्रकारों ने तो यहाँ तक बताया कि पानी के जीव कई ऐसे हैं जो एक भव करके मोक्ष जायेंगे।

घुड़सवार ने पानी पीया। सोचा, घोड़ा भी प्यासा है, इसे भी पानी पीला दूँ। अरहट में खट-खट की आवाज आती है। खट-खट से घोड़ा चमक जाता है। बार-बार घोड़ा पानी के निकट मुँह लाता, पानी पीने के लिए मुँह आगे करता तो खट-खट की आवाज सुनकर चमक जाता। घुड़सवार ने किसान से कहा- तू यह खट-खट बंद कर। किसान ने बैल को रोका, खट-खट बन्द हुई तो पानी आना भी बंद हो गया। घुड़सवार ने कहा- तू पानी चालू कर। पानी चालू किया तो फिर वही खट-खट। तब किसान ने घुड़सवार से कहा कि ये खट-खट तो ऐसे ही चलती रहेगी, घोड़े को पानी पिलाना है तो पिला दे।

जैसे कुंए से पानी खींचते समय अरहट की खट-खट बंद नहीं होती वैसे ही संसार की खट-खट भी बन्द होने वाली नहीं है। आप संसार के कार्यों के लिए समय निकालते हैं, धर्म-साधना में समय निकाल सकें, तभी जीवन की सार्थकता है।

भरत महाराजा ने उन तीनों सूचनाओं को सुनकर चिन्तन किया कि चक्र तो संहार का सूचक है, पोते का राग संसार में गोते लगाने वाला बनता है, लेकिन प्रभु ऋषभदेव का शीतल सान्निध्य जीवन के लिए सुखद, उज्ज्वल और हितकारी है। इतने बड़े सम्राट् भरत का चिन्तन कितना विशुद्ध रहा, यह चिन्तनीय है। भरत महाराजा जितनी तो व्यस्तता सम्भवतया आपकी नहीं होगी, फिर भी उन्होंने धार्मिक और आध्यात्मिक कार्य को प्राथमिकता दी। इस छोटे से जीवन में अनमोल अवसर को पाकर भी यदि यह जीव पाप कर्म में ही रत रहेगा, कर्म बन्धन के खाते को चालू रखेगा, तो क्या होगा इस जीव का भविष्य? अतः ऐसे उत्तम गुरु, वीतराग वाणी और दुर्लभ मानव जीवन को पाकर हम धर्म के क्षेत्र में पुरुषार्थी बनें, यही समय का सम्यक् नियोजन होगा।

धार्मिक्याएँ हों निर्दोष

श्री सज्जनसिंह मेहता 'साथी'

सामायिक लेना एवं पारना

सामायिक ग्रहण करने एवं पारने की निर्धारित एवं समुचित विधि है। अतः हमें सामायिक विधि से ही ग्रहण करना चाहिये एवं विधि से ही पारना चाहिए। जिन्हें विधि की जानकारी नहीं है, पाठ याद नहीं है, उन्हें पाठों को याद करना चाहिए। विधि की जानकारी रखने वाले भाई-बहिन भी कई बार बिना विधि किये ही केवल वन्दना करके सामायिक ग्रहण कर लेते हैं तथा पारते समय भी विधि नहीं करते हैं, यह उचित नहीं है। सामायिक विधिपूर्वक ग्रहण करना एवं पारना चाहिए। जिन्हें सामायिक के पाठ कंठस्थ नहीं हैं उनकी बात भिन्न है। सांसारिक सभी कार्य विधि से किये जाते हैं तो ही सफलता मिलती है। फिर धार्मिक कार्य अविधि से क्यों? धार्मिक कार्यों में तो विधि अधिक आवश्यक है।

सामायिक के दोष एवं अतिचार

हमें पूर्ण प्रयत्न करना चाहिए कि हमारी सामायिक निर्दोष हो, निरतिचार हो। यह तभी संभव है जब हमें सामायिक के ३२ दोषों एवं पाँच अतिचारों की जानकारी होगी। बरसों से सामायिक करने वाले कई भाई-बहनों को सामायिक के बत्तीस दोषों की पूर्ण जानकारी नहीं होती, तो फिर वे दोषरहित सामायिक करलें यह पूर्ण संभव नहीं है। अतः मैं सामायिक के ३२ दोष कण्ठस्थ करने पर विशेष बल देता हूँ। अत्यन्त संक्षेप में मैं यहाँ इन दोषों का उल्लेख कर रहा हूँ।

मन के 10 दोष

१. अविवेक-सामायिक में मन विचलित नहीं हो, चंचल न हो, इसका पूर्व में ही विवेक रखें। यदि विवेक न रहे और मन चंचल हो तो अविवेक दोष।
२. यशःकीर्ति- यशःकीर्ति प्राप्त करने के भाव से सामायिक करना दोष है।
३. लाभार्थ- सांसारिक लाभ प्राप्ति के भाव से सामायिक करना दोष है।
४. गर्व- अभिमानपूर्वक सामायिक करना या सामायिक करने का अभिमान करना दोष है।
५. भय- भय से सामायिक करना दोष है।

६. निदान- सामायिक के फल के रूप में सांसारिक निदान की भावना करना, प्रतिफल के रूप में कुछ प्राप्त करने की इच्छा करना दोष है।
७. संशय- सामायिक के फल में शंका करना दोष है।
८. रोष- सामायिक में रोष के भाव लाना दोष है।
९. अविनय- विनयभावरहित सामायिक करना दोष है।
१०. अबहुमान- सामायिक के प्रति बहुमान न रखना, सामायिक को बेगार रूप में करना, भारभूत समझकर करना दोष है।

वचन के दस दोष

१. कुवचन- सामायिक में अपशब्द बोलना।
२. सहसाकार- बिना विचारे बोलना।
३. स्वच्छन्द- सामायिक की मर्यादा को भूलकर बोलना।
४. संक्षेप- पाठों को अपूर्ण बोलना, संक्षेप में बोलना।
५. कलह- कलहकारी वचन बोलना।
६. विकथा- चार विकथा करना-स्त्री कथा, भोजन कथा, राजकथा, देश कथा।
७. हास्य- हंसी मजाक करना।
८. अशुद्ध-पाठों का अशुद्ध उच्चारण करना।
९. निरपेक्ष- पाठों का उपेक्षायुक्त आचरण करना।
१०. मुम्मुन-पाठों को स्पष्ट उच्चारित न कर गुणगुनाते हुए बोलना।

काया के बारह दोष

१. कुआसन-अभिमान के आसन से या अन्य कुआसन से बैठना।
२. चलासन-बिना कारण बार-बार आसन बदल कर बैठना।
३. चलदृष्टि- दृष्टि चंचल रखना, इधर-उधर देखना।
४. सावद्य क्रिया- पापकारी कार्यों में लगना।
५. आलम्बन- बिना कारण, दिवाल, खंभे आदि का सहारा लेकर बैठना।
६. आकुंचन प्रसारण- अकारण हाथ-पैरों को संकुचित करना, फैलाना।
७. आलस्य- स्वाध्याय आदि न करके प्रमाद में समय खोना।
८. मोड़न- अंगुलिया चटखाना।
९. मल- शरीर का मल उतारना, नाखून आदि तोड़ना।
१०. विमासन- हथेली पर गाल रखकर, शोक के आसन से बैठना।

99.निद्रा- नींद लेना, ऊँघना।

92.वैयावृत्य- अत्रती से सेवा करवाना।

सामायिक में उपर्युक्त बत्तीस दोषों का त्याग कर, निर्दोष सामायिक साधना करनी चाहिए।

इसी प्रकार सामायिक के पाँच अतिचार हैं जिनसे भी बचना चाहिए- 1. मन की दुष्प्रवृत्ति 2. वचन की दृष्प्रवृत्ति 3. काया की दुष्प्रवृत्ति 4. सामायिक की स्मृति न रहना 5. भूल से सामायिक पूर्ण होने के पूर्व पारना।

सामान्यतया देखा जाता है कि हम सामायिक की संख्या पर अधिक बल देते हैं। अतः निवेदन है कि संख्या के साथ-साथ गुणवत्ता एवं शुद्धता पर भी पूर्ण ध्यान देने का कष्ट करें।

स्वाध्याय करें- सामायिक में कुछ समय स्वाध्याय के लिए अवश्य निकालें। सामायिक का काल मात्र माला, आनुपूर्वी में ही पूर्ण न करें, वरन् स्वाध्याय भी करें। स्वाध्याय से ज्ञान की अभिवृद्धि होगी। स्वाध्याय की प्रवृत्ति न होने से सामायिक में भाई-बहन, श्रावक- श्राविकाएँ विकथा करते हैं, व्यर्थ की चर्चाएँ करते हैं एवं सामायिक के स्वरूप को विकृत करते हैं।

श्रावक व्रतों को ग्रहण करें- सामायिक की साधना तो अव्रतधारी श्रावक भी कर सकते हैं, यदि कहूँ कि सामायिक करने वालों में अव्रत धारी श्रावक-श्राविकाओं (भाई-बहिनों) की बहुलता है तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। गृहस्थ जीवन में रहते हुए यदि हम श्रावक के व्रतों को समझने का प्रयत्न करें एवं थोड़ी सी सावधानी रखें तो श्रावक के व्रतों का पालन इतना कठिन नहीं है जितना सामान्य लोग इन्हें समझते हैं। यदि जिज्ञासापूर्वक समझने का प्रयत्न किया जावे तो बारह व्रतों में से अधिकांश व्रत पालना कठिन नहीं है। कई भाई-बहन ऐसे भी होंगे जो स्थूल रूपसे सभी व्रतों का पालन करते भी हैं, परन्तु व्रत ग्रहण नहीं किये हैं, व्रत ग्रहण करते हुए संकोच करते हैं, डरते हैं, अतः मेरा निवेदन है कि भाई-बहन व्रतों को अच्छी तरह समझें, यदि पालन कर सकते हों तो सभी (बारह) व्रतों को अंगीकार करें। यदि किसी को किन्हीं एक-दो व्रतों के पालन में बाधा अनुभव होती हो, कठिनाई अनुभव होती हो तो उन्हें छोड़कर शेष व्रतों को तो अवश्य अंगीकार करें। मेरी यह मान्यता है कि श्रद्धालु, धर्मनिष्ठ, सद्गृहस्थों के लिए श्रावक व्रतों का पालन आसान है, बहुत अधिक कठिन नहीं है।

धर्मगुरुओं से निवेदन- स्वाध्यायी भाई-बहिनों से तो मैं निवेदन करता ही

रहता हूँ कि वे स्वयं श्रावक-व्रतों को अंगीकार करें एवं पर्युषण पर्व में जहाँ भी जावें श्रावक व्रतों के बारे में समझा कर श्रावक बनने की प्रेरणा प्रदान करें। परन्तु हमारे आराध्य, श्रद्धा के केन्द्र, धर्म गुरु संत-मुनिराजों एवं महासतियों जी म.सा. से मेरा विनयपूर्वक निवेदन है कि वे भी इस दिशा में ठोस, प्रभावशाली एवं कारगर प्रयास करने की अनुकम्पा करें। जिस प्रकार वे भाई-बहिनों को वैराग्य की ओर आकर्षित करते हैं, वैसा ही प्रयास यदि श्रावक-श्राविका बनाने का हो तो अच्छी उपलब्धि संभावित है। कुछ सन्त-सती इस दिशा में पूर्ण जागरूक भी हैं।

तपस्वियों से निवेदन—इन वर्षों में तपस्या के क्षेत्र में अनुपम वृद्धि हुई है। गृहस्थों में भी बहुत तपस्याएँ हो रही हैं, यह बहुत सराहनीय है। जो तपस्याएँ करते हैं वे सभी धन्य हैं। जैन धर्म में धार्मिक क्रियाएँ आडम्बर रहित होती हैं। साधुमार्गी स्थानकवासी परम्परा आडम्बर के विरोध में है। धार्मिक अनुष्ठानों में आडम्बर को स्थान नहीं है। परन्तु गत कुछ वर्षों से इस पवित्र परम्परा में चोर की तरह यह आडम्बर प्रवेश कर रहा है। आडम्बर मीठा विष है। इसने गृहस्थ श्रावक-श्राविकाओं को तो प्रभावित किया ही है, परन्तु हमारी श्रद्धा के केन्द्र पूजनीय संत-मुनिराज एवं महासतियों को भी नहीं छोड़ा है। अतः अभी तो इतना ही निवेदन है कि तपस्या तो खूब हों पर आडम्बर को स्थान न दें तो उत्तम है।

दया-पौषध—तप तो किये जाते हैं, परन्तु भाई-बहिनों में तप के साथ पौषध बहुत कम होते हैं। पौषध के अभाव में तप अपूर्ण रहता है, उपवास नहीं अनशन है, लंघन है। अतः उपवास के साथ पौषध अवश्य होना चाहिये। यदि प्रतिपूर्ण (आठ प्रहर का) पौषध न बन सके तो पाँच प्रहर का ग्यारहवाँ पौषध अथवा दसवाँ पौषध ही करें, पर उपवास के साथ-तप के साथ पौषध को भी स्थान दें।

कुछ वर्षों पूर्व साधुमार्गी-स्थानकवासी परम्परा में दयाव्रत पालन बहुत प्रचलित था, जो इन वर्षों में दिन-दिन लुप्त प्रायः होता जा रहा है। दयाव्रत में संवर में रहते हुए, आस्रव का त्याग कर, छः काया के जीवों की रक्षा करते हुए आहार पानी ग्रहण करने की छूट रहती है। यह व्रत एक दिवस रात्रि पर्यन्त अर्थात् लगभग आठ प्रहर तक पालन किया जाता है। इन दिनों इस व्रत का पालन बहुत कम हो गया है। श्रावक-गण ग्यारह सामायिक पूर्ण कर इस व्रत की आराधना मान लेते हैं, रात्रि संवर नहीं करते हैं। लेकिन बिना रात्रि

संवर के दयाव्रत अपूर्ण है। अतः दयाव्रत की परम्परा को शुद्ध रूप से पुनः जागृत किया जावे।

जैन की पहिचान

१. महामंत्र नवकार पर पूर्ण श्रद्धावान।
२. रात्रि भोजन का त्यागी।
३. सप्त कुव्यसन का त्यागी।
४. पानी छानकर प्रयोग करने वाला।
५. अभिवादन में जय जिनेन्द्र बोलने वाला।

सच्चे जैन की पहिचान के कुछ प्रमुख बोल उपर्युक्त हैं। जैन कुल में जन्म लेकर या जैन धर्म स्वीकार करके ही हमें संतोष नहीं कर लेना चाहिये, वरन् सच्चे जैन बनने का प्रयत्न करना चाहिये। आपस में मिलें तो जय-जिनेन्द्र से अभिवादन करें एवं टेलीफोन पर वार्ता करते समय जय जिनेन्द्र बोलें, हैलो नहीं। जहाँ भी हैलो बोलने का प्रसंग उपस्थित हो वहाँ-हैलो के स्थान पर जय जिनेन्द्र बोलें। जय जिनेन्द्र बोलकर हम जिनेश्वर प्रभु का स्मरण करते हैं, जयकार करते हैं, अतः पुण्य का अर्जन करते हैं और हैलो बोलकर वाणी का दुरुपयोग करते हैं।

-झालामन्ना चौरहा, बड़ी सादड़ी (राज)

प्रतियोगिता का दौर

लोकेश जैन

आज है प्रतियोगिता का दौर सब दौड़ रहे हैं इसकी ओर।।	आध्यात्मिकता घट रही ऐसे। सूखे नदी तालाब जैसे।।
नहीं है धर्म से किसी को डरा सभी हैं इससे बेखबर।।	सोच यही सबको अपनानी। इसको जन-जन तक पहुँचानी।।
घट रही इन्सानियत, मनुष्यता बढ़ रही है कलुषता और पशुता।।	आध्यात्मिकता बिन जीव हैं ऐसे। बिन पानी मृत मीन हैं वैसे।।
भौतिक प्रतियोगिता बढ़ रही है ऐसे। सागर में भरा पानी जैसे।।	‘लोकेश’ यही बात है बतलाता। माने वही जग से तिर पाता।।

*- श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान,
ए-९, बजाज नगर, जयपुर*

आस्रव : एक विवेचन

श्री राजमल सिंघी

जिस प्रकार लोह-चुंबक समीप में पड़े हुए लोहे को खींचता है, उसी प्रकार अज्ञानाधीन होकर आत्मा राग-द्वेष के कारण कर्मों को खींचती है। कर्मों के आगमन की प्रक्रिया को, आने के मार्ग को आस्रव कहते हैं।

मूल रूप से आत्मा के आठ गुण हैं- १. अनन्त ज्ञान २. अनन्त दर्शन ३. अव्याबाध सुख ४. क्षायिक समकित ५. अनन्त स्थिति (अटल अवगाहना) ६. अरूपीपना ७. अगुरुलघु ८. अनन्त शक्ति। किन्तु आत्मा अज्ञान के कारण जिन कर्म पुद्गलों को अपनी ओर खींचती है, आकर्षित करती है उनके कारण आत्मा के गुणों पर आवरण आ जाता है, और आत्मा के गुण ढक जाते हैं।

संसार में जीव मन, वचन अथवा काया से जो भी प्रवृत्ति करता है, वे सभी प्रवृत्तियाँ शुभ अथवा अशुभ होती हैं। मन, वचन, काया की प्रवृत्तियाँ आस्रव की मार्ग हैं। ये प्रवृत्तियाँ शुभ हों तो पुण्य अर्थात् पुण्यास्रव और अशुभ (खराब) हों तो पाप अर्थात् पापास्रव होता है।

अहिंसा, सत्य, अस्तेय (चोरी नहीं करना), ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, देव-गुरु भक्ति, दया, दान गुणों एवं गुणीजनों की प्रशंसा, अनुकंपा, ज्ञान-प्राप्ति का प्रयत्न करना, क्षमा, मृदुता, नम्रता, धीरज धारण करना, जीव-दया, जीवों की रक्षा, शीलपालन इत्यादि पुण्यास्रव के निमित्त हैं, जबकि हिंसा, झूठ, चोरी, अब्रह्म, दुराचार, व्यभिचार, परिग्रह, कठोर-अपशब्द बोलना, ज्ञान एवं ज्ञानी की आशातना करना, क्रोध, मान, माया, लोभ कषायों का सेवन, परनिन्दा, आत्मप्रशंसा, क्रूरता, देव-गुरु-धर्म का अवर्णवाद, मांसाहार, शराब, मक्खन, शहद का सेवन, रात्रि-भोजन, अभक्ष्य-भक्षण, जमीकन्द-भक्षण, मिथ्यात्व आदि पापास्रव के निमित्त हैं। मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय आदि मुख्य रूप से आस्रव के कारण हैं।

आठ कर्मों के आस्रव

(1)-(2) ज्ञानावरणीय एवं दर्शनावरणीय कर्मों के कारण- ज्ञान-ज्ञानी के प्रति प्रदोष, निह्नव, मात्सर्य, अंतराय, अनादर, उपघात आदि के कारण ज्ञानावरणीय एवं इसी प्रकार दर्शन तथा दर्शन के साधक के प्रति इसी प्रकार की वृत्तियों से दर्शनावरणीय कर्म बंधते हैं। ज्ञान एवं ज्ञानी की बुराई करने, ईर्ष्या करने, पुस्तकादि का मल-मूत्र, कफ आदि के लिए उपयोग करने आदि से

ज्ञानावरणीय-दर्शनावरणीय कर्म का बंधन होता है।

(3) **सुख-दुःख रूपी साता-असाता वेदनीय कर्म के कारण-** जीवों को दुःख-पीड़ा पहुंचाना, उनका वध करना, शोक-संताप एवं आक्रंदन करना, अन्यो को दुःखी करना इत्यादि कारणों से असाता वेदनीय कर्म को आमंत्रित करके जीव दुःखी होते हैं। सर्व जीवों की दया-करुणा का चिंतन करना, जीवों की रक्षा करना, वैयावच्च, सुपात्र दान, क्षमादि धारण करना, देशविरति तथा तपश्चर्या, शौचादि धर्म का पालन करना, इत्यादि कारणों से तथा साता वेदनीय कर्मों के निमित्तों का पालन करने से जीव सुख का अनुभव करते हैं।

(4) **मोहनीय कर्मास्रव के कारण-** सर्वज्ञ, केवली, श्रुत, चतुर्विध संघ, धर्म, देवता आदि की निंदा या अवर्णवाद करने से एवं जो भगवान नहीं उनको भगवान मानने, तीर्थकरों का अपमान करने, उनकी आशातना करने, शास्त्र-सिद्धांत के विपरीत प्ररूपणा करने से दर्शन मोहनीय कर्म का बंधन होता है। तीव्र कषाय के कारण चारित्र मोहनीय कर्म का बंधन होता है। अत्यन्त क्रोध करना, अभिमान में चूर रहना, छल-कपट-माया करना, तीव्र लोभ की प्रवृत्ति रखना, नाटक, सिनेमा, टी.वी. देखना, मौज-शौक, इन्द्रिय-विषय सुखों में लीन रहना, ईर्ष्या, शोक, दुर्गुणा, मत्सर बुद्धि, दुराचार, व्यभिचार, बलात्कार, परस्त्रीगमन, वैषयिक वासना इत्यादि कारणों से चारित्र मोहनीय कर्म का बंधन होता है।

(5) **आयुष्य कर्म बंधन के कारण-** अत्यन्त आरंभ समारंभ-हिंसादि करने से, अति परिग्रह-संग्रह करने से, तीव्र कषायों के कारण नरक गति के आयुष्य कर्म का बंधन होता है। छल-प्रपंच, मायावी प्रवृत्ति करने से, ईर्ष्या, वक्रता, दंभ, आर्त्तध्यान में चिंता करने से, लोभ करने से, अति आहार करने से, जीव तिर्यंच गति का आयुष्य बांधकर पशु-पक्षी बनता है। आरंभ-समारंभ अत्यन्त कम हो, स्वभाव में नम्रता और सरलता हो, धर्मध्यान प्रिय हो, दानादि पुण्य कार्य करने वाला हो, अन्याय अनीति नहीं करने वाला हो तो जीव मनुष्य गति प्राप्त करता है। चारित्र पालने वाला संयमी जीव, शुभ ध्यान का साधक, गुणानुरागी, साधु-साध्वी की भक्ति करने वाला आराधक व्यक्ति देव गति का आयुष्य बांधता है। अत्यन्त शुद्ध संयम, तप-ध्यान करने से एवं बीस स्थानक की आराधना से मनुष्य तीर्थकर नाम कर्म बांधता है।

(6) **शुभाशुभ नाम कर्म के आस्रव के कारण-** मन, वचन, काया की वक्रता, किसी को ठगना, किसी की चुगली करना, अंगोपांगों को छेदना, निंदा-विकथा करना, असभ्यता से बोलना, आक्रोश-उपघात करना, उत्पात करना, दावानल

सुलगाणा, धर्म-स्थानों का नाश करना इत्यादि दुष्ट स्वाभावादि वाले जीव अशुभ नाम कर्म को आमंत्रित करते हैं और इनके विपरीत अच्छी प्रवृत्ति करने से शुभनाम कर्म का बंधन होता है।

(7) **गोत्र कर्म के निमित्त**— किसी की निन्दा करना एवं स्वयं की प्रशंसा करना, हंसी-ठट्ठा करना, दूसरे के गुणों को छिपाना एवं अपने गुण प्रकट करना, अहंभाव आदि के कारण तथा जाति, रूप, कुल, धन, तप, श्रुत लाभ आदि का मद-अभिमान करना इनसे नीच गोत्र कर्म का बंधन होता है एवं इनके विपरीत कारणों से विनय, नम्रता, निरभिमानता, मृदुता, गुण-स्तुति, स्वनिन्दा आदि कारणों से उच्च गोत्र कर्म का बंधन होता है।

(8) **अंतराय कर्म के आस्रव निमित्त**— दानादि में विघ्न करने से, धर्माराधना में विघ्न करने से, भोगोपभोगादि के निमित्तों में अन्वों के अंतराय उत्पन्न करने इत्यादि से अंतराय कर्म का बंधन होता है।

इस प्रकार उपर्युक्त प्रवृत्तियाँ जो मनुष्य अपने जीवन में करता है उसके द्वारा सम्बद्ध कर्मों का अवश्य बंधन होता है। आठ कर्मबंध के ये सभी निमित्त हैं, आस्रव हैं।

पाँच आस्रव

यों देखा जाय तो सैकड़ों, लाखों आस्रव के निमित्त हैं, किन्तु उन सबको संक्षिप्त स्वरूप में मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय एवं योग विभागों में रखा जाता है। कौनसी प्रवृत्ति अथवा क्रिया से कौनसे कर्मों का बंधन होता है, उसका पूर्ण ध्यान रखना आवश्यक है। सच्चे साधक की साधना तभी शक्य हो सकेगी, जब जीव सांसारिक प्रलोभनों से दूर रहेगा।

मिथ्यात्व आस्रव—कर्मों के बंधन का मूल कारण मिथ्यात्व है। मिथ्यात्व अर्थात् सत्य से विपरीत। जिस वस्तु का जो स्वरूप हो उसको उसी प्रकार न मानते हुए विपरीत रूप से मानना ही मिथ्यात्व है। मिथ्यात्व के पाँच प्रकार हैं— १. **आभिग्रहिक**— दुराग्रह, कदाग्रह से अविवेकी, पाखंडी तथा आज के भगवान बनकर बैठे हुए व्यक्तियों की वृत्ति मिथ्यात्व से भरी हुई होती है २. **अनाभिग्रहिक**— सभी भगवान एक ही हैं। किसी भी भगवान को मानें तो चलेगा— केवल उनके नाम भिन्न हैं। सभी धर्म एक ही हैं। सभी गुरु एक ही हैं— जिनको चाहें उनको मानें। मैं तो उदार एवं विशाल दृष्टि वाला हूँ। अमुक भगवान को ही मानना, अमुक धर्म ही मानना, ऐसी संकुचित वृत्ति वाला हूँ। अतः मैं तो सभी को भगवान मानता हूँ—इत्यादि ऐसी वृत्ति रखना अनाभिग्रहिक मिथ्यात्व है। ऐसे मिथ्या-विपरीत ज्ञान से जीव कर्मों का बंधन करता है। ३.

आभिनवेशिक-सत्य-असत्य, तत्व-अतत्त्व को जानते हुए भी, दुराग्रही बुद्धि के कारण, सत्य को छुपाकर, असत्य को ही पकड़ कर रखना-ऐसा कदाग्रह करना आभिनवेशिक मिथ्यात्व कहलाता है। ४. सांशयिक मिथ्यात्व- मोक्ष, आत्मा, देव, गुरु धर्म आदि तत्त्वों में संशय-शंका रखना कि ये हैं या नहीं। शंका को पूर्वाग्रह से पकड़कर रखना सांशयिक मिथ्यात्व है। ५. अनाभोगिक मिथ्यात्व- वस्तु के तत्त्व के अज्ञान के कारण, एकेन्द्रियादि जीवों को जो मिथ्यात्व होता है, वह इस प्रकार का मिथ्यात्व कहलाता है।

अविरति (अव्रत) आस्रव- व्रत या विरति धर्म की प्रतिज्ञा नहीं करने वाला जीव भी सतत पाप कर्म बांधता है। हिंसा, झूठ, चोरी, अब्रह्म, परिग्रह आदि अव्रत हैं, पाप हैं। इन पापों का विपाक भोगना ही पड़ता है। कहा भी गया है कि हंसते हुए बांधे गए पाप-कर्म रोते हुए भी नहीं छूट सकते। हिंसा करके प्रसन्न होने वाला यह नहीं सोचता, नहीं जानता कि उसको नरक गति के कितने दुःख सहन करने पड़ेंगे। एक झूठ के लिए अन्य कई झूठ बोलने पड़ते हैं, छोटे से पापी पेट के लिए कितनी चोरियाँ करता है। मन की वासना की पूर्ति के लिए, क्षणिक वैषयिक सुख के लिए कैसे-कैसे बलात्कार, दुराचार, व्यभिचार सेवन किये जाते हैं। मोह-ममत्व एवं मूर्च्छा के कारण जीव कितना अधिक परिग्रह करता है। आज दुनियाँ में लाखों कल-कारखाने हैं, इन सबमें जो वस्तुएँ तैयार होती हैं, उन सभी में हिंसा होती है और इन कारखानों में हिंसा से बनी हुई सभी वस्तुओं का पाप इन वस्तुओं के उपयोग करने वालों को भी अवश्य लगता है। किन्तु यदि प्रतिज्ञा करली जावे कि अमुक वस्तु का उपयोग मैं नहीं करूँगा तो ऐसे व्यक्ति को उतना पाप तो नहीं लगेगा। बस, पाप नहीं करने की प्रतिज्ञा करना ही विरति धर्म है। यह विरति धर्म दो प्रकार का है- पहला सर्वविरति-अर्थात् आजीवन विरति रूप साधु धर्म एवं दूसरा देश-विरति-देश अर्थात् अल्प प्रमाण में- थोड़े प्रमाण में विरतिरूप श्रावक धर्म।

उपवास, आयंबिल इत्यादि किया जाय, किन्तु पच्वक्खाण न लिया जाये तो विशेष फल नहीं मिलता। वस्तु का त्याग किया जावे, या पाप-प्रवृत्ति न की जाय, किन्तु व्रत-नियम लेकर पच्वक्खाण स्वीकार किया जाय तब ही उस पाप के दोष से बचा जा सकता है, अन्यथा पाप लगता ही है।

जिस जीव को जितनी इन्द्रियाँ मिली हैं, वह उन्हीं में आसक्त है। वह जीव उन्हीं में पागल बना हुआ है। क्षणिक सुखों के पीछे पड़कर जीव कितने ही पापों को आमंत्रित करता है और फिर उनकी सजा नरक-तिर्यच आदि गतियों में भोगता है। अतः इन्द्रियों का सुदपयोग ही करना चाहिए। हमको इन्द्रियों का

गुलाम नहीं होना चाहिए। राग और द्वेष ये मन की दो पासे हैं। यह कभी राग में हंसाता है, खुश करता है, तो कभी भयंकर द्वेष में दुश्मन बनाता है। हंसाना, रुलाना इत्यादि सभी मन के ही काम हैं।

अव्रत (अविरति) के पापास्रव के मार्ग से बचने के लिए तीर्थंकर भगवन्तो ने विरति धर्म का मार्ग प्ररूपित किया है। अतः विरति धर्म अपनाना ही हितकर है।

प्रमाद आस्रव- आत्म-स्वरूप का विस्मरण प्रमाद है। प्रमाद के कारण व्यक्ति मद निद्रा, विषय-कषाय आदि में उलझा रहता है और कर्मों का आस्रव करता रहता है। जाति, कुल, बल, रूप, तप; श्रुत, लाभ एवं ऐश्वर्य ये आठ मद अशुभ पाप कर्म बंधवाते हैं। निद्रा तो ऐसा प्रमाद है कि इसमें पड़े रहने का ही मन होता है। पढ़ते समय, नवकार गिनते समय, व्याख्यान सुनते समय भी कइयों को नींद आती है। विकथा भी प्रमाद है। फिजूल की गणें मारना, स्त्री संबंधी कथा, भोजन संबंधी चर्चा, राज्य एवं देश की कथा भी व्यर्थ की हैं, जिनसे कुछ मिलने वाला नहीं है। अतः इन पापों से भी बचना हितकर है। विषय के बारे में पूर्व में विचार किया गया है।

कषाय आस्रव- क्रोध, मान, माया एवं लोभ कषाय के कारण जीव कर्मों को खींचता है और फलस्वरूप अनन्त कर्मों का बंधन होता है। दशवैकालिक सूत्र में चारों कषायों के बारे में कहा गया है कि क्रोध प्रीति या प्रेम-संबंध का नाश करता है, मान विनय एवं नम्रता का नाश करता है, माया सरलता का नाश करती है और लोभ तो सर्वनाश को आमंत्रित करता है।

योग आस्रव- मन, वचन एवं काया की प्रवृत्ति को योग कहते हैं। कषाय युक्त योग कर्म-आस्रव का प्रमुख कारण है। शुभ योग से पुण्य आस्रव होता है। शुभ योग से पुण्य प्रकृति का एवं अशुभयोग से पाप प्रकृति का आस्रव होता है। शुभयोग से आपेक्षिक दृष्टि से अशुभयोग का संवर भी होता है तथा निर्जरा में भी वह कारण बनता है।

अंत में यही कहना पड़ेगा कि आस्रव सर्वथा छोड़ने योग्य है, क्योंकि यह भव अर्थात् संसार बढ़ाने का मुख्य कारण है। अतः पाप के निमित्त आस्रवों से तो बचना ही पड़ेगा। आस्रवों को छोड़ने का पूर्ण प्रयत्न करना पड़ेगा।

*-सेवानिवृत्त संयुक्त रजिस्ट्रार, सहकारिता
बी-६१, सेठी कॉलोनी, जयपुर-४*

संशोधन- जिनवाणी जुलाई २००३ में प्रकाशित चातुर्मास-सूची में पृष्ठ ५१ पर श्री पदमचन्द्र जे.कोठारी, अहमदाबाद का निवास का फोन नं. ६४४३८१५ के स्थान पर ६६४३८१५ पढ़ा जावे।

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

★ श्री धर्मचन्द्र जैन

प्र.21 क्षयोपशम समकित से जीव कहाँ-कहाँ जा सकता है?

उत्तर- क्षयोपशम समकित वाला जीव परिणामों की विशुद्धि होने पर उपशम समकित अथवा क्षायिक समकित दोनों में से किसी एक को प्राप्त कर सकता है। क्षायिक समकित प्राप्त करने वाला क्षायिक के पहले वेदक समकित को भी प्राप्त करता है। परिणामों में संक्लेश (कषाय भाव की वृद्धि) होने पर मिश्र गुणस्थान अथवा मिथ्यात्व गुणस्थान में भी जा सकता है, किन्तु क्षयोपशम समकित से जीव सीधा सास्वादन गुणस्थान में नहीं जा सकता है।

प्र.22 क्षयोपशम समकित से जीव सीधा सास्वादन गुणस्थान में क्यों नहीं जा सकता?

उत्तर सास्वादन गुणस्थान वही जीव प्राप्त कर सकता है, जिसके अनन्तानुबंधी कषाय का उदय हो, किन्तु दर्शन मोहनीय की तीनों प्रकृतियों का उदय न हो कर उपशम हो, ऐसी स्थिति क्षयोपशम समकित वाला जीव सास्वादन गुणस्थान प्राप्त नहीं कर पाता है। उपशम समकित से नीचे गिरने वाला जीव ही सास्वादन समकित प्राप्त कर सकता है, अन्य नहीं।

प्र.23 वेदक समकित किसे कहते हैं?

उत्तर क्षयोपशम समकित से क्षायिक समकित प्राप्त करते समय मोहनीय का अन्तिम समय का जो वेदन होता है, उसे वेदक समकित कहते हैं। यद्यपि कुछ लोग उपशम वेदक, क्षयोपशम वेदक तथा क्षायिक वेदक इस तरह से वेदक समकित के तीन प्रकार मानते हैं, किन्तु वेदक समकित से आशय क्षायिक वेदक ही मानना उपयुक्त लगता है। वेदक समकित की स्थिति जघन्य, उत्कृष्ट दोनों ही एक समय की होती है। इसमें गुणस्थान चार से सात तक संभव है।

प्र.24 क्षयोपशम समकित की स्थिति कितनी होती है?

उत्तर क्षयोपशम समकित की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त तथा उत्कृष्ट ६६ सागरोपम झाड़ेरी होती है।

प्र.25 क्षयोपशम समकित कितनी बार प्राप्त हो सकती है?

उत्तर क्षयोपशम समकित एक भव में जघन्य एक बार, उत्कृष्ट पृथक्त्व हजार बार (२००० से ६००० बार तक) प्राप्त हो सकती है, जबकि अनेक भवों में जघन्य दो बार तथा उत्कृष्ट असंख्यात बार प्राप्त होती है। असंख्यात बार की गिनती असंख्यात भवों में संभव है।

प्र.26 दर्शन मोहनीय की तीन प्रकृतियों में देशघाति व सर्वघाति प्रकृतियां कौन-कौन सी हैं?

उत्तर जो कर्म प्रकृति संबंधित गुण का पूर्ण घात करे उसे सर्वघाति तथा आंशिक घात करे उसे देश घाति कहते हैं। मिथ्यात्व मोहनीय व मिश्र मोहनीय सर्वघाति प्रकृतियां कहलाती हैं, जबकि समकित मोहनीय देश घाति प्रकृति है।

प्र.27 गुणस्थान द्वार के थोकड़े में चौथे गुणस्थान के लक्षण में पहले जो ६ भांगे बने हुए थे, उनमें परिवर्तन की आवश्यकता क्यों हुई?

उत्तर १. पहले के ६ भंगों में १,२,३ भंग इन तीनों को क्षयोपशम समकित का भंग बतलाया है, क्षयोपशम समकित में समकित मोहनीय का विपाकोदय नियमा होता है, किन्तु इन तीनों भंगों में समकित मोहनीय का उदय नहीं होकर उपशम बतलाया है।

२. चौथा, पाँचवाँ भंग क्षयोपशम वेदक का बतलाया है, जबकि क्षयोपशम वेदक नाम उपलब्ध ही नहीं होता है, क्षयोपशम का पर्यायवाची नाम वेदक कहलाता है।

३. दूसरा, तीसरा व पाँचवाँ ये तीनों भंग तो किसी भी अपेक्षा से जीवों में संभव ही नहीं है। मिथ्यात्व का क्षय होने पर मिश्र मोहनीय का क्षयोपशम व समकित मोहनीय का वेदन रहता है। बाद में उसका भी क्षय हो जाता है। अतः ५ या ६ प्रकृतियों के क्षय होने पर २ अथवा १ प्रकृति के उपशम की कोई संभावना ही नहीं है।

इन सब बाधाओं का निराकरण करने हेतु कर्म-ग्रन्थों के आधार से नवीन भंग बनाने की आवश्यकता प्रतीत हुई।

प्र.28 क्षयोपशम समकित का मौलिक भंग कौनसा है?

उत्तर क्षयोपशम समकित का मौलिक भंग- ६ का क्षयोपशम १ का उदय है। ६ से तात्पर्य- अनन्तानुबंधी चौक, मिथ्यात्व मोहनीय तथा मिश्र मोहनीय से है। इन छः प्रकृतियों का क्षयोपशम अर्थात् प्रदेशोदय होता है, किन्तु विपाकोदय नहीं होता है।

१ का उदय से तात्पर्य समकित मोहनीय के विपाकोदय होने से है। इस

भंग की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त तथा उत्कृष्ट ६६ सागरोपम झाड़ेरी है।

यह जीव के विकास की आधार भूमि है, जहाँ पुरुषार्थ कर जीव निरन्तर आगे बढ़ता रहता है। मिथ्यात्व मोहनीय के क्षय अथवा उपशम के पहले जीव को अनन्तानुबंधी चौक का उपशम या क्षय करना होता है। उत्तराध्ययन सूत्र के २६वें अध्ययन के प्रथम बोल में भी इसका संकेत किया गया है।

दबाना 'उपशम' है और पूरी तरह हटा देना, मिटा देना या समाप्त कर देना, 'क्षय' है। दबाई हुई प्रकृति अन्तर्मुहूर्त के पश्चात् उदय में आती है। क्योंकि उपशम अन्तर्मुहूर्त से अधिक का हो ही नहीं पाता है। यदि मिथ्यात्व अथवा मिश्र मोहनीय का उदय हो तो समकित गुण विलीन हो जाता है। पुनः मिथ्यात्व या मिश्र गुणस्थान में चला जाता है। अन्यथा समकित मोहनीय का विपाकोदय प्रारंभ हो जाता है, और उपशम या क्षय के पूर्व तक मिथ्यात्वमोह व मिश्रमोहनीय के सर्वघाति अंश क्षीण होकर देशघाति अंश में संक्रमित होते रहते हैं। उन दोनों का प्रदेशोदय भी चलता रहता है, इसी का नाम क्षयोपशम समकित है, यह चौथे से लेकर सातवें गुणस्थान तक पायी जाती है।

प्र.29 क्षयोपशम समकित के अन्य भंग किस आधार से बनते हैं?

उत्तर क्षयोपशम समकित के कुल ८ भंग बनते हैं। उनमें १ भंग मौलिक, ४ भंग द्वितीयोपशम प्राप्ति की प्रक्रिया में तथा ३ भंग क्षायिक समकित प्राप्ति की प्रक्रिया में बनते हैं।

प्र.30 द्वितीयोपशम प्राप्ति की प्रक्रिया में क्षयोपशम समकित के कौन-कौन से भंग बनते हैं?

उत्तर द्वितीयोपशम (उपशम श्रेणी युक्त उपशम समकित) प्राप्ति की प्रक्रिया में निम्न चार भंग बनते हैं-

पहला भंग-चार का उपशम, २ का क्षयोपशम, १ का वेदन- इनमें अनन्तानुबंधी चौक का उपशम होता है, मिथ्यात्व तथा मिश्र मोहनीय का क्षयोपशम अर्थात् प्रदेशोदय रहता है तथा १ समकित मोहनीय का विपाकोदय रहता है। इस भंग में गुणस्थान ४ से ७ तक पाये जाते हैं तथा इसकी स्थिति जघन्य, उत्कृष्ट दोनों ही अन्तर्मुहूर्त की होती है।

दूसरा भंग- ६ का उपशम, १ का वेदन- पहले भंग में मिथ्यात्व व मिश्र मोहनीय का जो प्रदेशोदय विद्यमान था, उसे इस भंग में उपशम

के रूप में परिवर्तित कर दिया जाता है। समकित्त मोहनीय का उदय पूर्ववत् बना रहता है। इसमें गुणस्थान छठा, सातवाँ ही होता है तथा इस भंग की स्थिति भी जघन्य, उत्कृष्ट दोनों ही अन्तर्मुहूर्त की होती है।

तीसरा भंग- ४ की विसंयोजना, २ का क्षयोपशम, १ का वेदन-जिन्होंने अनन्तानुबंधी चौक का अस्थायी क्षय कर दिया है, यह प्रकृति सत्ता में भी नहीं है, किन्तु मिथ्यात्व व मिश्र मोहनीय का प्रदेशोदय बना हुआ है तथा समकित्त मोहनीय का विपाकोदय चल रहा है, ऐसे जीवों को यह भंग प्राप्त होता है। इसमें गुणस्थान ४ से ७ तक संभव है तथा इस भंग वाले जीवों की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त तथा उत्कृष्ट ६६ सागरोपम झाङ्गेरी होती है।

चौथा भंग- ४ की विसंयोजना, २ का उपशम, १ का वेदन- तीसरे व चौथे भंग में अन्तर यह है कि तीसरे भंग में तो मिथ्यात्व व मिश्र मोहनीय का क्षयोपशम (प्रदेशोदय) था, जबकि इस चौथे भंग में इन दोनों प्रकृतियों का उपशम (न प्रदेशोदय, न विपाकोदय, किन्तु कर्म सत्ता में स्थित) रहता है।

इस चौथे भंग की स्थिति जघन्य तथा उत्कृष्ट दोनों ही अन्तर्मुहूर्त होती है। जघन्य से उत्कृष्ट का अन्तर्मुहूर्त बड़ा समझना चाहिये। इसमें गुणस्थान छठा-सातवाँ ही संभव है।

द्वितीयोपशम प्राप्ति की प्रक्रिया के उक्त चारों भंगों के संबंध में यह बात विशेष ध्यान रखनी चाहिए कि ये भंग ऐसे जीवों में पाये जाते हैं, जो वर्तमान में तो क्षयोपशम समकित्त में हैं, किन्तु जो आगे उपशम श्रेणी प्राप्त करने वाले हैं अर्थात् क्षयोपशम समकित्त और उपशम श्रेणी के बीच में बनने वाली अवस्थाओं के आधार पर उक्त चार भंग बनते हैं।

-रजिस्ट्रार

अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

(क्रमशः-२)

सामायिक से लाभ

६. सामायिक से चित्त में अपूर्व शांति का लाभ होता है।
७. सामायिक में एक स्थान पर आसन-स्थिरता के कारण कायक्लेश तप का लाभ होता है।
८. सामायिक से आधि, व्याधि, उपाधि से मुक्ति मिलती है और समाधि का लाभ होता है।
९. सामायिक में आत्मानुभव (आत्म-पहिचान) से देह और आत्मा भिन्न-भिन्न हैं, ऐसे भेद ज्ञान का अनुभव होता है।

संकलन-श्री चेतनप्रकाश इंगरवाल, बैंगलोर

मनुजता अमर करे इन्सान

(तर्ज-देख तेरे संसार...)

डॉ. प्रकाश कुमार जैन

विकल पुरुषार्थ

अपनी कमाई आप कमाकर,
करता फिरे गुमान,
मनुजता हारे यों इन्सान...।।टेरे।।
सोचे काम सफल नहीं होते,
कर्म स्रोत जो रीते होते।
आर्तध्यान से बांधे फिर क्यों,
नये कर्मों के मुकाम।।१।।
जन्म लिया तो मरण बनेगा,
कैसा ठिकाना? कहाँ मिलेगा?
आज की छोड़ी कल की चिंता,
क्यों करता पुनवान?।।२।।
रक्तिम देह भी नश्वर जानो,
पोषण से भी टिके ना मानो।
व्यर्थ कमाई, खूब खिलाई,
रहा न तन बलवान।।३।।
देह बली पाऊँ जीव आशा,
नर-चिंतन तो सुख अभिलाषा।
वेद-व्यथा में पीड़ा पाकर,
खोया सुख का भान।।४।।

अविकल पुरुषार्थ

अपनी कमाई आप कमाकर,
ना करता जो गुमान।
मनुजता ना हारे इन्सान...।।टेरे।।
सोचे काम सफल ही होते,
समता रस जब धुलमिल होते।
धर्मध्यान-शुभध्यान में रमकर,
पाए आत्म निधान।।१।।
जन्म-मरण तो कर्म-गति है,
सम्यक् शरण ही मोक्ष मति है।
सद्गुरु चरण मिले तो होवे,
भव - भव से उत्थान।।२।।
देह भी नश्वर, मन भी नश्वर,
धर्म-सौख्य है सदा अनश्वर।
भव्य-भावना चित्त रमाकर,
पा लें सौख्य निधान।।३।।
बलशाली देवों को जानो,
इन्द्रशक्ति भी अमर ना मानो।
संयम-शील की तप महत्ता को,
नमते इन्द्र महान्।।४।।

सकल पुरुषार्थ

कहे "जिनवाणी" पावन धारा, तोड़-तोड़ बेड़ी भवकाश,
आत्म अनुशासन से सुरभित, कर ले भव जयकार।
मनुजता अमर करे इन्सान, मनुजता अमर करे इन्सान।।

-श्री हॉस्पिटल, बदनावर (घारे) म.प्र.

दशवैकालिक सूत्र : दशम अध्ययन

डॉ. अमृतलाल गांधी

दशवैकालिक सूत्र के दसवें अध्ययन का नाम 'स भिक्खू' है। इसके दो अर्थ हैं- १. 'सद्भिक्खु' अर्थात् श्रेष्ठ साधु और २. इस अध्ययन में वर्णित गुणों से जो युक्त है 'वही भिक्खु' माना जाय। केवल भिक्षा मांगने वाला भिक्खु नहीं, अपितु अहिंसक जीवन के निर्वाह के उद्देश्य से जो भिक्षा ग्रहण करता है, वह भिक्खु है। यही इस अध्ययन का प्रतिपाद्य विषय है।

वस्तुतः यह अध्ययन दशवैकालिक सूत्र का उपसंहार है। पूर्ववर्ती नौ अध्ययनों में जो आचार-गोचर का वर्णन किया गया है, उनका पालन करने वाला ही भिक्खु कहलाने का अधिकारी है। अतः दशवैकालिक सूत्र का सार इस अध्ययन में समाविष्ट है। उत्तराध्ययन सूत्र के पन्द्रहवें अध्ययन का शीर्षक भी यही है और उसके सोलह श्लोकों में भी सद्भिक्खु अर्थात् सच्चे भिक्खु के लक्षणों का इसी प्रकार विवेचन किया गया है। सूत्रकृतांग के सोलहवें अध्ययन के अनुसार, जो अहंकार रहित, अदीन, दान्त, स्थितात्मा और अध्यात्म योग से संयम को शुद्ध रखने वाला है वही सच्चा भिक्खु है।

इस अध्ययन के अनुसार सच्चा भिक्खु वेष से नहीं, गुणों से पहचाना जाता है। जो वीतराग की आज्ञा से दीक्षा ग्रहण कर जिनवचनों में सदा समाधि-युक्त एवं स्वस्थचित्त रहता है, जो स्त्रियों के मोहाधीन नहीं होता और त्यागे हुए धन, धान्य एवं भोगों को फिर ग्रहण करना नहीं चाहता, वह सच्चा भिक्खु है। जो पृथ्वी भूमि को स्वयं खोदे नहीं, खुदवाये नहीं, कूप, तालाब, नदी और नल आदि का पानी पीता नहीं, पिलाता नहीं, कोयला, बिजली एवं गैस आदि की अग्नि को जलावे नहीं और जलवाये नहीं वह भिक्खु है। जैन साधु स्वयं आहार नहीं पकाता और न ही अपने लिये बने आहार का सेवन करता है, क्योंकि भोजन पकाने में अनेक जीवों का प्रत्यक्ष वध होता है। इस प्रकार के नियमों का पालन करने वाला ही सच्चा भिक्खु है।

जो वर्तमान शासनाधिपति भगवान महावीर के वचनों में रुचि और श्रद्धा करता और छः काय के जीवों को आत्मवत् समझता है। जो पाँच महाव्रतों का पालन करता हुआ पाँच इन्द्रियों के विषयों तथा मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय और अशुभ योग रूप आस्रवों का निरोध करता है, वह भिक्खु है। जो क्रोध, मान, माया और लोभ का परित्याग करता है, वही भिक्खु

है। जो मुमुक्षु अशुभ योग को रोककर शुभ में और शुभ में शुद्ध की ओर बढ़ता है और निर्दोष तप द्वारा पूर्व संचित कर्मों का क्षय करता है, वही सच्चा भिक्षु है। जो साधु कांटों की तरह चुभने वाले आक्रोश वचन और तर्जना को शान्त मन से सहन कर लेता है और सुख दुःख को समान भाव से सह लेता है, वही सच्चा भिक्षु है। कोई गाली दे, लकड़ी आदि से पीटे या शस्त्र से अंगादि का छेदन करे, तब भी पृथ्वी के समान सहनशील रहे, छेदन-भेदन या पूजन में रागद्वेष नहीं करे, तप का निदान नहीं करे और फल की आशंका से रहित हो, वह भिक्षु कहलाता है। जो शरीर से भूख-प्यास आदि परीषहों को पराजित करता और जन्म-मरण को भयंकर जानकर तो अपनी आत्मा का भवसागर से उद्धार कर लेता तथा श्रमण धर्म के शुद्ध तप में रत रहता है, वही भिक्षु है।

आत्मार्थी साधक खाने के लिये नहीं जीता, वह शरीर टिकाने और संयम यात्रा चलाने के लिये आहार करता है। ऋद्धि, सत्कार एवं पूजा का परित्याग कर वह स्थित आत्मा भिक्षु कहाता है। पद्यानुवाद में आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. ने कहा है-

ना जाति गर्व, ना रूप गर्व, ना लाम तथा श्रुत गर्व करे।

जो धर्म ध्यान रत तज सब मद, जग में उसको ही भिक्षु कहे।।

अंत में कहा है कि कल्याण मार्ग में जिसकी आत्मा सदा स्थित है, ऐसा भिक्षु मल-मूत्रादि भर, अस्थायी, इस शरीर पिंड का नित्य परित्याग करता है, ममता का वर्जन करता है। वह जन्म-मरण के बंधनों को काटकर जहाँ से फिर लौटकर नहीं आवे, उस अपुनर्गति वाले स्थान को प्राप्त करता है अर्थात् आवागमन के चक्कर से मुक्त हो जाता है। इसे संस्कृत में इस प्रकार कहा है- 'यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम।।' (क्रमशः)

मुक्तक मुक्ता

दिलीप धींग

ध्यान

स्वाध्याय

अस्त होते सूरज को भी प्रणाम कीजिये, अज्ञान के तिमिर में स्वाध्याय दीप है, उसकी नियमितता को सम्मान दीजिये। विचार-बिन्दुओं के लिए स्वाध्याय सीप है। बाह्य प्रकाश की अपेक्षा न रहे इसलिए, स्वाध्याय है स्व का आकलन-अध्ययन, स्वयं के प्रकाश में स्वयं का ध्यान कीजिए।। भ्रम के भंवर में स्वाध्याय दीप है।।

-बम्बोरा, जिला- उदयपुर(राज.)

हमें क्या हो गया है?

श्री चन्द्रेश मण्डारी

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आजकल धन का महत्त्व सर्वाधिक हो गया है। सामाजिक, राजनैतिक और यहाँ तक कि धार्मिक क्षेत्र में भी उसी व्यक्ति को महत्त्व एवं प्रतिष्ठा मिलती है, जो धनवान है, भले ही वह धन उसने किसी भी प्रकार से प्राप्त किया हो।

हम आज एक ऐसे खतरनाक मोड़ पर खड़े हैं, जहाँ से हमारा सामाजिक और धार्मिक पतन प्रारंभ हो सकता है। धन से धर्म को खरीदने की होड़ लगी है।

हम सभा-संस्थाओं, गरीबों, अनाथ और अपंगों के लिए थोड़ा भी खर्च करना नहीं चाहते, लेकिन विवाह-शादियों, नये वर्ष की पार्टियों और दावतों में, सजावट में, आतिशबाजी में हजारों-लाखों खर्च कर देते हैं। आखिर हमारा चिन्तन और विवेक किस दिशा में बहा जा रहा है। जिस देश में करोड़ों व्यक्ति दो जून की रोटी भरपेट नहीं पाते, जहाँ करोड़ों व्यक्ति जीवन की अनिवार्य आवश्यकताओं से वंचित हैं, वहाँ समाज के कुछ व्यक्तियों द्वारा अपने वैभव का भौंडा प्रदर्शन क्या गरीबों के मन में उनके प्रति ईर्ष्या और द्वेष पैदा नहीं करेगा?

हम केवल अपने सुख, अपने विलास के लिये ही सब कुछ करना चाहते हैं। दूसरों के लिए यदि थोड़ा बहुत करते भी हैं तो उसमें दान का अहम् एवं नाम की लालसा बनी रहती है। अपार सम्पत्ति में से थोड़ी राशि चंदे या दान में देकर हम बड़ा बोर्ड अपने नाम का लगवाना चाहते हैं, अपनी फोटो लगवाना चाहते हैं। नाम और प्रसिद्धि का मोह बहुत अधिक व्यापक हो गया है। हम यह क्यों भूल जाते हैं कि कालचक्र सब कुछ धूल में मिला देता है। किस किसका नाम कितने दिन चला है? न तो लक्ष्मी स्थिर रहती है और न किसी के बिना दुनिया का कोई काम रुकता है। फिर भी हम यही मान बैठे हैं कि हमारे बिना अमुक संस्था, अमुक समाज या देश चल ही नहीं सकता। मूल में ही यह कैसी भूल है?

वर्तमान स्थिति के संदर्भ में हमें पुनर्विचार की आवश्यकता महसूस होती है। हमें अपनी मानवीय संवेदना और करुणा को सही ढंग से समझने की जरूरत है। हमें अपनी फिजूलखर्ची और आडम्बरों को त्याग कर सहयोग का हाथ उनके लिए बढ़ाना चाहिए जो कमजोर हैं, पिछड़े हैं और दुःखी हैं। मेरी विनम्र राय में ऐसा लगता है कि हमारी चेतना को धन के पक्षाघात ने पंगु बना दिया है। धन को ही सर्वाधिक महत्त्व देने का यह दुष्परिणाम है कि हम अपने धर्म के मूलभूत सिद्धांतों, अहिंसा, प्रेम, कल्याण, दया आदि को भूल बैठे हैं। अपेक्षा है कि हम अपनी अन्तर चेतना को जगायें, अपने आप को पहचानने की कोशिश करें और स्वयं से ही प्रश्न करें कि हमें क्या हो गया है?

-ओम शान्ति, 382-कमला नेहरू नगर, जोधपुर

दीक्षा

श्री पी.एम.चोरड़िया

(1)

1. प्रश्न— दीक्षा क्या है?

उत्तर—(१)शुभ का संस्कार, अशुभ का बहिष्कार तथा शुद्धत्व का स्वीकार दीक्षा है।

(२) सद्गुरु का शिष्यत्व स्वीकार करना ही दीक्षा है।

(३) व्रतों को जीवन में उतारना ही दीक्षा है।—श्री हेमचन्द्राचार्य

(४) दीक्षा आन्तरिक चेतना के रूपान्तरण का नाम है।

(५) दीक्षा मृत्यु से अमृतत्व की यात्रा है।

2. प्रश्न— दीक्षा का पारम्परिक अर्थ आज क्या लगाया जा रहा है?

उत्तर—गृहस्थ-जीवन को त्याग कर साधु बन जाना दीक्षा है।

3. प्रश्न— तंत्रशास्त्र में दीक्षा का क्या अर्थ है?

उत्तर— दीपज्ञानं यतो दद्यात्, कुर्यात् पापक्षयं ततो।

तस्मात् दीक्षेति सा प्रोक्ता सर्वतंत्रस्य सम्मता।।

जिससे ज्ञानप्रकाश (दीपज्ञान) प्राप्त हो, पाप का क्षय हो, उसे सभी तंत्रों/दर्शनों में दीक्षा कहा गया है। 'दीप' का -'दी' एवं 'क्षय' का 'क्ष' मिलकर दीक्षा के द्योतक बनते हैं।

(2)

1. प्रश्न—दीक्षा का अर्थ क्या है?

उत्तर—(१)मानव जीवन के चरम लक्ष्य का निर्णय कर उस पर चलने का दृढ़ संकल्प करना।

(२) वृत्तियों के पवित्रीकरण और संस्कारशीलता का नाम दीक्षा है।

(३) जैन परम्परा में दीक्षा का अर्थ गृहत्याग, कंचन-कामिनी का त्याग, ६ काया के जीवों का रक्षण, सभी सांसारिक संबंधों का विच्छेद, पाँच महाव्रतों का निष्ठापूर्वक पालन, पाँच समिति, तीन गुप्ति का निर्दोष पालन, पादविहार, परीषहों के प्रति समर्पण-भाव, रात्रि भोजन-पान का जीवन पर्यन्त त्याग, केश लोच, भिक्षावृत्ति के द्वारा जीवनयापन तथा सबसे मुख्य है पाँच महाव्रतों की सम्यक् आराधना।

2. प्रश्न— जैन दीक्षा कौन अंगीकार कर सकता है?

उत्तर—जैन दीक्षा कोई भी योग्य पात्र चाहे वह किसी भी जाति, वर्ण, मत

या सम्प्रदाय का हो, स्त्री हो चाहे पुरुष, अंगीकृत कर सकता है। चाहिए दृढ़-संकल्प, आत्मा की अमरता में विश्वास, भोगवादी प्रवृत्ति से विरक्ति और देह भाव से ऊपर उठने की क्षमता।

3. प्रश्न— दीक्षा का आध्यात्मिक भावभाषा में क्या अर्थ है?

उत्तर— बाहर से अन्दर बैठना, अपने गुम हुए स्वरूप को तलाशना, बाहर के आवरणों को हटाकर अपने को खोजना और सही रूप में अपने को पा लेना।

(3)

1. प्रश्न—दीक्षा के पर्यायवाची शब्द कौन-कौन से हैं?

उत्तर—संयम, चारित्र्य, प्रव्रज्या, अणगार धर्म आदि।

2. प्रश्न—आगमों और धर्मग्रन्थों में साधुओं को किन-किन नामों से संबोधित किया गया है?

उत्तर— श्रमण, मुनि, साधु, अनगार, आर्य, अह्निक, अकच्छ, अतिथि, अचेलक, ऋषि, तपस्वी, योगी, गणी, निर्ग्रन्थ आदि नामों से।

3. प्रश्न— दीक्षा-पाठ का भावार्थ क्या है?

उत्तर— दीक्षार्थी जिनेश्वर देव की साक्षी से कहता है कि हे भगवन्! मैं आजीवन सामायिक व्रत को स्वीकार करने के लिए तत्पर हुआ हूँ। मैं आज से पापकारी कार्यों या प्रवृत्तियों का त्याग करता हूँ। मैं न तो मन से पापकारी प्रवृत्ति का चिन्तन करूँगा न वचन से पाप कार्यों का उच्चारण करूँगा और न इस शरीर से पापकारी या निन्दास्पद कार्यों का सेवन करूँगा और न इस प्रकार की सावद्य प्रवृत्तियों का सेवन करने वालों का मन, वचन, काया से कभी अनुमोदन ही करूँगा। यदि मेरी प्रतिज्ञा या ग्रहण किये हुए व्रत में दोष लग जायें तो मैं दोषों के सेवन से लगे पाप से निवृत्त होता हूँ और उस दोष से अपने आपको पृथक् करता हूँ।

(4)

1. प्रश्न— बाह्य जगत् की दृष्टि से दीक्षा का उद्देश्य क्या है?

उत्तर— इससे जनता में अशुभ की निवृत्ति एवं शुभ की स्थापना का संदेश जाता है। जनता को यथार्थ सत्य का परिबोध कराना साधु जीवन का सामाजिक कर्तव्य है। साधु अंधकार का नहीं, प्रकाश का प्रतीक है। अशांति का नहीं, शांति का संदेशवाहक है। वह समाज का निर्माता है। समाज के नैतिक पक्ष को उजागर करने वाला है। बाह्य दृष्टि से दीक्षा का उद्देश्य यही है।

2. प्रश्न—स्थानांग सूत्र में कौनसे दस प्रकार से मुण्डित होने का प्ररूपण किया गया है?

उत्तर—१. श्रोत्रेन्द्रिय- विषय का मुण्डन करने वाला।

२. चक्षुरिन्द्रिय- विषय का मुण्डन करने वाला।

३. घ्राणेन्द्रिय- विषय का मुण्डन करने वाला।

४. रसनेन्द्रिय- विषय का मुण्डन करने वाला।

५. स्पर्शनेन्द्रिय- विषय का मुण्डन करने वाला।

६. क्रोध- कषाय का मुण्डन करने वाला।

७. मान- कषाय का मुण्डन करने वाला।

८. माया- कषाय का मुण्डन करने वाला।

९. लोभ- कषाय का मुण्डन करने वाला।

१०. मस्तक के केशों का मुण्डन करने वाला।

(5)

1. प्रश्न—एए देवनिकाया भगवं दोहिंति जिणवरवीरं।

सव्वजगज्जीवहियं अरिह! तित्थं पवत्तेहिं।। -आचारांग

इसका संदेश बताइए।

उत्तर—तीर्थकरों की दीक्षा जहाँ एक ओर आत्मशुद्धि की साधना है, वहाँ दूसरी ओर लोकहित की साधना भी है।

2. प्रश्न—पच्छा वि ते पयाया, खिप्पं गच्छंति अमरभवणाइं।

जेसिं पियो तवो संजमो य, खंती य बंभचेरं य।।

इन पंक्तियों का भावार्थ क्या है?

उत्तर—जिन्हें तप, संयम, क्षमा, ब्रह्मचर्य आदि सद्गुणों से आन्तरिक प्रेम है, वे व्यक्ति अपने मानव जीवन को सफल बनाने के लिये यदि पिछली आयु में भी (वृद्धावस्था) दीक्षा ले लें तो अपना आयुष्य पूर्ण करके स्वर्ग को प्राप्त करते हैं।

3. प्रश्न—ब्रह्मचयदिव प्रव्रजेद् गृहाद् वा व्रजाद् वा।

यदहरेव विरज्येत् तदहरेव प्रव्रजेत्।।

उपर्युक्त पंक्तियों में क्या संदेश दिया गया है?

उत्तर—जिस दिन मन विरक्त हो जाये, उसी दिन प्रव्रज्या ले लेनी चाहिए, चाहे ब्रह्मचर्य आश्रम हो, चाहे गृहस्थ या वानप्रस्थ। अर्थात् विरक्त आत्मा के लिए प्रव्रज्या का कोई समय नहीं है।

(6)

1. प्रश्न— ठाणांग सूत्र में दीक्षा लेने के दस कारण कौन-कौनसे बताये गए हैं?

उत्तर— १. छन्द-अपनी या दूसरे की इच्छा से दीक्षा लेना।

२. रोष- क्रोध के कारण दीक्षा लेना।

३. परिधूना- दरिद्रता व गरीबी के कारण दीक्षा लेना।

४. स्वप्न- विशेष प्रकार का स्वप्न आने से दीक्षा लेना।

५. प्रतिश्रुत- आवेश में आकर दीक्षा लेना।

६. स्मरण- किसी के द्वारा स्मरण कराने या जाति स्मरण ज्ञान हो जाने पर पूर्व भव को जानकर दीक्षा लेना।

७. रोगिणिका- रोग के कारण दीक्षा लेना।

८. अनादर- किसी के द्वारा अपमानित होने पर या अनादर भाव से दीक्षा लेना।

९. देव संक्षप्ति- देवों के द्वारा प्रतिबोध देने पर दीक्षा लेना।

१०. वत्सानुधिका- पुत्र स्नेह के कारण दीक्षा लेना।

2. प्रश्न— 'समे य जे सब्पाणभूतेसु, से हु समणे।'

जो समस्त प्राणियों के प्रति समभाव रखता है, वस्तुतः वही श्रमण है। उपर्युक्त आगम वाणी कौनसे सूत्र से ली गई है?

उत्तर— प्रश्नव्याकरण सूत्र २.५ से।

3. प्रश्न— 'जइ नत्थि नाणचरणं दिक्खाहु निरत्थिगा तस्स'

अर्थ- यदि ज्ञान और तदनुसार आचरण नहीं है तो उसकी दीक्षा निरर्थक है।

उपर्युक्त पंक्ति कहाँ से ली गई है?

उत्तर— व्यवहारभाष्य ६.२.१५ से।

(7)

1. प्रश्न— इस पथ का उद्देश्य नहीं है, बीच भवन में टिक रहना।

किन्तु पहुँचना उस सीमा तक, जिसके आगे राह नहीं है।

उपर्युक्त दोहे के रचयिता कौन हैं?

उत्तर— उपाध्याय श्री अमरमुनि जी।

2. प्रश्न— दीक्षा सत्य के पथ का पहला पड़ाव है।

पतवार है दीक्षा संयम तो नाव है।

धारण कर इसको बन जाओ जगती के।

फिर कौन घर तुम्हारा कैसा गांव है।।

उपर्युक्त पदों के रचनाकार कौन हैं?

उत्तर—राष्ट्रसंत श्री गणेशमुनि जी 'शास्त्री'

3. प्रश्न— भव नर उलझया जीव हित, दीक्षा निरमल द्वीप।
गुण—मोती निपजै सदा, विकसै मन री सीप।।
भटक्या नै मारग मिलै, अटक्या ने आधार।
मझघारां ने तट मिलै, उतरै भव से पार।।
उपर्युक्त दोहों के रचयिता कौन हैं?

उत्तर—डॉ. नरेन्द्र भानावत।

(8)

1. प्रश्न—जम्बू कुमार ने कितनी भव्य आत्माओं के साथ दीक्षा अंगीकार की तथा वे कौन थे?

उत्तर—५२७ भव्य आत्माओं के साथ। ये भव्य आत्माएँ थीं—

- (१) जम्बू कुमार
- (२) उनकी आठ नव विवाहित पत्नियाँ
- (३) आठ पत्नियों के माता-पिता।
- (४) जम्बू कुमार के माता-पिता।
- (५) प्रभव सहित ५०० चोर।

2. प्रश्न—राज्याभिषेक किये जाने के बाद जब गजसुकुमाल को कृष्ण वासुदेव ने पूछा— हे पुत्र! अब तुम क्या चाहते हो? इस पर उन्होंने क्या उत्तर दिया?

उत्तर—मैं दीक्षा लेना चाहता हूँ।

3. प्रश्न— निम्नलिखित महापुरुषों ने कितनी उम्र में दीक्षा अंगीकार की?

१. आचार्य श्री आनन्दब्रह्मि जी म.सा.
२. आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा.
३. आचार्य श्री जीतमल जी म.सा.
४. आचार्य श्री देवेन्द्रमुनि जी म.सा.
५. स्वामी जी पन्नालाल जी म.सा.

उत्तर—१. १२ वर्ष की उम्र में।

२. १० वर्ष की उम्र में

३. ११ वर्ष की उम्र में।

४. ६½ की उम्र में।

५. ११ वर्ष की उम्र में।

(9)

1. प्रश्न— क्या बालवय में दीक्षा दिया जाना उचित है?

उत्तर—आगमों में आठ वर्ष के बालक-बालिकाओं के संयम ग्रहण करने के उदाहरण मिलते हैं। इसलिए बाल दीक्षा अनुचित नहीं है। यही उम्र है जिसमें अधिक से अधिक ज्ञानाराधना की जा सकती है। सूत्रों को कंठस्थ किया जा सकता है। पर ऐसी दीक्षा देने के पूर्व दीक्षादाता विचक्षण गुरु उसके वैराग्य एवं योग्यता के तीव्र संस्कारों की सूक्ष्म दृष्टि से पहिचान कर लेते हैं।

2. प्रश्न—दीक्षा लेने वाले की अपेक्षा भी देने वाले की जवाबदारी ज्यादा किस प्रकार है?

उत्तर—यदि दीक्षा देने में जरासी भी वैधानिक असावधानी की गई तो धर्म, समाज, धर्मगुरु व जैन-संघ की प्रतिष्ठा को जबरदस्त धक्का लगता है। वे दोष के भागी व लोक निन्दा के पात्र होते हैं। जिनशासन निन्दनीय हो जाता है, अतः दीक्षा लेने वाले की अपेक्षा भी देने वाले की जिम्मेदारी अधिक होती है।

3. प्रश्न— दिगम्बर परम्परा में मुनि-प्रव्रज्या कब ग्रहण की जा सकती है?

उत्तर—दिगम्बर परम्परा में ब्रह्मचारी, क्षुल्लक, ऐलक के पद को धारण करने के बाद मुनि दीक्षा ग्रहण की जाती है।

(10)

1. प्रश्न— क्या दीक्षा लेना जीवन से पलायन नहीं है?

उत्तर—मनुष्य जीवन का सार यही है कि वह अपना आत्म-विकास करता हुआ अपनी अंतिम मंजिल मोक्ष को प्राप्त करे। यह मनुष्य जीवन में ही सम्भव है और बिना दीक्षा से ऐसा प्राप्त नहीं होता। दुनिया में रहकर उसमें रचा-पचा रहना तो मोहग्रस्त अवस्था है। अतः दीक्षा लेना निश्चय ही जीवन से पलायन नहीं है।

2. प्रश्न—दीक्षा के उत्कृष्ट परमार्थ को कौन प्राप्त करता है?

उत्तर—जो साधक आलस्य एवं प्रमाद से रहित होकर एकमात्र क्षमा आदि दशविध श्रमणधर्म में मन-वचन-काय को लगाये रखता है तथा श्रमण धर्म में ही अहर्निश जुटा रहता है, वही दीक्षा (संयम) के अनुत्तर (उत्कृष्ट) परमार्थ को प्राप्त करता है।

3. प्रश्न— प्राचीन धर्म-शास्त्रों में दीक्षित शिष्य को किस नाम से पुकारा गया है तथा उसका अर्थ क्या है?

उत्तर—१. अन्तेवासी।

२. अन्तेवासी का अर्थ है गुरु के निकट में निवास करने वाला। भाव, विचार, शिक्षा, आचार आदि के रूप से जो गुरु के निकट अनुशासन में रहता है, वह 'अन्तेवासी' है। यहाँ गुरु के प्रति भक्ति एवं अनुशासनता ही मुख्य है।

(11)

1. प्रश्न—दीक्षा के लिये अयोग्य कौन है?

उत्तर—१. जिसकी आयु आठ वर्ष से कम हो।

२. नपुंसक हो ३. रोगी ४. अंगहीन ५. कायर ६. जड़बुद्धि ७. चोर ८. राज्यविरोधी ९. पागल १०. अंधा ११. दास १२. धूर्त १३. मूढ़ १४. कर्जदार १५. भागा हुआ या भगाया हुआ १६. गर्भिणी स्त्री।

2. प्रश्न—तीर्थंकरों को दीक्षा लेने के लिए कौन बोधित करते हैं?

उत्तर—तीर्थंकर स्वयं बोधित होते हैं, वे किसी की प्रेरणा से दीक्षा नहीं लेते।

3. प्रश्न—'ज्ञाताधर्मकथा' सूत्र में भगवान महावीर ने नवदीक्षित मेघकुमार मुनि को दीक्षा के समय अपने श्रीमुख से क्या संबोधन दिया?

उत्तर—“हे देवानुप्रिय! इस पृथ्वी पर युग-प्रमाण दृष्टि रखकर इस प्रकार चलना चाहिए, इस प्रकार निर्जीव भूमि पर खड़ा होना चाहिए, इस प्रकार भूमि का प्रमार्जन कर बैठना चाहिए, इस प्रकार शरीर व वस्त्रादि की प्रतिलेखना करके सोना चाहिए, इस प्रकार सकारण निर्दोष आहार करना चाहिए, इस प्रकार हित-मित और मधुर-भाषण करना चाहिए कि इनमें तनिक भी प्रमाद या असावधानी के कारण किसी प्राण, भूत, जीव और सत्त्व को कष्ट न पहुंचे। अप्रमत्तता से सावधानतया जीवमात्र की रक्षा करना ही संयम का पालन है।

(12)

1. प्रश्न—आर्हती दीक्षा का लक्ष्य क्या होता है?

उत्तर—'अर्हत्' होना। 'अर्हत्' का अर्थ है— पूर्ण रूप से राग-द्वेष से मुक्त होना एवं वीतराग होना।

2. प्रश्न—दीक्षा के मार्ग को आन्तरिक शत्रुओं से जूझने का मार्ग क्यों कहा गया है?

उत्तर—हमारे वास्तविक शत्रु अपने मन में जन्म-जन्मान्तर से पड़े हुए काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर आदि हैं। ये हमें चार गति चौरासी

लाख योनियों में भव भ्रमण करवाते हैं। दीक्षा लेकर इन शत्रुओं को परास्त करने का प्रयत्न किया जाता है। यह वीरों का मार्ग है।

3. प्रश्न— दीक्षा नवजीवन और नव आस्था का वरण किस प्रकार है?

उत्तर—दीक्षा नवजीवन और नव आस्था का वरण है। इस ओर बढ़ने वाला साधक अपने पुराने संस्कारों को छोड़ देता है। मन, वचन और काया की एकरूपता के लिए वह समर्पित होता है। सच्चा आत्म-विजेता देव, गुरु एवं धर्म की उपासना का केन्द्र बनता है। उसमें दृढ़ विश्वास जन्म लेता है। वह अपने पुरुषार्थ के बल पर आत्मा से साक्षात्कार करने के लिये संयम-पथ पर चल पड़ता है।

-89, Audiappa Naicken Street, 1st Floor, Sowcarpet
Chennai-600079

विपत्ति की साथी : मुँहपत्ती

श्री लक्ष्मीचन्द जैन

1. सामायिक की निर्धारित वेशभूषा में जब सामायिक की जाती है तो एक विशिष्ट आभा-मण्डल का सृजन होता है। इसकी परिधि इतनी व्यापक होती है कि साधक पर आने वाली विपत्ति निवृत्ति का मार्ग अपना लेती है।
2. उक्त कथन की प्रामाणिकता के लिए अर्जुनमाली के प्रकोप के समय सेठ सुदर्शन की साधना का प्रमाण है। मुँहपत्ती पूर्वक की जाने वाली सामायिक साधक के आत्मविश्वास की पहचान है।
3. समता की साधना सामायिक का लक्ष्य है। जब हम शुद्ध हृदय से परमात्मा के पास बैठने का प्रयास करते हैं तो अशुभ कर्म अपना दुष्प्रभाव बदल देते हैं। साधना के समय साधक का शरीर कछुए की पीठ जैसा प्रहार शून्य हो जाता है। मुँहपत्ती की यह साधना तो हमें आने वाली अनेक विपत्तियों से बचाती है।
4. मुँहपत्ती बांधकर सामायिक करना एक ऐसा अच्छा नियम है जो परिवार में कई अच्छे सुसंस्कार अपने आप लाता है। पर्यावरण संरक्षण तो होता ही है। अपने परिवार का भी धार्मिकतामय वातावरण बनता है। आरंभ समारंभ के कार्यों से तो मुक्ति मिलती ही है। कुटिल व्यवहार करने वाला व्यक्ति भी एक बार ठहर कर सोचता है कि क्या मैं एक अच्छे व्यक्ति के साथ बुरा व्यवहार कर रहा हूँ।

-छोटी कसरत (अप्र)

समतामूर्ति मुनि कूरगुडुक

कूरगुडुक नाम के एक मुनि हुए। वे विनीत, सरल और गुरु-आज्ञा-पालक थे। अपने गुरु व अन्य अनेक संतों की सेवा में रत रहते हुए वे अपनी श्रमण-साधना में लीन रहते। उनकी एक दुर्बलता थी कि वे क्षुधावेदनीय कर्म के कारण भूख को सहन नहीं कर पाते थे। उन्हें प्रतिदिन भोजन करना पड़ता था। अतः वे तप नहीं कर सकते थे।

एक बार चातुर्मास का समय चल रहा था। महापर्व पर्युषण आया। सभी श्रमण और श्रमणोपासक इन दिनों में विशेष तप कर रहे थे। नन्हें बच्चे भी एकाशन, व्रत-पौषधादि कर रहे थे। लेकिन कर्म के कारण कूरगुडुक मुनि उस दिन भी भोजन नहीं छोड़ पाये। उनकी आत्मा उन्हें धिक्कारती रहती। वे स्वयं से कहते, धिक्कार है तुझे कूरगुडुक! तू कितना भारी कर्मों वाला जीव है, जो महापर्व के दिनों में भी तप नहीं कर पा रहा है। वे भोजन तो करते थे, परन्तु उनकी आत्मा पश्चात्ताप में डूबी रहती थी।

पर्वाधिराज संवत्सरी की पूर्व संध्या पर आकाशवाणी हुई- “कल संवत्सरी के पावन प्रसंग पर किसी महान् तपस्वी को केवलज्ञान प्राप्त होगा।” इस आकाशवाणी को सुनकर श्रमण और श्रावक अधिक उत्साह एवं सामर्थ्य से जप-तप में संलग्न हो गये थे। दूसरे दिन संवत्सरी पर्व आया सभी साधकों में अपूर्व उत्साह जाग उठा। अनेक श्रमण मासोपवापसी थे। कुछ आठ दिन का उपवास तप किये हुए थे। कैवल्य के महाप्रकाश को पाने की सभी को उत्कट अभिलाषा थी।

संवत्सरी के दिन प्रभातकाल बीत गया। दोपहर हुई। कूरगुडुक मुनि दोपहर होते-होते भूख से तड़फने लगे। भोजन के अभाव में उनके प्राण कण्ठ में आने लगे। संवत्सरी के दिन भी भोजन? मुनि कूरगुडुक की आत्मा स्वयं गवाही नहीं दे रही थी। लेकिन कोई मार्ग न था। मुनि ने विचार किया- “क्षुधा के कारण प्राण त्यागने से श्रेष्ठ तो यह है कि कुछ रूखा-सूखा उदर में डालकर लम्बे समय तक संयम पालन किया जाए।”

ऐसा विचार करके कूरगुडुक मुनि भिक्षापात्र लेकर गुरु के पास पहुँचे। उन्होंने गुरु से कहा- “गुरुदेव! मैं विवश हूँ, अपने कर्मों के कारण। मुझे बहुत भूख लगी है। अतः मुझे भोजन लाने की आज्ञा प्रदान

करें।” गुरु ने घृणा से मुँह फेर लिया। तब कूरगुडुक मुनि स्वयं को धिक्कारते हुए भोजन लाने के लिए निकले। उस दिन किसी भी जैन गृहस्थ के घर चूल्हा नहीं जला था। संवत्सरी के दिन भोजन के लिए भटकते उन मुनि पर लोग कटाक्ष और व्यंग्य कर रहे थे। मुनि कूरगुडुक सब ओर से निरपेक्ष बने गोचरीचर्या में लीन थे। अन्ततः उन्हें बासी खिचड़ी प्राप्त हो गयी। वे उसे लेकर गुरुचरणों में लौट आए।

साधु मर्यादानुसार कूरगुडुक मुनि ने भोजन का पात्र गुरु के सम्मुख रख दिया और उन्हें सम्प्राप्त भोजन दिखाने लगे। गुरु का क्रोध जागृत हो उठा। उन्होंने कूरगुडुक मुनि को डांटते हुए उनकी बासी खिचड़ी में धूक दिया। गुरु के इस क्रोध और दुष्कृत्य पर भी कूरगुडुक के मन में मैल नहीं आया, वे क्षमाशील बने रहे। उन्होंने गुरु के कृत्य पर प्रसन्नता प्रकट की। उनकी विचारधार थी- “मेरे गुरु कितने कृपालु हैं। मैं खूबी खिचड़ी कैसे खा पाऊँगा, इसलिए उन्होंने उसको सिग्ध कर दिया।”

एक ओर गुरु के अमर्यादित कार्य की अहोभाव से स्वीकृति थी, तो दूसरी ओर अपनी कर्मदशा पर घोर पश्चात्ताप के भाव थे, मुनि कूरगुडुक के पश्चात्ताप की चोटों से उनकी कर्म शृंखलाएँ टूट रही थीं और क्षमा एवं समभावों से उनका अन्तर निर्मल होता जा रहा था। एक ग्रास मुनि के मुख में था, एक हाथ में था तथा एक पात्र में बचा था। उनके कर्मों का मैल पश्चात्ताप और समभावों की जल धाराओं से धुल गया। उन्हीं क्षणों में महामुनि कूरगुडुक की आत्मा चमक उठी। देव दुंदुभियाँ बजीं। महामुनि कूरगुडुक के जयकारों, जयगानों से धरती और नभ गूँज रहे थे।

कैवल्य ज्ञान की बुनियाद सहज समता, क्षमा और उच्च भावों पर आधृत है। भोजन लेना या त्याग देना बहुत महत्त्व नहीं रखता, किन्तु क्रोध का त्याग, विषयों पर, कषायों पर विजय पाना अधिक महत्त्वपूर्ण है। अक्रोध, समता और क्षमाशीलता ही कैवल्य का मार्ग है।

-संकलन : मुदित जैन, 3 के 24
कुड़ी मगतासनी, जोधपुर

जो विरोधाग्नि का मुकाबला शांति के शीतल जल से करते हैं, वे विरोध को भी जीत लेते हैं। जब हृदय में क्षमा विराजमान होगी, तो क्रोध के आने की जगह ही नहीं रहेगी। - आचार्य श्री हस्ती



साहित्य-समीक्षा



डॉ. धर्मचन्द जैन

सम्यग्दर्शन—आचार्य विरागसागर जी, **प्रकाशक**— श्री सम्यग्ज्ञान दिगम्बर जैन विराग विद्यापीठ, बतासा बाजार, भिण्ड (म.प्र.) **पृष्ठ** 128, **मूल्य** 25 रुपये (अजिल्द), 35 रुपये(सजिल्द), **सन्** 2002

जैन साधना-पद्धति में सम्यग्दर्शन का महत्त्व सर्वोपरि है। क्योंकि इसके होने पर ही ज्ञान एवं चारित्र्य सम्यक् बनते हैं तथा मोक्षमार्ग का सम्पूर्ण स्वरूप प्रकट होता है। सम्यग्दर्शन से चेतना का आन्तरिक रूपान्तरण होता है एवं साधक की दृष्टि भोग से योग की ओर उन्मुख हो जाती है। प्रस्तुत पुस्तक में मुख्यतः दिगम्बर जैन ग्रन्थों के आधार पर सम्यग्दर्शन का सर्वांगीण विवेचन किया गया है। आठ अध्यायों में विभक्त पुस्तक की महत्त्वपूर्ण प्रस्तावना इसके सम्पादक प्रोफेसर सुदर्शनलाल जी जैन (संस्कृत-विभाग) काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी) ने लिखी है। पुस्तक में सम्यग्दर्शन की महिमा, लक्षण, उत्पत्ति एवं भेद-प्रभेद का विवेचन करने के साथ औपशमिक, क्षायोपशमिक एवं क्षायिक सम्यग्दर्शन का विशेष प्रतिपादन किया गया है। व्यवहार (सराग) तथा निश्चय (वीतराग) सम्यग्दर्शन पर पृथक् अध्याय है। सम्यग्दृष्टि के गुणों, अंगों एवं अतिचारों के अनन्तर सम्यग्दृष्टि की विशेषताओं का भी उल्लेख किया गया है। पुस्तक में प्रश्नोत्तर शैली से रोचकता बनी हुई है। पुस्तक प्रमाणोपेत, उपयोगी एवं ज्ञानवर्द्धक होने के साथ सम्यग्दर्शन पर विशेष प्रकाश डालती है।

दुःखों से मुक्ति—श्री सुभद्रमुनि जी महाराज, **सम्पादक**— श्री अमित मुनि जी **प्रकाशक**— मुनि मायाराम सम्बोधि प्रकाशन, के.डी. ब्लॉक, पीतमपुरा, दिल्ली-110034 **पृष्ठ** 16+154, **मूल्य** 30 रुपये, **सन्** 2002

यह पुस्तक श्री भद्रबाहु द्वारा रचित 'उवसग्गहर स्तोत्र' को लक्ष्य में रखकर श्री सुभद्रमुनिजी द्वारा प्रदत्त कतिपय प्रवचनों का संकलन है। पुस्तक में दुःखमुक्ति के उपाय के रूप में स्तुति का महत्त्व स्थापित करते हुए 'उवसग्गहर स्तोत्र' के चामत्कारिक प्रभाव को निरूपित किया गया है। 'संकट-मोचक पार्श्वस्तुति' नामक अन्तिम प्रवचन में उवसग्गहर स्तोत्र के प्रभाव की अनेक घटनाएँ दी गई हैं। पुस्तक के अन्त में अनेक मन्त्रों के लाभों का उल्लेख किया गया है।

जिनवाणी पर अभिमत

जिनवाणी का वैशाख-२०६० (मई ०३) का अंक पढ़ने को मिला। सीमित पृष्ठों में असीमित सामग्री-प्रत्येक स्तर और वर्ग के पाठकों के लिए। सम्पादकीय भी नित नया और प्रासंगिक तथा आगमिक/शास्त्रीय संदर्भों से युक्त। डॉ. एस.एल. नागौरी का आलेख स्वतंत्रता संग्राम में जैनों के त्याग और बलिदान का जीवन्त प्रमाण है। शहीद अमरचन्द जी बाँटिया भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में शहादत देने वाले प्रथम राजस्थानी व्यक्ति थे, यह ऐतिहासिक और तथ्यपूर्ण बात है तथा जैन समाज के लिए सदैव स्मरणीय और गौरव करने की बात है। इतिहासकारों ने स्पष्टतः श्री अमरचन्द जी बाँटिया को राजस्थान का पहला बलिदानी बताया है।

भीड़ में से मुझे मनुष्यों का वर्ग चाहिये,
त्याग की नींव पर बना दुर्ग चाहिये।
कौन है तैयार जो मिटा दे स्वयं को,
उत्कर्ष के लिए उत्सर्ग चाहिए।।

दिनांक २८.५.२००३

-दिलीप धींग, बम्बोर

जिनवाणी माह अगस्त २००३ के अंक में प्रकाशित लेख 'णमोकार का प्रभाव' ने मुझे अभिभूत कर दिया। मैं इस महामन्त्र को नमन कर बैठा। इस मन्त्र को मुख्याग्र कर मैंने इसे साधना का अभिन्न अंग बना लिया है।

दिनांक १९.९.२००३

- राधेश्याम गुर्जर, भवानीमण्डी

मासिक पत्र 'जिनवाणी' के पठन का अवसर मुझे कई वर्षों से मिल रहा है। यथा नाम तथा गुण की उक्ति को चरितार्थ करते हुए जिनवाणी पत्रिका में नियमित रूप से आगम सम्मत पाठ्य सामग्री पाठकों को उपलब्ध हो रही है। विगत कुछ अंकों में कषाय-विजय पर विस्तृत विवेचन पढ़ने का अवसर मिला। विद्वान् लेखक श्री श्रीकृष्णमल जी लोढ़ा, पूर्व न्यायाधिपति, राजस्थान उच्च न्यायालय, जोधपुर एवं संरक्षक श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर ने आगम एवं जैनेतर साहित्य के आधार से अनेक उद्धरण देकर कषायों की भीषणता, उनके दुष्परिणामों एवं कर्म-बंधन के मूल कारणों का विभिन्न दृष्टियों से अत्यधिक सरल एवं सहज भाषा में विवेचन किया है, जो सामान्य व्यक्ति को भी आसानी से समझ में आ जाता है। संघ-संरक्षक के पद के अनुरूप आप समाज को नियमित रूप से संरक्षण प्रदान कर रहे हैं।

दिनांक २०.०८.२००३

-सोहनराज संकलेच, जोधपुर

चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश के साथ ही इचलकरंजी में त्याग-तप की प्रभावना

‡ परम श्रद्धेय आगममर्मज्ञ, प्रवचन प्रभाकर आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा ८ का बुधवार दिनांक ६ जुलाई को प्रातः करीब ६ बजे विशाल जनमेदिनी के जय-जयकारों के साथ महावीर भवन में चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश अत्यन्त हर्ष एवं उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। दिनांक ६ जुलाई को ही आचार्यप्रवर की आज्ञानुवर्तिनी व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा ७ का रांका भवन में चातुर्मास प्रवेश उत्साह पूर्वक हुआ। चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश होने के साथ पावरलूम हेतु प्रसिद्ध इचलकरंजी में धर्म साधना-आराधना के प्रति आबाल-वृद्ध सबमें जो उत्साह बना, वह निरन्तर वृद्धिगत हो रहा है। ज्ञानाराधन, तपाराधन, धर्मारार्थन में सकल जैन समाज के उत्साह का अन्दाज इसी बात से हो जाता है कि प्रार्थना-प्रवचन-प्रश्नचर्चा-प्रतिक्रमण जैसे दैनिक कार्यक्रमों में श्रावक-श्राविका भावनापूर्वक लाभ प्राप्त कर रहे हैं, वहीं बालक-बालिकाएँ सामायिक-प्रतिक्रमण-बोल थोकड़ों के अभ्यास में सक्रिय हुए हैं। युवक-युवतियाँ धार्मिक ज्ञानाभ्यास वृद्धि के लिए शिक्षण बोर्ड के माध्यम से तैयारी में जुटे हैं, वहीं दया-संवर, उपवास-पौषध, सामायिक-स्वाध्याय में श्रावक-श्राविकाओं की भावना दिन-प्रतिदिन प्रगाढ़ होती जा रही है। त्याग-तप में छोटी-बड़ी तपश्चर्याएँ नित्य-प्रति हो रही हैं। इचलकरंजी श्रीसंघ चातुर्मास के सुयोग का पूरा-पूरा लाभ उठाने के लिए तत्पर है और भक्ति-भावना से सेवा में सन्नद्ध है।

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर का स्वास्थ्य समीचीन नहीं है। चिकित्सकों ने स्वास्थ्य लाभ के लिए विश्राम का परामर्श दिया है, फिर भी आचार्यप्रवर यदा-कदा प्रवचन सभा में पधार कर ज्ञानरसिक श्रावक-श्राविकाओं को संक्षिप्त उद्बोधन के माध्यम से प्रभावी प्रेरणा कर रहे हैं।

चातुर्मास प्रवेश के पावन प्रसंग पर आचार्यप्रवर ने धर्मस्थान की मर्यादा अक्षुण्ण रखने के साथ सत्संग-सेवा के प्राप्त अवसर का लाभ उठाने की प्रभावी प्रेरणा की। दिनांक १८ जुलाई को आचार्यप्रवर ने अपने उद्बोधन में फरमाया कि श्रमण भगवान महावीर ने तीर्थ की स्थापना की, उसके आप-हम अंग हैं।

तीर्थ में हम साधु-साध्वी हैं तो आप श्रावक-श्राविकाएँ भी हैं। इस तीर्थ की अपार महिमा है। आचार्यप्रवर ने द्रव्य तीर्थ और भाव तीर्थ का हार्द विस्तार से समझाते फरमाया कि तीर्थ तिरने का साधन तब है जबकि तृष्णोच्छेद का भाव हमारे भीतर जगे। आचार्यप्रवर ने बताया कि आकांक्षा कम करने के लिए चक्रवर्ती भी अपनी सम्पदा-वैभव छोड़कर तीर्थ का अंग बनते हैं। आज व्यक्ति-व्यक्ति में आकांक्षाएं बढ़ रही हैं। आकांक्षाओं की परिणति बताते आचार्यप्रवर ने फरमाया- आकांक्षाएं छूटती हैं, पर जो छोड़ता है उसका महत्त्व है। आप क्या साथ लेकर जायेंगे?

द्रव्य तीर्थ और भाव तीर्थ के अनेक प्रेरक प्रसंग रखते हुए फरमाया कि महाभारत का युद्ध भाई-भाई के मध्य हुआ। भीषण नरसंहार से युधिष्ठिर को ग्लानि हुई। युधिष्ठिर ने वासुदेव श्रीकृष्ण ने निवेदन किया कि मैं तीर्थ जाना चाहता हूँ, जिससे मेरे पाप-पंक धुल जाएँ। श्रीकृष्ण ने कहा- तुम मेरी तुम्बी साथ लेकर जाना और जहाँ तुम स्नान करो पहले इसे स्नान कराना। युधिष्ठिर तीर्थ कर वापस आये। तुम्बी लौटाकर कहा- मैंने इस तुम्बी को हर तीर्थ पर दो बार स्नान कराया। श्रीकृष्ण ने कहा- तब तो मेरी तुम्बी अवश्य मीठी हो गई होगी। तुम्बी तोड़कर उसको चखा तो वह ज्यों की त्यों कड़वी थी। युधिष्ठिर ने कहा- स्नान करने से क्या तुम्बी कभी मीठी हो सकती है? श्रीकृष्ण ने कहा- मैं यही बात कहना चाहता हूँ। जैसे स्नान से कड़वी तुम्बी मीठी नहीं होती ऐसे ही तीर्थ पर जाकर स्नान करने मात्र से पाप नहीं धुलते। पाप दूर करने के लिए द्रव्य स्नान की नहीं, भाव स्नान की आवश्यकता है। इसके लिए ज्ञान-दर्शन-चारित्र्य रूप नदियां हैं, उनमें गोते लगाने होते हैं। आचार्यप्रवर ने अहिंसा, संयम व तप को उत्कृष्ट मंगल बताते फरमाया कि इस सर्वोत्कृष्ट धर्म का पालन करने वाले को देवता भी नमन करते हैं। आचार्यप्रवर ने उत्कृष्ट अहिंसा-संयम-तप का आराधन करने की प्रेरणा करते फरमाया कि आपको यह जो भाव तीर्थ का सुयोग मिला है, आप उसका लाभ उठायें।

इचलकरंजी में प्रतिदिन एकाशन-आर्यबिल-उपवास की कड़ी चल रही है, साथ में बड़ी तपश्चर्याओं के नित्यप्रति प्रत्याख्यान हो रहे हैं। श्रीमती वर्षा धर्मपत्नी श्री अनिल जी बोहरा ने ३० जुलाई को २० की तपस्या के प्रत्याख्यान किये, वहीं श्री धनराज जी बोहरा की पुत्रवधू ने इसी दिन चौदह की तपस्या की। श्री लक्ष्मीचन्द जी बंब के १२ दिवसीय तपस्या के समाचार विदित हुए हैं। उपवास-बेले-तेले-पांच-आठ की तपस्याएँ भी हुई हैं, हो रही हैं। संत-सती भी तप-साधना में पुरुषार्थ प्रदर्शित कर रहे हैं। तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी ने दस की तपश्चर्या की, वहीं व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. के उन्नीस और महासती श्री उदितप्रभा जी म.सा. के २२ दिवसीय उपवास के

प्रत्याख्यान हुए हैं। समीपवर्ती-सुदूरवर्ती श्री संघ एवं श्रद्धालुओं का दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण और सत्संग सेवा की भावना से निरन्तर आवागमन बना हुआ है। इचलकरंजी श्री संघ के अध्यक्ष-मंत्री आदि सभी पदाधिकारी स्वधर्मी वात्सल्य सेवा में सक्रिय हैं।

सूर्यनगरी में धर्म-साधना का ठाट

ॐ आत्मारथी, शान्त-दान्त-गंभीर, प्रबल पुरुषार्थी परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा ५ का शुक्रवार, दिनांक ४ जुलाई को प्रातः करीब ६:२५ बजे सामायिक-स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश विशाल जनमेदिनी के जय-जयकारो के साथ अत्यन्त भव्यता से हुआ। बारह वर्ष के अन्तराल पश्चात् उपाध्यायप्रवर का चातुर्मास पाकर सूर्यनगरी के श्रद्धालु हर्षित हैं। उपाध्यायप्रवर की विहार-यात्रा में जय-जयकार के जयनाद एवं मंगल गीतों का क्रम पूरे रास्ते उमंग-उल्लास के साथ चला। विहार-यात्रा का विहंगम दृश्य अनुपम था।

उपाध्यायप्रवर एवं साध्वीप्रमुखा सरलहृदया महासती श्री सायरकंवरजी म.सा. के चातुर्मास के सुयोग से घोड़ों का चौक, जोधपुर में धर्म-साधना का ठाट चल रहा है। प्रार्थना, प्रवचन, शास्त्रवाचन, प्रश्न-चर्चा, प्रतिक्रमण जैसे दैनिक कार्यक्रमों के साथ ज्ञानाराधन-तपाराधन-धर्माराधन में आबाल-वृद्ध सब भावनापूर्वक लाभ ले रहे हैं। चातुर्मासिक चतुर्दशी पर बहिनों व भाइयों में धर्मचक्र के शुभारंभ से प्रारम्भ धर्म-साधना उत्तरोत्तर वृद्धिगत हो रही है। श्रावण मास में श्रावकों और श्राविकाओं ने पचरंगियों के आयोजन में अच्छा उत्साह दिखाया है। उपाध्यायप्रवर की प्रेरणा से सैकड़ों श्रद्धालुओं ने श्रावण और भाद्रपद में रात्रि-भोजन नहीं करने का संकल्प किया वहीं चार माह तक रात्रि-भोजन त्याग के भी अनेक प्रत्याख्यान हुए। एकाशन-आर्यबिल-उपवास के नित्य प्रति प्रत्याख्यानों के साथ बड़ी तपस्याओं में तप-साधकों का उत्साह प्रशंसनीय है। श्रीमती चंचलकंवर जी कुम्भट व श्रीमती चन्द्रा जी कुम्भट ने ३१ जुलाई को २० की तपस्या के पचक्खाण किये, जबकि श्री एकाग्रकुमार जी नाहटा, श्रीमती पद्मा जी नाहटा व श्री राजा जी नाहटा ने १६ के प्रत्याख्यान लिए, जिनके आगे बढ़ने की भावना है। श्रीमती अकलकंवर सिंघवी, श्रीमती शशि सुराना व श्रीमती मदनराज जी बालड़ के इसी दिन १२, १३ व १५ की तपस्या चल रही है, जिनके भी आगे बढ़ने के भाव हैं। श्रीमती प्रेमराजजी भंडारी, श्रीमती पुष्पा जी चौपड़ा, श्रीमती सज्जनकंवर जी बालड़ ने दस-दस उपवास किये। श्रीमती प्रेमलता जी सर्राफ, श्रीमती लीला जी कटारिया ने बारह की तपश्चर्या की। श्रीमती प्रसन्नचन्द जी बाफना एवं श्रीमती शोभा जी सिंघवी ने

नौ-नौ की तपस्या की। सुश्री शिल्पा गांधी, सुश्री प्रियंका चौपड़ा, श्रीमती ललिता सांखला, श्रीमती सुनिता जैन, श्रीमती शारदा सालेचा, श्रीमती सोहनकंवर, श्रीमती सूरज लूंकड़, श्रीमती सुकनराज जी कवाड़, श्रीमती सरला सुखराज जी एवं श्रीमती सज्जनकंवर मेहता ने अठाई तप किया।

तपो में सर्वश्रेष्ठ तप ब्रह्मचर्य तप है। श्रीमती व श्री प्रेमचन्द जी सेठिया, श्रीमती व श्री मोहनराज जी जीरावला, श्रीमती व श्री प्रेमकुमार जी सिंघवी ने आजीवन शीलव्रत के खंद किये। दया-संवर-उपवास-पौषध में श्रावक-श्राविकाओं का उत्साह अनुकरणीय है।

शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. आदि ठाणा ४ का पावटा स्थित वर्द्धमान भवन में चातुर्मासार्थ प्रवेश ६ जुलाई को हुआ। यहाँ पर महासती जी के पावन सान्निध्य में प्रातः शास्त्र-स्वाध्याय, मध्याह्न में चौपाई, सामायिक-स्वाध्याय, दया-संवर, उपवास-पौषध के साथ बड़ी तपश्चर्याएँ हो रही हैं।

सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ४ का चातुर्मासार्थ भगत की कोठी से ६ जुलाई को सरस्वती नगर में मंगल प्रवेश हुआ। यहाँ प्रार्थना, प्रवचन, प्रश्नचर्चा, प्रतिक्रमण जैसे दैनिक कार्यक्रमों के साथ ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप का अच्छा उत्साह चल रहा है।

महासती-मण्डलों के चातुर्मास में अन्यत्र भी उत्साहपूर्वक धर्माराधन

भोपालगढ़-शान्तस्वभावी तपस्विनी महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा. के विहार की स्थिति नहीं होने से महासती-मण्डल गत चातुर्मास पश्चात् से सकारण क्रियोद्धारक भूमि भोपालगढ़ विराजित है। श्रीसंघ की विनति पर परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने महासती-मण्डल का चातुर्मास भोपालगढ़ स्वीकार किया जिसका लाभ भोपालगढ़वासी भावनापूर्वक उठा रहे हैं।

निफाड़-नासिक जिलान्तर्गत निफाड़ कस्बे की विनति स्वीकार कर आचार्यप्रव ने व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मास निफाड़ स्वीकार किया। पूना दीक्षा के पश्चात् महासती मण्डल ने ग्रामानुग्राम ज्ञान- गंगा प्रवाहित करते ४ जुलाई को जैन स्थानक में चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश किया। महासती मण्डल के प्रवेश के पावन प्रसंग पर निफाड़ के आबाल-वृद्ध सभी भक्ति-भावना से जय-जयकार के जयघोष से अपना हर्ष व्यक्त कर रहे थे। चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश से वहाँ प्रार्थना, प्रवचन, प्रश्न-चर्चा, प्रतिक्रमण के दैनिक कार्यक्रम के साथ ज्ञानाराधन-तपाराधन में अच्छा उत्साह चल रहा है।

अहमदाबाद-व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ५ ने

दिनांक ६ जुलाई को प्रातः करीब ७.३० बजे शाहीबाग स्थित प्रेम सोसायटी विहार कर हठीभाई की वाड़ी स्थित स्थानक में चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश जय-जयकारों के जयनाद के साथ किया। महासती-मण्डल के चातुर्मास के सुयोग से वहाँ धर्म-ध्यान का अच्छा उत्साह चल रहा है।

बीजापुर-विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ७ का बीजापुर के जैन स्थानक में चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश १२ जुलाई को उत्साहपूर्वक हुआ। जैन स्थानक में पधारने के चार दिन पूर्व महासती मण्डल का बीजापुर पदार्पण हो गया था। बीजापुर के सुन्न श्रावक विहार-सेवा के अनन्तर चातुर्मास का भावना एवं उत्साहपूर्वक लाभ उठा रहे हैं।

कोटा-व्याख्यात्री महासती श्री सौभाग्यवती जी (सोहनजी) म.सा. आदि ठाणा ४ का ३० जून को रामपुरा बाजार स्थित स्थानक में चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश जय-जयकारों के साथ उमंग-उल्लासपूर्वक हुआ। औद्योगिक नगरी कोटा में धर्म-ध्यान की अच्छी प्रभावना चल रही है।

चौथ का बरवाड़ा-व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ५ का ३ जुलाई को प्रातः करीब ६ बजे जय-जयकारों के साथ जैन स्थानक में चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश उत्साहपूर्वक हुआ। समीपवर्ती ग्राम-नगरों के सैकड़ों श्रद्धालु चातुर्मासार्थ प्रवेश के पावन-प्रसंग पर उपस्थित थे। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रतनलाल जी बाफना ने उपस्थित जनसमुदाय का आह्वान किया कि आप सभी धर्म साधना-आराधना में उत्तरोत्तर प्रगति कर चातुर्मास को सफल बनाएँ। चातुर्मास में त्याग-तपस्या, धर्माराधन एवं ज्ञानाराधन में पूरा उत्साह है। श्री भेरूलाल जी जैन की धर्मपत्नी श्रीमती चंचलबाई ने अठाई तप किया है।

सतारा-व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा ५ ने ६ जुलाई को प्रातः करीब ६ बजे जैन स्थानक में चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश किया। सतारावासियों ने उमंग-उल्लास के साथ जय-जयकार के जयनाद कर प्रवेश पर अपनी खुशी व्यक्त की। आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी म.सा. के वि.सं. १६६६ के पश्चात् से रत्नवंशीय महासती मण्डल का चातुर्मास पाकर सतारावासी अत्यन्त हर्षित हैं एवं ज्ञान-क्रिया में रुचिपूर्वक सन्नद्ध हैं।

नदबई-व्याख्यात्री महासती श्री निशाल्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा ३ का ४ जुलाई को सामायिक-स्वाध्याय भवन नदबई में जय-जयकारों के साथ चातुर्मासार्थ प्रवेश अत्यन्त उल्लास पूर्वक हुआ। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रतनलाल जी बाफना सहित समीपवर्ती क्षेत्रों के सैकड़ों श्रद्धालु महासती-मण्डल के चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश पर उपस्थित हुए। नवकार मंत्र का जाप, आयबिल एवं तेले की तपश्चर्या की लड़ी जैसे कार्यक्रम महासती-मण्डल के

चातुर्मास प्रवेश के साथ प्रारम्भ हो गये हैं और त्याग-तप, ज्ञानाराधन एवं दया-संवर में निरन्तर उत्साह दिखाई दे रहा है।

कुशतला—व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा ४ का ६ जुलाई को प्रातः करीब ६ बजे विशाल जनमेदिनी के जय-जयकारों के साथ चातुर्मासार्थ मंगल प्रवेश हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। सवाईमाधोपुर- बजरिया सहित समीपवर्ती क्षेत्रों के करीब ७०० श्रावक-श्राविकाओं ने चातुर्मास प्रवेश के पावन प्रसंग पर उपस्थिति देकर जिनशासन की प्रभावना की। कुशतला के सरपंच श्री सुरेशकुमार जी जैन ने आगत श्रद्धालुओं का कुशतला ग्राम की ओर से आभार प्रदर्शित किया और प्रवचन-श्रवण हेतु कुशतला पधारते रहने की अपील की। चातुर्मास में धर्मक्रियाएँ सुचारु रूप से उत्साहपूर्वक संचालित हो रही हैं।

सूर्यनगरी (जोधपुर) में संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाओं की कार्यकारिणी एवं वार्षिक साधारण-सभाएँ तथा सम्मान समारोह

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका-मण्डल एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् की कार्यकारिणी एवं वार्षिक साधारण सभाएँ निम्नानुसार होंगी-

शनिवार दिनांक 13 सितम्बर 2003

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

कार्यकारिणी बैठक- समय : अपराह्न १ से ४ बजे

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की

कार्यकारिणी बैठक- समय : सायं ७.०० बजे

वार्षिक साधारण सभा- समय : रात्रि ८ से १० बजे

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

कार्यकारिणी बैठक- समय : सायं ७.०० बजे

वार्षिक साधारण सभा- समय : सायं ८ से १० बजे

नोट- उपर्युक्त सभी बैठकों का आयोजन ओसवाल कम्युनिटी सेन्टर, तारघर के पास, सरदारपुरा में रहेगा।

रविवार दिनांक 14 सितम्बर 2003

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल की वार्षिक साधारण सभा

समय : अपराह्न १ से ४ बजे

स्थान : ओसवाल कम्युनिटी सेन्टर, तारघर के सामने, जोधपुर

सम्मान-समारोह

रविवार, दिनांक 14.9.2003

स्थान-कल्पतरु ऑडिटोरियम, शास्त्री नगर, जोधपुर

- ◆ आचार्य श्री हस्ती स्मृति सम्मान
- ◆ युवा प्रतिभा शोध-साधना-सेवा-सम्मान
- ◆ विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान वर्ष
- ◆ विशिष्ट संघ सेवियों का अभिनन्दन
- ◆ सर्वश्रेष्ठ युवा शाखा-सम्मान
- ◆ युवक परिषद् के अन्य सम्मान
- ◆ आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड द्वारा सम्मान

विचारणीय विषय-सूची

- ✿ गत बैठक की कार्यवाही का पठन एवं अनुमोदन
- ✿ वार्षिक प्रतिवेदन का प्रस्तुतीकरण
- ✿ कार्यकारिणी द्वारा स्वीकृत वर्ष २००२-२००३ के वास्तविक आय-व्यय एवं वर्ष २००३-२००४ के प्रस्तावित बजट का अनुमोदन
- ✿ गतिविधियों-प्रवृत्तियों की समीक्षा एवं भावी कार्ययोजना पर विचार
- ✿ अध्यक्ष महोदय का चुनाव
- ✿ अध्यक्ष महोदय की अनुमति से अन्य विषयों पर विचार

नोट-१. द्वि-दिवसीय कार्यक्रम की जानकारी अपने क्षेत्र में सभी सदस्य महानुभावों को करें।

२. द्वि-दिवसीय कार्यक्रम में पधारने पर जोधपुर चातुर्मासार्थ विराजित परम श्रद्धेय उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि संत-वृन्द, साध्वीप्रमुखा सरलहृदया महासती श्री सायरकंवर जी म.सा., शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म. सा., सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण एवं सत्संग-सेवा का सहज लाभ भी प्राप्त होगा।

३. सभी सदस्य महानुभावों से निवेदन है कि वे अपने जोधपुर पधारने की पूर्व सूचना स्थानीय संघ मंत्री श्री सुमेरनाथ जी मोदी मार्फत श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-३४२००१ के पते पर या फोन नं. ०२६१-२६३६७६३ (का.) २६३२६८९(नि.) पर या फैक्स ०२६१-२६३६७६३ पर अवश्य करें जिससे आवास, भोजनादि की व्यवस्था करने में सुविधा रहे।

सम्पर्क सूत्र-

१. डॉ. सम्पतसिंह जी भांडावत, अध्यक्ष श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर, फोन नं. ०२६१-२५४५१०५/२५४४१०६, फैक्स नं. ०२६१-२५४५४८२

२. श्री अरूण जी मेहता, महामंत्री, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर, फोन नं. ०२६१-२६४०७५७

३. श्री नरपतराज जी चौपड़ा, क्षेत्रीय प्रधान, फोन नं. ०२६१-२५४५२६५

-अरूण मेहता, महामंत्री-अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा
स्थानीय शिविरों का आयोजन

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर एवं उसकी विभिन्न शाखाओं के संयुक्त तत्त्वावधान में ग्रीष्मकालीन अवकाश का सदुपयोग करने हेतु दिनांक १७ मई २००३ से ३० जून २००३ तक विभिन्न स्थानों पर बालक-बालिकाओं में नैतिक एवं धार्मिक संस्कार प्रदान करने हेतु स्थानीय शिविरों का आयोजन किया गया। जिसकी संक्षिप्त रिपोर्ट इस प्रकार है:-

क्र. गांव का नाम शिविरार्थी अध्यापकों के नाम

पोरवाल क्षेत्र

०१. अलीगढ़	६२	१. श्री बंशीलाल जी जैन, अलीगढ़ २. श्रीमती सीता जी जैन, अलीगढ़ ३. सुश्री किरण जी जैन, अलीगढ़
०२. गंगापुर सिटी	७५	१. श्री अनिल कुमार जी जैन, स.माधोपुर २. श्री त्रिलोकचन्द जी जैन, स.माधोपुर
०३. कुस्तला	२५	१. श्री प्रेमप्रकाश जी जैन, आदर्शनगर २. सुश्री प्रियंका जी जैन, गंगापुर सिटी
०४. उनियारा	३०	१. श्री हनुमान प्रसाद जी जैन, अलीगढ़ २. श्री मनोज कुमार जी जैन, अलीगढ़
०५. श्योपुरकलां	३६	१. श्री लल्लूलाल जी जैन, सवाईमाधोपुर २. श्री इन्द्रप्रसाद जी जैन, सवाईमाधोपुर
०६. कुण्डेरा	४०	१. श्रीमती प्रियदर्शना जी जैन, हा.बोर्ड २. सुश्री प्रियंका जैन, गंगापुर सिटी
०७. सुमेरगंजमण्डी	३०	१. श्री विनोद कुमार जी जैन, उनियारा २. श्री जितेश कुमार जी जैन, बजरिया
०८. बजरिया	८०	१. श्रीमती मोहनकौर जी जैन, जोधपुर २. श्री मनीष जी बोधरा, जोधपुर ३. श्रीमती कान्तीबाई जी जैन, आलनपुर ४. श्रीमती कुमकुम जी जैन, बजरिया ५. श्री प्रेमबाबु जी जैन, बजरिया ६. श्रीमती सुशीला जी जैन, बजरिया ७. श्री राहल जी जैन, बजरिया

८. श्रीमती मोहिनी देवी जैन, आलनपुर

पल्लीवाल क्षेत्र

०६. हिण्डौन सिटी	१२०	१. श्री हनुमानप्रसाद जी जैन, अलीगढ़ २. श्री मनोज कुमार जी जैन, अलीगढ़ ३. श्री रामस्वरूप जी जैन, कुण्डेरा
१०. वर्द्धमान नगर	७४	१. श्री रमेशचन्द्र जी जैन, सवाईमाधोपुर २. श्री राहुल जी जैन, सवाईमाधोपुर
११. नदबई	५१	१. श्री लल्लूलाल जी जैन, सवाईमाधोपुर २. श्री इन्द्रप्रसाद जी जैन, सवाईमाधोपुर
१२. मण्डावर	२०	१. श्री नरेन्द्रमोहन जी जैन सवाईमाधोपुर २. श्री दिलीप कुमार जी जैन, स.माधोपुर
१३. करौली	२८	१. श्री विनयचन्द्र जी जैन, आलनपुर २. श्री इन्द्रप्रसाद जी जैन, सवाईमाधोपुर
१४. खेरली	८६	१. श्री लल्लूलाल जी जैन, सवाईमाधोपुर २. श्री इन्द्रप्रसादजी जैन, सवाईमाधोपुर ३. श्री धर्मचन्द्र जी जैन, खेरली
१५. भरतपुर	७०	१. श्री सुनील कुमार जी जैन, जयपुर २. श्री सतीश कुमार जी जैन, जयपुर
१६. झारेड़ा	३६	१. श्री जिनेन्द्र जी जैन, गंगापुर २. श्री रिन्कू जी जैन, हिण्डौन
१७. मौजपुर	२७	१. श्री महेश जी जैन, जयपुर २. श्री अनुपम जी जैन, जयपुर
१८. लक्ष्मणगढ़	२६	१. श्री अनुपम जी जैन, जयपुर २. श्री ऋषभ जी जैन, जयपुर ३. श्री राजकुमार जी जैन, मण्डावर
१९. हरसाना	४५	१. श्री राजकुमार जी जैन, मण्डावर २. श्रीमती मंजू जी जैन, मौजपुर
२०. बरगमा	३६	१. सुश्री प्रियंका जी जैन, गंगापुर सिटी २. श्री राहुल जी जैन, सवाईमाधोपुर
२१. परबैणी	२६	१. श्री अनिल जी जैन, जयपुर २. श्रीमती मंजू जी जैन, मौजपुर

उपर्युक्त शिविरों में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग प्रदान करने वाले सभी कार्यकर्ताओं का, क्षेत्रों का एवं अध्यापन के रूप में अपनी सेवाएं देने वाले सभी अध्यापकों का स्वाध्याय संघ, जोधपुर की ओर से हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करते हैं।—**सुरीला बोहरा-संयोजक, रित्खबचन्द मेहता-सचिव**

अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर की आगामी परीक्षा ११ जनवरी २००४ को

अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा कक्षा १ से ११ तक की परीक्षा २७ जुलाई, २००३ को २४६ केन्द्रों पर आयोजित की जा चुकी है। इस परीक्षा के आयोजन में अधीक्षकों, निरीक्षकों, प्रश्न-पत्र निर्माताओं, संघ एवं सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारियों का जो सहयोग प्राप्त हुआ, उसके लिये बोर्ड उनका आभारी है। आगामी परीक्षा कक्षा १ से ८ तक के लिये ११ जनवरी २००४, रविवार दोपहर १२ से ३ बजे तक रहेगी।

सभी पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं, स्वाध्यायियों, सुश्रावकों-सुश्राविकाओं एवं समस्त अभिभावकों से विनम्र निवेदन है कि ११ जनवरी २००४ की परीक्षा में स्वयं भी भाग लें तथा अन्य परिवारजन, मित्रगण आदि को भी भाग लेने की पुरजोर प्रेरणा करने की कृपा करावें। -विमला मेहता, संयोजक

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायियों को आमंत्रित कीजिए

इन्दौर— श्री मध्यप्रदेश जैन स्वाध्याय संघ, इन्दौर, संत-सतियों के चातुर्मास से वंचित क्षेत्रों में पर्युषण पर्व के पावन प्रसंग पर प्रवचन, शास्त्रवाचन, चौपाई, प्रतिक्रमण आदि विभिन्न धार्मिक क्रियाएँ करवाने हेतु विगत २५ वर्षों से योग्य एवं अनुभवी स्वाध्यायी बंधुओं को भेजकर जिनशासन और समाज सेवा में कार्यरत है। इस वर्ष जिन क्षेत्रों में संत-सतियाँ जी के चातुर्मास नहीं हुए हों, वे क्षेत्र अपना आवेदन शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने की कृपा करें। **सम्पर्क सूत्र**—(१) अशोक मण्डलिक, अशोक ड्रेसेज, बोडाना मार्केट, सराफा कॉर्नर, इन्दौर-४५२००२, फोन नं. ४३२१३३, ५१५१६२३, २४ (२) श्री मध्यप्रदेश जैन स्वाध्याय संघ, मोहनलाल पिपाड़ा, महावीर भवन, १५१-इमली बाजार, इन्दौर-४५२००४, फोन नं. ४१७०३०

संघाध्यक्ष श्री बाफना साहब का भवानीमण्डी में अभिनन्दन

२ जुलाई २००३ को अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष तथा शाकाहार-अहिंसा के प्रचार-प्रसार में अग्रणी श्री रतनलाल जी बाफना, जलगांव का भवानीमण्डी पधारने पर अहिंसा प्रचार समिति की ओर से हार्दिक अभिनन्दन किया गया। श्री बाफना साहब ने इस अवसर पर कहा कि अहिंसा प्रधान भारत भूमि पर हिंसा के कदम तेजी से बढ़ रहे हैं। देश की पशु-सम्पदा को गाजर-मूली की तरह काटा जा रहा है। ऐसे समय में मांस-निर्यात व कत्लखानों पर तालें लगाना जरूरी हो गया है। बालाजी चौराहे पर स्थित शांति भवन में श्री अखिल भारतीय सुधर्म अहिंसा प्रचार समिति एवं जैन स्थानकवासी श्री संघ के सदस्यों द्वारा आयोजित अभिनन्दन कार्यक्रम में श्री कालूलाल जी सालेचा एवं युवा संचालक श्री नितेश जी नागोता द्वारा बाफना साहब को स्मृति-चिन्ह एवं अभिनन्दन-पत्र प्रदान किए गये। बाफना साहब ने अहिंसा, शाकाहार एवं जीव दया संबंधी कार्यों को

व्यापक रूप प्रदान करने हेतु आह्वान किया।

संक्षिप्त समाचार

कोलकाता— श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा द्वारा श्री जैन बुक बैंक का संचालन किया जाता है। २६ जून को बुक बैंक की रजत जयन्ती मनायी गई। बुक बैंक में इस वर्ष पुस्तकों के १५०० नये सेट मिलाने से १२००० छात्र-छात्राओं को पुस्तकें प्राप्त हो रही हैं। विगत १३ वर्षों में ३६५ विद्यालयों के लगभग ५० हजार छात्र-छात्राओं ने बुक बैंक का लाभ लिया है।

लिम्बडी— १ जून २००३ को यहाँ प्रातः ८ बजे से रात्रि ८ बजे तक श्री अजरामर रक्तदान महाशिविर का आयोजन श्री पोपटलाल भचुभाई नंदु चेरिटेबल ट्रस्ट के सहयोग से किया गया, जिसमें जैन-अजैन हजारों रक्तदाताओं के रक्तदान से ११४५१ बॉटल रक्त एकत्रित हुआ। —श्री छबील भाई टी.शेट

पीपाड़ सिटी—श्री जैन रत्न युवक परिषद् के तत्वावधान एवं मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. के सान्निध्य में मई २००३ में अष्ट दिवसीय धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में ६० छात्र-छात्राओं ने ज्ञानार्जन किया। शिविर का सम्पूर्ण व्यय श्री मोतीलाल जी धनपतराज जी मेहता ने वहन किया।

बधाई/चुनाव



श्रीमती सुशीला जी बोहरा



श्री प्रदीप जी गांग

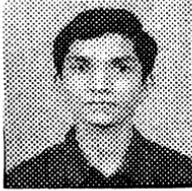
जोधपुर— श्री ओसवाल सिंह सभा, जोधपुर के सम्पन्न चुनावों में इस बार श्री वर्द्ध. स्था. जैन श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री गणपतमल जी सांड-अध्यक्ष, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ की संयोजक श्रीमती सुशीला जी बोहरा-उपाध्यक्ष एवं श्री सुरेन्द्र जी गेलड़ा -सचिव निर्वाचित हुए हैं। पार्षद श्री प्रदीप जी गांग-शिक्षण सचिव एवं श्री नगराज जी खीवंसरा (मेहता)-कोषाध्यक्ष चुने गए हैं।



नीमच— वर्ष २००२-२००३ की सी.बी.एस.ई. की १०वीं की परीक्षा में सुश्री अप्रा सुपुत्री ज्ञानचन्द-रेणु चोरड़िया (सुपौत्री श्रीमती मोहनबाई-स्व. रूपचन्द जी चोरड़िया) ने ५०० में से ४५६ अंक अर्जित कर ६१.२ प्रतिशत अंक के साथ जिले में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया है। अप्रा को सभी विषयों में विशेष योग्यता प्राप्त हुई है।

अहमदाबाद— श्री पदमचन्द जे. कोठारी, अहमदाबाद (प्रान्तीय अध्यक्ष गुजरात) का अहमदाबाद स्थित दी सोशियल को. ओ. बैंक लिमिटेड में दूसरी बार मैनेजिंग

डाइरेक्टर के पद पर चुना गया है। बधाई।



सुकेणा— नासिक जिले की निफाड़ तहसील के श्री केतन ललित गांधी (सुपौत्र श्री दगडूलाल जी गांधी) ने उच्च माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, नासिक से १२वीं कक्षा (विज्ञान वर्ग) की परीक्षा में ६१.८३ प्रतिशत अंक (५५१/६००) प्राप्त कर योग्यता सूची में १३वाँ स्थान प्राप्त किया है। वह नासिक के आर.वाय.के.

कॉलेज का छात्र था।

बालोतरा— श्री वर्द्धमान जैन स्थानकवासी संस्थान के द्विवार्षिक चुनाव सम्पन्न हुए, जिसमें सर्वसम्मति से श्री खींवरज जी भण्डारी को अध्यक्ष, श्री डूंगरचन्द जी श्रीश्रीमाल एवं श्री रूपचन्द जी बाघमार को उपाध्यक्ष, श्री ओमप्रकाश जी बाँठिया को मंत्री, श्री बाबूलाल जी हुंडिया को सहमंत्री एवं श्री नेमीचन्द जी अन्याव को कोषाध्यक्ष चुना गया।

श्रद्धांजलि

भगत श्री शिवचन्द जी महाराज का देवलोक गमन

दिल्ली— संघशास्ता श्री रामकृष्ण जी महाराज के गुरुभ्राता एवं योगिराज श्री रामजीलाल जी महाराज के शिष्य सेवायोगी सरलात्मा भगत श्री शिवचन्द जी महाराज का १४ जनवरी २००३ को संधारा-समाधि के साथ सरस्वती विहार, दिल्ली में देवलोकगमन हो गया। उनकी देह-आयु ८८ वर्ष एवं संयम-साधना पर्याय ६४ वर्ष थी। ज्ञातव्य है कि मुनि मायाराम गण के वे सर्वाधिक ज्येष्ठ दीक्षापर्याय सम्पन्न मुनिराज थे। पंजाब मुनि-परम्परा में वे सर्वज्येष्ठ आयु के महास्थविर थे। १५ जनवरी को पार्थिव देह का शिवपुरी नामक श्मशान घाट में विशाल जनसमुदाय की उपस्थिति में अन्तिम संस्कार किया गया। —**श्यामलाल जैन, मंत्री, श्री एस.**

एस. जैन सभा, सरस्वती विहार, दिल्ली

जोधपुर—श्रद्धालु सुश्राविका श्रीमती कमलादेवी जी जैन धर्मपत्नी श्री लालचन्द्र जी जैन का ७५ वर्ष की वय में ५ जुलाई २००३ को प्रातः आकस्मिक देहावसान हो गया। आप प्रातःकालीन सामायिक पूर्ण कर रात्रि चौविहार प्रत्याख्यान पारने वाली थीं, कि अचानक हृदयगति रुक गई। आप प्रतिदिन नियमित रूप से दो सामायिक करती थीं। आपके पतिदेव श्री लालचन्द्र जी जैन वयोवृद्ध एवं वरिष्ठ स्वाध्यायी तथा जिनवाणी के प्रतिष्ठित लेखक (दीक्षाकुमारी का प्रवास के रूपान्तरकार) हैं। आपने आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के साथ मीलों पद विहार किया है। सुश्राविका जी अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।



पीपाड़ शहर— सुश्रावक श्री मूलचन्द जी बोहरा (सालेचा) सुपुत्र श्री मोहनलाल जी बोहरा मूल निवासी रतकुड़िया का ४८ वर्ष की उम्र में ३० जून २००३ को हृदयगति रुक जाने से असामयिक देहान्त हो गया। आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर एवं सन्त-सतियों के प्रति श्रद्धानिष्ठ एवं अनन्य गुरुभक्त श्री बोहरा सा, स्पष्ट वक्ता, मिलनसार, निर्भीक एवं युवा कार्यकर्ता थे। आप अपने पीछे सुपुत्र रमेश जी, महावीर जी, अशोक जी एवं एक सुपुत्री के साथ भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।



जयपुर—सुश्रावक श्रीमान् मन्नालाल जी सुराणा का १८ मई २००३ को स्वर्गवास हो गया। आपका जीवन सरल, सहज एवं सादगी से परिपूर्ण था। आपने श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, जयपुर के अध्यक्ष पद पर रहकर अमूल्य एवं अविस्मरणीय सेवाएँ दी।

बैंगलोर— अनन्य गुरुभक्त श्रद्धानिष्ठ - धर्मनिष्ठ - कर्तव्यनिष्ठ, सेवाभावी सुश्रावक श्री सम्पतराज जी मरलेचा का ६६ वर्ष की उम्र में १८ जुलाई २००३ को रात्रि में २.३० बजे हृदयगति रुक जाने से आकस्मिक निधन हो गया। सुश्रावक श्री मरलेचा जी सुज्ञ श्रावकरत्न थे। आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. का आपके जीवन पर विशेष प्रभाव था। संघ-सेवा, सन्त-सेवा, स्वधर्मी-वात्सल्य सेवा एवं श्रुतसेवा में आप सदैव अग्रणी रहते थे। आप नियमित रूप से सामायिक-स्वाध्याय एवं व्रत-नियमों के प्रति जागरूक रहे। सरलता, सहृदयता, सादगी, सहिष्णुता, उदारता के साथ आप सबको साथ लेकर चलने वाले श्रावक रत्न थे। बैंगलोर में उन्होंने संघ-सेवा का आदर्श प्रस्तुत किया। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, बैंगलोर के अध्यक्ष पद को अपनी सेवाओं से सुशोभित करने के साथ आप अनेक सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं से सक्रिय रूप से जुड़े हुए थे। आप जैन योग साधना केन्द्र के प्रमुख मार्गदर्शक, कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ के प्रमुख स्तम्भ एवं केवलमुनि जैनोदय ट्रस्ट के मानद मन्त्री थे। आप अपने पीछे भरापूरा धर्मनिष्ठ परिवार छोड़कर गए हैं।—**डॉ. बी. रमेश जैन**



जयपुर— सुश्राविका श्रीमती कमलादेवी जी नवलखा धर्मपत्नी स्व. श्री फूलचन्द जी नवलखा एवं माताश्री श्री भागचन्द जी नवलखा का १६ जुलाई २००३ को स्वर्गवास हो गया। आप धर्मनिष्ठ एवं श्रद्धानिष्ठ श्राविका थी तथा नियमित रूप से सामायिक-स्वाध्याय करती थी। आप अनेक व्रत-नियमों का पालन करती थी तथा देव, गुरु एवं धर्म के प्रति समर्पित थी।



आपके जीवन पर आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा.का विशेष प्रभाव रहा। आपका जीवन सेवाभावना, स्वधर्मि-वात्सल्य, विनम्रता आदि गुणों से ओतप्रोत था।

जोधपुर—सुश्राविक श्रीमती चांदकंवर धर्मपत्नी श्री सोभागचन्द जी मोहनोत का २२ जून २००३ को ६८ वर्ष की उम्र में देहावसान हो गया। आप श्रद्धानिष्ठ, धर्मनिष्ठ एवं त्याग-प्रत्याख्यान में रुचि रखने वाली श्राविका थी। आप नियमित रूप से सामायिक-स्वाध्याय करती थी तथा आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर एवं सन्त-सतियों का आपके जीवन पर विशेष प्रभाव था। आपने पीछे सुपुत्र अक्षय मोहनोत, पौत्र, पौत्री, दौहित्र, दौहित्री सहित भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।



मुम्बई—धर्मपरायण सुश्रावक श्री पुखराज जी कोठारी सुपुत्र श्री हीरालाल जी कोठारी (पीपाड़ सिटी वाले) का १३ मई २००३ को स्वर्गवास हो गया। आप रत्नसंघ के प्रतिष्ठित श्रावकरत्न थे। आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. पर आपकी अटूट श्रद्धा-भक्ति थी। आपकी धर्माराम्यन एवं व्रत-नियमों के साथ सन्त-सती सेवा में पूरी रुचि थी।



जयपुर—सुश्राविका श्रीमती विमला देवी जी जामड़ धर्मपत्नी श्री हुकमचन्द जी जामड़ १५ जुलाई २००३ को स्वर्गस्थ हो गई। आप धर्मपरायण, सेवाभावी एवं सन्त-सतियों के प्रति समर्पित सुश्राविका थीं तथा नियमित रूप से सामायिक-स्वाध्याय करती थी। आपने जीवन में अनेक व्रत-नियम एवं प्रत्याख्यान ग्रहण किए थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गई हैं। आपके सुपुत्र श्री संजय जी एस.एस. जैन सुबोध शिक्षा समिति की कार्यकारिणी के सदस्य हैं।

बैंगलोर—सुश्राविका श्रीमती बदनबाई जी चौपड़ा धर्मपत्नी स्व. श्री अमोलकचन्द जी चौपड़ा का १२ जून २००३ को अल्पकालीन अस्वस्थता के पश्चात् निधन हो गया। आप दृढ़धर्मी एवं तपस्विनी श्राविकारत्न थी। सामायिक, प्रतिक्रमण एवं अनेक थोकड़े आपको कंठस्थ थे। सदैव शान्त एवं समतामय स्वभाव आपके आदर्श एवं धर्मनिष्ठ जीवन का परिचायक था। सन्त-सतियों के दर्शन, प्रवचन-श्रवण एवं सेवा हेतु आप सदैव लालायित रहती थी।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करता है।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

500/-रुपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

- ६२४० श्री आशीष जी पोपटलाल जी गाँधी, मुम्बई (महाराष्ट्र)
६२४१ श्री वल्लभराज जी सुराणा, जयपुर (राज.)
६२४२ Shri Chandan Ji Surana, Bangalore (K. T.)
६२४३ श्री मांगीलाल जी जबरचन्द जी बाफणा, कराड़, सतारा (महा.)
६२४४ श्री प्रवीण जी गौतमचन्द जी सिंघवी, उदयपुर (राज.)
६२४५ श्री राजेन्द्रमल जी जोबनमल जी सिंघवी, जोधपुर (राज.)
६२४६ श्रीमती सन्ध्या जी अब्बाणी, जोधपुर (राज.)
६२४७ श्री पारसमल जी भण्डारी, जोधपुर (राज.)
६२४८ श्री विपिन जी लोढा, फरीदाबाद (हरियाणा)
६२६१ श्री सूर्यकान्त जी पदमचन्द जी शाह, मसुर, सतारा (महा.)
६२६२ श्री चम्पालाल जी मोहनलाल जी कोटेचा, तासगाँव, सांगली (महा.)
६२६३ श्री सचिन जी सुमतिलाल जी बोथरा, तासगाँव, सांगली (महा.)
६२६४ श्री दगडुलाल जी मोहनलाल जी वेदमुथा, माधवनगर, सांगली (महा.)
६२६५ श्री बिरदीचन्द जी विजयकुमार जी वेदमुथा, माधवनगर, सांगली (महा.)
६२६६ श्री मोहनलाल जी बाफणा, माधवनगर, सांगली (महा.)
६२६७ श्री सुरेश कुमार जी मणिकचन्द जी चौपड़ा, माधवनगर, सांगली (महा.)
६२६८ Smt. Aruna Ji Suresh Ji Singhvi, Mumbai (M.H.)
६२६९ Shri Gajendra Mehta, Chennai (T.N.)
६२७० Shri Vireshwar Mehta, Renukoot (U.P.)
६२७३ श्रीमती प्रेमलता जी खींचा, विद्याधर नगर, जयपुर (राज.)
६२७४ श्री लादुराम जी धनमल जी मेहता, इचलकरंजी, कोल्हापुर (महा.)
६२७५ श्री रितेशचन्द जी प्रकाशचन्द जी कटारिया, रतलाम (म.प्र.)

श्रीमान अमरचन्द नी पी. मुणोत, मुम्बई के सौजन्य से

500/-रुपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

- ६२४६ श्री पदम पी. मेहता जी, इचलकरंजी, कोल्हापुर (महा.)
६२५० श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन भोजनशाला, इचलकरंजी, कोल्हापुर (महा.)
६२५१ श्री पुनमियासी परेश मोहनलाल जी, इचलकरंजी, कोल्हापुर (महा.)
६२५२ श्री अमृतलाल जी महावीर जी तलेसरा, इचलकरंजी, कोल्हापुर (महा.)
६२५३ श्री बसंतलाल जी नेमीचन्द जी गाँधी, इचलकरंजी, कोल्हापुर (महा.)
६२५४ श्री शान्तिलाल जी पालरेचा, इचलकरंजी, कोल्हापुर (महा.)
६२५५ श्री चम्पालाल जी गुलाबचन्द जी पगारिया, इचलकरंजी, कोल्हापुर (महा.)
६२५६ श्री जुगराजजी चम्पालाल जी भंसाली, इचलकरंजी, कोल्हापुर (महा.)
६२५७ श्री संजय जी गुगले, इचलकरंजी, कोल्हापुर (महा.)
६२५८ श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, इचलकरंजी, कोल्हापुर (महा.)

- ६२५६ श्री सुरेश कुमार जी अजीत कुमार जी बोहरा, इचलकरंजी, कोल्हापुर (महा.)
 ६२६० श्री विजयराज जी बोहरा, इचलकरंजी, कोल्हापुर (महा.)
 ६२७१ Shri Sunil Kumar Ji Lunia, Mumbai (M.H.)
 ६२७२ Shri Deepak Kumar Ji Bhikamchand Ji Lodha, Bhayanser

जिनवाणी को साभार-प्राप्त

- ११००/- श्री भागचन्द जी नवलखा, जयपुर, पूजनीय माताश्री श्रीमती कमलादेवी जी नवलखा का दिनांक १६ जुलाई २००३ को स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्य-स्मृति में भेंट।
 ११००/- श्री महावीरचन्द जी, किरणराज जी, विमलचन्द जी, अशोककुमार जी, राजेन्द्र कुमार जी, वसंत कुमार जी, धर्मेन्द्र कुमार जी मरलेचा, बैंगलोर, सुश्रावक श्री संपतराज जी मरलेचा का १६ जुलाई २००३ को स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्य-स्मृति में भेंट।
 ५०१/- श्रीमान् पूनमचन्द जी जामड़, जयपुर की ओर से जिनवाणी को सप्रेम भेंट।
 ५०१/- श्रीमती विमलाबाई एवं सुरेशचन्द जी कटारिया, अजमेर, श्रीमती कुसुम कुमारी एवं श्री भूपेन्द्र कुमार जी जैन के पुत्ररत्न 'चिराग' के प्रथम जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।
 ५०१/- श्री रमेश जी दुगड़, चेन्नई, अपने सुपौत्र चि. साहिल (सुपुत्र श्री अनुराग जी दुगड़) के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।
 ५०१/- श्रीमती शान्तिदेवी एवं श्री उत्तमचन्द जी लुणावत मेहता, जोधपुर, पिताश्री स्व. श्री गौतमचन्द जी लुणावत मेहता की चतुर्थ पुण्य-तिथि पर भेंट।
 ५०१/- श्री वल्लभराज जी चन्दनराज जी सुराणा, जयपुर, पूजनीय माताश्री श्रीमती मीमकंवर जी सुराणा धर्मपत्नी स्व. श्री जुगराज जी सुराणा का दिनांक १८ जून २००३ को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य-स्मृति में भेंट।
 ५००/- श्री रेखचन्द जी बाघमार, कोसाणा, सुपौत्र चि. हंसराज सुपुत्र श्री मदनलाल जी बाघमार का शुभ विवाह सौ. दीपिका सुपुत्री श्री इन्दरचन्द जी दर्डा, पुल्लु निवासी हाल मुकाम चेन्नई के संग २२.६.२००३ को चेन्नई में सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।
 ५००/- श्रीमती उषा एवं श्री अक्षय जी मोहनोत, जोधपुर, अपनी माताश्री श्रीमती चाँदकंवर जी मोहनोत धर्मपत्नी स्व. श्री सोभागमल जी मोहनोत के २२ जून को स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्य-स्मृति में।
 ५००/- श्री गंगाराम गौतमचन्द जी चौपड़ा, पावटा, जोधपुर, पुत्रवधू श्रीमती पुष्पादेवी धर्मपत्नी श्री गौतमचन्द जी चौपड़ा के १० की तपस्या, सुश्री प्रियंका, सुश्री मोनिका पुत्रियाँ श्री गौतमचन्द जी चौपड़ा (सुपौत्रियाँ श्री गंगाराम जी चौपड़ा) के अठाई तप एवं श्रीमती अणसी देवी चौपड़ा धर्मपत्नी श्री गंगाराम जी चौपड़ा के तेले की तपस्या के उपलक्ष्य में।
 ५००/- श्रीमती पिस्ता एवं श्री मोहनलाल जी धारीवाल, कोयम्बतुर, अपने सुपुत्र चि. विकास धारीवाल सुपौत्र श्रीमती अणची देवी धर्मपत्नी स्व. श्री चम्पालाल जी धारीवाल पाली निवासी, हाल मुकाम कोयम्बतुर का विवाह सौ. रेखा सुपुत्री श्री मदनलाल जी

सोलंकी, जालोर के साथ दि. ७.७.०३ को कोयम्बतुर में सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

- २००/- श्री शान्तिलाल जी मोहनलाल जी उत्तमचन्द जी गौतमचन्द जी जयन्तिलाल जी चौपड़ा, बैंगलोर, सुश्राविका श्रीमती बदनबाई जी चौपड़ा का दिनांक १२ जून २००३ को स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्य-स्मृति में भेंट।
- २००/- श्री रमेशचन्द जी महावीरचन्द जी अशोक कुमार जी बोहरा, रतकुड़िया निवासी हाल मुकाम पीपाड़ शहर, पूज्य पिताजी श्री मूलचन्द जी बोहरा की पावन स्मृति में।
- १०१/- श्री महेन्द्रपाल जी जैन, भरतपुर, स्व. श्रीमती लक्ष्मी देवी जी जैन की पाँचवीं पुण्य-स्मृति पर भेंट।
- १०१/- श्री देवेन्द्रनाथ जी मोदी, जोषपुर, अपनी बहन श्रीमती विमला बाई जी भण्डारी धर्मपत्नी स्व. श्री रणजीतसिंह जी भण्डारी की १४वीं पुण्यतिथि पर स्मरणांजलि।
- १००/- श्रीमती मंजू जी कोठारी, चेन्नई से सप्रेम भेंट।
- १००/- श्री चन्द्रपाल जी एवं श्रीमती स्नेहलता जी महनोत, जयपुर, अपनी सुपुत्री सुश्री विनीता जी महनोत द्वारा माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान की उच्च माध्यमिक परीक्षा २००३ में वाणिज्य संकाय (अंग्रेजी माध्यम में) ८४.६२ प्रतिशत अंक प्राप्त करने एवं सुश्री विभा महनोत द्वारा माध्यमिक परीक्षा २००३ में (अंग्रेजी माध्यम में) ८२.५० प्रतिशत अंक प्राप्त करने की खुशी में सप्रेम भेंट।
- ६६/- श्री महेन्द्र कुमार जी जैन 'आचार्य', सवाईमाधोपुर, चि. राजेन्द्र जी जैन के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।
- ५१/- श्री भागचन्द जी जैन, गंगापुर सिटी, अपने सुपुत्र श्री रत्नेश जी जैन के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।
- ५१/- श्री चम्पालाल जी मांगीलाल जी मंगलचन्द जी छाजेड़, चेन्नई, सौ. कां. वणिक (सुपुत्री श्री मंगलचन्द जी छाजेड़) का शुभ विवाह चि. सुभाषजी (सुपुत्र श्री माणकचन्द जी गोठी) के साथ दिनांक १०.७.०३ को होने की खुशी में सप्रेम भेंट।
- ५१/- श्री शिवकुमार जी जैन सुपुत्र श्री मूलचन्द जी जैन, भरतपुर, उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. के दर्शनों की खुशी में सप्रेम भेंट।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल को साभार-प्राप्त

२१०/- गुप्तदान

साहित्य-प्रकाशन हेतु साभार-प्राप्त

- ४००००/- श्रीमान् जी.एस. प्यारेलाल जी कोठारी, चेन्नई, पुस्तक "जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-१ व भाग-४" के पुनः मुद्रण हेतु आर्थिक सहयोग।
- ५०००/- श्रीमान् सुमेरमल जी लोढ़ा, जयपुर, पुस्तक "पच्चीस बोल (मूल)" के पुनः मुद्रण हेतु साहित्य प्रकाशनार्थ सप्रेम भेंट।

जीव दया हेतु साभार-प्राप्त

- १००१/- श्री मनमोहनमल जी गांग, मोती चौक, जोषपुर, अपने सुपौत्र अभिषेक सुपुत्र श्री महेन्द्र-ललिता जी गांग के सी.ए. फाइनल में उत्तीर्ण होने पर जीव-दया में सप्रेम भेंट।

५०१/- श्री भीकमचन्द जी, यशवन्त कुमार जी, मनोज कुमार जी, कमलेश कुमार जी वैद मेहता, जोधपुर, श्रीमती सज्जनकंवर धर्मपत्नी श्री भीकमचन्द जी वैद मेहता की अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में जीव-दया में सप्रेम भेंट।

स्वाध्याय संघ शास्त्रा बजरिया को साभार-प्राप्त

५०१/- श्री रूपचन्द जी महेन्द्र कुमार जी जैन, समीधी वाले, चि. राजेन्द्र के विवाहोपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

२५१/- श्री चिरंजीलाल जी अशोक कुमार जी जैन, समीधी वाले, चि. मुकेश के विवाहोपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

१०१/- श्री चाँदमल जी जैन, चोरु वाले, सुपुत्र के विवाहोपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

१०१/- श्री गोपीलाल जी जैन, कोटा, पुत्र के विवाहोपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

१०१/- श्री रामबिलास जी जैन, बाबई वाले, सुपुत्र के विवाहोपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

श्री स्थानकवासी स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार-प्राप्त

५०१/- श्रीमती शान्तिदेवी एवं श्री उत्तमचन्द जी लुणावत मेहता, जोधपुर पिता स्व. श्री गौतमचन्द जी लुणावत मेहता की चतुर्थ पुण्य-तिथि के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

दोहा-दशक

विद्यावारिधि डॉ. महेन्द्र सागर प्रचंडिया

जीवन भर लखते रहे, तरह-तरह के रूप।
 हैरानी इस बात की, लखा न आत्मस्वरूप।।१।।
 केश रंगा रमते रहे, व्यसन वासना संग।
 व्यर्थ बितायी जिन्दगी, नहीं किया सत्संग।।२।।
 नहीं जगे श्रम के बिना, जीवन में उपयोग।
 जीवन भर संचय किया, किया न क्षणिक प्रयोग।।३।।
 गुणी जनों को देखकर, होता हृदय प्रसन्न।
 आत्म गुण के जागते, होय सभी सम्पन्न।।४।।
 वाणी में नित बोलता, अपना ही चारित्र।
 ऐसी वाणी बोलिये, लगे सुखद सर्वत्र।।५।।
 कहीं दोष यदि बन पड़े, करें त्वरत प्रतिकार।
 दोष मिटे, निर्दोष हो, सुखी रहे संसार।।६।।
 मौन मनीषी व्रत रखे, मूर्ख मुखर नित होय।
 अल्प सार्थक बोलिये, अपना आपा खोय।।७।।
 राग-रंगीले गान में, जीवन दिया गुजार।
 जिनवाणी के श्रवण में, रहे सदा लाचार।।८।।
 शाकाहारी समय पर, करो ऊनोदर भोज।
 राग रोष को त्याग कर, मौज मनाओ रोज।।९।।
 न्याय-नीति से कीजिए, जीवन का संधान।
 घर-घर में होने लगे, संतों का सम्मान।।१०।।

-मंगल कलश, ३१४ सर्वोदय नगर, आगरा रोड़, अलीगढ़-२०२००१

जयगुरु हस्ती

जयगुरु हीरा

जयगुरु माण

जीवन को बनाने या बिगाड़ने का
सारा दायित्व चरित्र पर ही निर्भर है।
—आचार्य श्री हस्ती

With Best Compliments From :



BRIGHT STAR DIAMOND CO., LTD.

Diamond & Precious Stones

Ghisalal Gyanchand Prakashchand Bamb

410 The Executive House,
12th Floor, Suite 160-161,
Suriwongse Road,
BANGKOK 10500, Thailand
G.P.O. Box No. 2088

Tel : 237-8051, 237-8052
234-7648
Fax : (662) 237-6110
Res : 437-0910
Mobile : 01-6285733

॥ श्री ॥

स्वतंत्र वंशीय अष्टम पट्टधर परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर पूज्य
श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणाओं के चरण कमलों में कोटी कोटी वन्दन !
जय गुरु हस्ती जय महावीर जय गुरु हीरा-माव



SANJAY SURANA



DEEPAK SURANA

AADINATH
EXPORTS

The Trend Setter People

Manufacturers & Marketers :
TOYS • GAMES • NOVELTIES

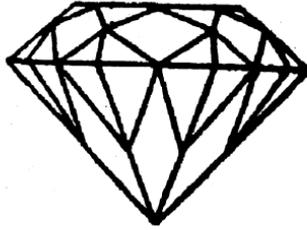
31, Kurla Street, 2nd Floor, Opp. Satyam Collection,
Masjid Bunder (East), Mumbai 400 009, INDIA
Off.: 2377 4254 • Fax : 91-22-2374 6319
Mobile : 98200 73955, 3683 5318
Email: aadinathexports@hotmail.com

वीरेन्द्र कुमार बाघमलसा सुराना (जागौरवाले)
६/८३ वर्मानगर, जुना नागरदास रोड,
अंधेरी (पूर्व) मुंबई - ४०० ०६९.
फोन ; २६८३ ५३७८, २०५३ ७०५२

शान्ति और समता के लिए न्याय-नीतिपूर्वक धर्म का
आचरण ही श्रेयस्कर है।

“आचार्य श्री हस्ती”

With Best Compliments From :



EVEREST GEMS LTD.

12-A-2, CHINA INSURANCE BUILDING,
48, CAMERON ROAD,
T.S.T. KOWLOON
HONG-KONG

TEL : 23681199

FAX : 23671357

**Director : Sunil Lunawat
Rajesh Kothari**

जय गुरु हस्ती

जय गुरु हीरा-मान

**गुरु हस्ती के दो फरमान ।
सामायिक स्वाध्याय महान ॥**

JAI GURU HASTI



GURU HASTI GOLD PALACE

No. 3, Car Street
Poonamallee, Chennai-600 056
Phone : 26272609



**P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
(Banker)**

No. 3A, Car Street
Poonamallee Chennai- 600 056
Phone : 26272906

'समता' मोक्ष का साधन है तो उसका उलटा 'तामस' नरक का द्वार है।
- आचार्य श्री हस्ती

पारसमल सुरेशचन्द्र कोठारी



प्रतिष्ठाव

KOTHARI FINANCERS

27, CHANDRAPPAN STREET

CHENNAI-600079(T.N.)

PH.# 25258436, 25298130

Branches:

Bhagawan Motors, Chennai-53, Ph.# 26251960

Bhagawan Cars, Chennai-53, Ph.# 26243455/66

Balaji Motors, Chennai-50, Ph.# 26247077

Padmavati Motors, Jafar Kan Peth, Chennai, Ph.# 24854526

JAI GURU HASTI

JAI MAHAVEER

JAI GURU HIRAMAN



LIVE & LET LIVE

Lord Mahaveer

With Best Compliments from



Prithvi Exchange

A 100% Money Changer

A DIVISION OF PRITHVI SECURITIES LIMITED

Regd. Office : 33, Montlieth Road, Egmore, Chennai-600 008, Ph : 855 3185/3059. Website : www.prithvifx.com

CHENNAI
044-8553185
044-8553059

BANGALORE
080-5327812
080-5327813

PANJIM GOA
0832-231190
0832-420675

P. DELICHAND KAVAD

SURESH KAVAD
RAVINDRA KAVAD

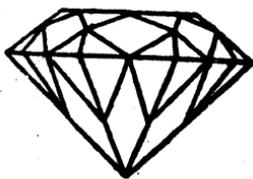
NAVARATHAN KAVAD
ASHOK KAVAD

158, Trunk Road, Poonamallee, Chennai-600 056.
Ph : 044-627 3165, 627 4165

हमारी प्रार्थना के केन्द्र में यदि वीतराग होंगे तो
निश्चित रूप से हमारी मनोवृत्तियों में प्रशस्ता
और उच्च स्थिति आयेगी।

-आचार्य श्री हस्ती

With Best Compliments From :



JIN GEMS

DIAMONDS, PRECIOUS & SEMI PRECIOUS STONES

12th Floor, Flat 'C'
Mass Resources Dev. Bldg.
12, Humphrey's Avenue
T.S.T. Kowloon, Hongkong
© 23671373, Fax : 23671511
MOBILE : 94327311, 92594051
E-mail : jingems@ctimail.com

Rajendra Daga

Gurudev

SURANA



Financial Corporation (India) Limited

Group of Surana

Since 1971

**A Multi Faceted Finance Company
With Fraternity Feel, Holding Hands
With Customers in Their Success**

Just Contact For

- ❖ **Hire Purchase**
- ❖ **Leasing**
- ❖ **Bills Discounting**
- ❖ **Foreign Exchange**

Invites Deposits from Public

Call

Phone : 8525596 (6 Lines) Fax : 044-8520587

Internet ID : suranaco@md3.vsnl.net.in

Sprint E-mail ID : surana.chh@rmd.sprintrpg.ems.vsnl.net.in

Regd Cum.Corp. H.O.: No. 16, Whites Road, II Floor,

Royapettah, Chennai - 600 014

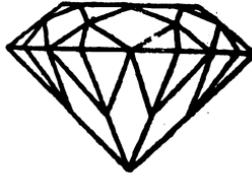
Branches :

- ★ **Bangalore** ★ **Coimbatore** ★ **Ernakulam** ★
★ **Kollidam** ★ **New Delhi** ★

With Best Compliments From :

धन रोग और शोक दोनों का घर है ,
जबकि धर्म रोग और शोक दोनों को
काटने वाला है।

- आचार्य श्री हस्ती



HIMA GEMS

14-A, KOK-PAH MANSION
58-60, CAMERON ROAD,
T.S.T. KOWLOON
HONG-KONG

Director
HEMANT SANCHETI

कलात्मक गहनोंकी सुवर्ण सृष्टी...



आपके व्यक्तित्वका सही प्रतिबींब !

सोने चांदीके पारंपारीक एवमं आधुनिक आभुषणोंकी
१८५४ से विश्वसनीय सुवर्ण पेढी...



राजमल लखीचंद™
ज्वेलर्स

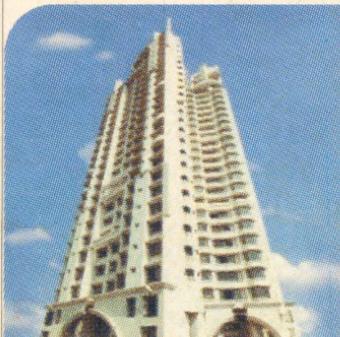
१६९, जौहरी बाजार, जलगाँव. (महाराष्ट्र) फोन: ०२५७-२२६६८९, ८२, ८३

All major credit cards accepted...

GRACE

Stop existing

Start living



KALPATARU HABITAT

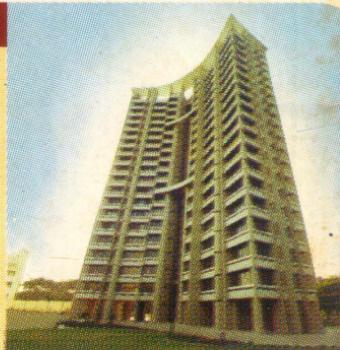
Dr. S. S. Rao Road, **Parel**

- 23 storeyed luxury twin towers
- 2 & 3 BHK Apts. & 4 BHK Penthouses
- Swimming pool, landscaped garden, clubhouse with gym & party lounge
- Squash & tennis court, mini golf putting green
- Independent car park building
- Tower B - ready possession
- Tower A - construction in full swing

KALPATARU RESIDENCY

Opp. Cine Planet, Off Sion Circle, **Sion**

- Premium 18 storeyed twin towers
- 2, 3 & 4 BHK Apts. & 3 BHK Penthouses
- Clubhouse with gym, squash court & party lounge
- Swimming pool, toddlers pool & landscaped garden
- Stilt & basement car parking
- Tower A - ready possession
- Tower B - nearing completion



KARMA-KSHETRA

Near Shanmukhanand Hall, **King's Circle**

- 25 storeyed towers with 2 wings
- 2 & 4 BHK Apts.
- Landscaped garden & clubhouse
- Independent car park building
- Ready possession



Other projects : Kalpataru Gardens - Kandivali (E), Siddhachal - Thane (W), Tarangan - Thane (W), Kamdhenu - Mulund (E), Kalpataru Enclave & Kalpataru Regency II - Pune.



KALPA-TARU

For details call: 2281 7171/2282 2888

III, Maker Chamber IV, Nariman Point, Mumbai-400 021.

Fax : 2204 1548/2288 4778. E-mail : sales@kalpataru.com Visit : www.kalpataru.com

प्रकाशचन्द डागा, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर की ओर से संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशचन्द डागा द्वारा प्रकाशित तथा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर (राज.) से प्रकाशित। प्रधान सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।